अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

पंचम अंक / वर्ष 2025-26

नागकेसर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला- 799 006

क्वीन पाइनएप्पल

त्रिपुरा की क्वीन नाम से प्रसिद्ध, यहाँ का अनन्नास, जो कि राजकीय फल के रूप में सम्मानित है, किसानों की सबसे पसंदीदा फसल है। त्रिपुरा भारत के सबसे बड़े अनन्नास उत्पादक राज्यों में से एक है। क्वीन नाम से प्रसिद्ध अन्ननास कांटेदार, सुनहरा पीला रंग लिए विशिष्ट सुगंध से परिपूर्ण, रसभरा और स्वाद में खट्टा- मीठा होता

है जो इसे अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में उगाए जाने वाले अन्ननास की तुलना में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। त्रिपुरा के इस स्वादिष्ट फल को वर्ष 2015 में भौगोलिक संकेत टैग (जी आई) प्राप्त हुआ।

नागकेसर

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका
पंचम अंक / वर्ष 2025-26

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला- 799 006

नागकेसर

पंचम अंक

प्रधान संरक्षक

श्री शैलेन्द्र विक्रम सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

मुख्य संरक्षक

श्री काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री हिमांशु, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संपादन परामर्शदाता

श्री, जयंत बरन राय चौधुरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मण्डल

श्री सुमित कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

श्री कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

संपादकीय

राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्त्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला की हिन्दी गृह-पत्रिका **'नागकेसर'** का पंचम अंक (सितंबर 2025) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'नागकेसर' पत्रिका के आवरण पृष्ठ और पार्श्व पृष्ठ राज्य की सांस्कृतिक विरासत, त्रिपुरा का राजकीय फल एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की झलकियाँ प्रदर्शित करते हैं और इनसे संबंधित महत्वपूर्ण संक्षिप्त विवरण भी दर्शाते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर जहाँ विचारों की सहज और सुन्दर अभिव्यक्तियों से युक्त रचनायें हैं तो वहीं दूसरी ओर कश्मीर, विशाखापत्तनम एवं ओड़िशा इत्यादि स्थानों के यात्रावृतांत और उनके वर्णन अत्यंत सजीव प्रतीत होते हैं। आत्म-अवलोकन, खुद के समक्ष, हम पंछी उन्मुक्त गगन के तथा महाकुम्भः एक संस्मरण इत्यादि लेख जीवन दर्शन एवं धार्मिक आस्था के द्योतक हैं। सोचो तो जरा, आधुनिकता में खोती मानवता तथा मित्र आदि रचनाएं आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं एवं मित्रता के महत्व को दर्शाती हैं।

संपादक मण्डल और संरक्षक मण्डल दोनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनायें अनवरत् रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी 'नागकेसर' पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनात्मकता से परिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन कर राजभाषा के विकास में अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	नौकरी: गुलामी या सम्मान?	अजित दास, डीईओ, ग्रेड-बी	लेख	9-12
2.	महाकुंभ - एक संस्मरण	अनिमेष बोस, लेखापरीक्षक	लेख	13-17
3.	सरहद	अमर नंदी, व. लेखापरीक्षक	लेख	18-20
4.	परिवार	आशीष कुमार गुप्ता, एम.टी.एस	लेख	21-24
5.	खुद के समक्ष	कुलदीप, स.ले.प.अ	लेख	25-28
6.	सोचो तो ज़रा	कृष्ण कुमार, क. अनुवादक	लेख	29-32
7.	धरती का स्वर्ग-कश्मीर	गौतम सरकार, स.ले.प.अ	लेख	33-37
8.	हिन्दी दिवस और उसकी प्रासंगिकता	जयशंकर परमार, स.ले.प.अ	लेख	38-41
9.	छबिमुरा की अनूठी गाथा	पार्थसारथी चक्रवर्ती, व.ले.प.अ	लेख	42-46
10.	विश्व पर्यावरण दिवस	बिपाशा सरकार, स.ले.प.अ	लेख	47-50
11.	विशाखापत्तनम यानी वाइजाग की यात्रा: एक अद्वितीय अनुभव	मणिकांत राय, स.ले.प.अ	लेख	51-56
12.	ओड़िशा भ्रमण: एक मनोरम स्मृति	मन्नु कुमार सिंह, लेखापरीक्षक	लेख	57-62

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
13.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	रोहित कुमार सिंह, स.ले.प.अ	लेख	63-66
14.	कोलकाताः सिटी ऑफ जॉय	विप्रतीप दास, लेखापरीक्षक	लेख	67-74
15.	आत्म- अवलोकन	विशाल सिंह, लेखापरीक्षक	लेख	75-78
16.	जिंदगी एक सफर है, मंजिल नहीं	शुभम कुमार, स.ले.प.अ	लेख	79-83
17.	विकसित भारतः एक परिकल्पना	शुभांशु कुमार, स.ले.प.अ	लेख	84-90
18.	घर वापसी	संजीत कुमार, स.ले.प.अ	लेख	91-96
19.	अगली पीढ़ी के लिए कुछ रोजगार के अवसर	सायक नंदी, लेखापरीक्षक	लेख	97-102
20.	सामाजिक अलगाव या आसक्ति	सायोनी केडिया, स.ले.प.अ	लेख	103-105
21.	मित्र	सुमित कुमार, वरिष्ठ. अनुवादक	लेख	106-112
22.	साहित्य में आधुनिकता और पारम्परिकता का संघर्ष	सौरभ राज, स.ले.प.अ	लेख	113-116
23.	आधुनिकता की दौड़ में खोती मानवता	हरिकेश सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	लेख	117-119

अस्वीकरणः 'नागकेसर' पत्रिका की रचना राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से की गयी है। इसमें निहित लेखों, कविताओं इत्यादि में अभिव्यक्त विचार, सुझाव मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय अथवा संपादक मण्डल इनसे सहमत हो।

संपादन सहयोग

श्री अजित दास, डीईओ (ग्रेड-बी), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला

नौकरी: गुलामी या सम्मान?

अजित दास,
डीईओ, ग्रेड-बी

नौकरी का मतलब ही है नौकर! "मेरी नौकरी बड़ी है और तुम्हारी छोटी" - यह बहस और भेदभाव बेवकूफी है। शौक, सपने और आज़ादी बेचकर कमाई गई गुलामी की बात कोई शान से बताता है! मेरी नौकरी बड़ी है, इसका मतलब क्या मैं सबसे बड़ा नौकर हूँ? पैसे के बदले जो मेहनत की जाती है, उस पर अहंकार करने जैसा कुछ नहीं है। नौकरी को श्रेष्ठता का मापदंड मानना एक गलत धारणा है। यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि पैसे के बदले हम जो श्रम देते हैं, वह मूल रूप से एक प्रकार की गुलामी है, जिस पर गर्व नहीं करना चाहिए।

ज़िंदा रहने के लिए हम जो बोझ उठाते हैं, वही बोझ तो गधा भी मालिक द्वारा दिए गए घास की उम्मीद में उठाता है। इसलिए, नौकरी या पद को श्रेष्ठता का मापदंड बनाना एक प्रकार की मूर्खता है। चापलूसी करके किसी को छोटा और किसी को बड़ा कहने या मानने की मानसिकता केवल अहंकार ही नहीं, बल्कि मूर्खता भी है। श्रेष्ठता काम की ईमानदारी और मानवता से आती है, उपाधि से नहीं। सच्ची श्रेष्ठता इंसान की ईमानदारी, मानवता और काम के प्रति निष्ठा से आती है, किसी पद या उपाधि से नहीं। जो दूसरों को तुच्छ समझता है या छोटा मानता है, वह असल में अपनी ही तुच्छता दिखाता है। सम्मान और डर एक नहीं हैं; केवल पैसे या शक्ति से सम्मान नहीं कमाया जा सकता, बल्कि यह एक अस्वस्थ मानसिकता का प्रतिबिंब है।

दूसरों को नीचा दिखाने की मानसिकता लोगों के मन में गहराई से बैठी हुई है। जो दूसरों को छोटा समझकर हँसता है, वह

स्वभाव से ही तुच्छ है। न्याय अभी भी जीवित है। खुद को बड़ा दिखाने के लिए किसी का अनादर या उपेक्षा करके बात करने से सम्मान नहीं बढ़ता। शक्ति क्षणिक होती है और पद-प्रतिष्ठा चले जाने पर सम्मान भी खत्म हो जाता है, अगर वह अच्छे चरित्र और मानवता पर आधारित न हो। एक सफाईकर्मी भी अपने अच्छे काम के लिए सम्मानित हो सकता है, जबकि एक मंत्री भी बुरे कर्मों के लिए तुच्छ माना जा सकता है। आखिरकार, इंसान के कर्मों का ही मूल्यांकन होता है।

कौन क्या नौकरी करता है, यह सिर्फ दुनिया का हिसाब है। बड़ी नौकरी करने से ही अच्छा सम्मान मिलता है, ऐसा नहीं है। कई लोग ऊँचे पदों पर रहकर भी अपमान, बदनामी और परेशानियों का शिकार हुए हैं। इसलिए, पद से नहीं, बल्कि ईमानदार चरित्र और न्याय के रास्ते पर चलने से ही सच्चा सम्मान मिलता है।

सम्मान और डर को कभी एक नहीं समझना चाहिए। केवल पैसा और शक्ति- ये सब बीमार लोगों द्वारा बनाए गए नियम हैं। जिस काम में सोच की उन्नति नहीं है, दूसरों का कल्याण नहीं है, राष्ट्र का भला नहीं है- उस काम से जुड़े लोगों को सम्मानित मानने का कोई यथोचित कारण नहीं है। जो खुद के बॉस हैं, वे ही गर्व कर सकते हैं; दूसरों के अधीन काम करके अपने बीच में भेदभाव करना हास्यास्पद है। जीविका कमाने के लिए हम जो करते हैं, वह मूल रूप से गुलामी है, और अगर यह हमारे शौक और सपनों की दिशा बदल देता है, तो इस पर डींगें मारना मूर्खता है।

कुर्सी बड़ी हो सकती है, सत्ता का दायरा बड़ा हो सकता है- फिर भी ओछापन आसानी से नहीं जाता। जिन लोगों की पद-प्रतिष्ठा चले जाने पर दिन खत्म हो जाता है, रिटायर होने पर जिनका सम्मान खत्म हो जाता है- उन्हें बड़ा मानने का मौका कहाँ है? अगर पद पर रहते हुए मिले सम्मान और शक्तिहीन दिनों में अपेक्षित सम्मान से

अपना वजन मापना पड़े, तो मुझे लगता है कि उस बड़ी नौकरी/कुर्सी से छोटी नौकरी/कुर्सी ही ज़्यादा योग्य है।

अच्छा काम करने पर एक सफाईकर्मी भी उत्तम है। बुरा काम करने पर एक मंत्री भी तुच्छ हो सकता है। सम्मान हमेशा ईमानदारी से जुड़ा होता है। "किसकी नौकरी बड़ी है" इस तुलना को छोड़कर "इंसान के रूप में कौन बड़ा है"- इस सोच पर पूरे समाज को गर्व करना चाहिये।

आखिरकार, इंसान के कर्मों का मूल्यांकन होता ही है, यह स्वाभाविक है। सौंपे गए कर्तव्य को निभाने में ही सफलता है। मानव कल्याण के लिए खुद को समर्पित करना ही श्रेष्ठता की पहचान है।

दो दिनों की सत्ता पाकर जो लोग खुद को सर्वशक्तिमान समझने लगते हैं, दूसरों के पैसे का दुरुपयोग करते हैं या किसी के अधिकार छीनकर किसी को उसके जायज हक़ से वंचित करते हैं- विवेक की आग उनका पीछा नहीं छोड़ती। मानसिक अशांति, पारिवारिक दुख और सामाजिक घृणा से बड़ी सजा और क्या हो सकती है? "वह व्यक्ति बेईमान है"- यह बात जीवन की सबसे बुरी उपलब्धि है।

बड़ी नौकरी वह है- जहाँ जिस पर जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, वह उसे ठीक से निभाता है। जो कामचोर, भ्रष्ट और सोच में बेईमान है- वह चाहे कोई भी काम करे, उसे कभी भी महान काम की मान्यता नहीं मिल सकती।

आज़ादी को त्यागकर प्राप्त श्रेष्ठता अर्थहीन है। आज़ादी को सस्ते में बेचकर श्रेष्ठता का दिखावा करने का कोई मौका नहीं है। जीविका चलाने के लिए हम जो करते हैं, वह गुलामी है। यदि काम की बाध्यता हमारे शौक और सपनों की दिशा बदल देती है, तो इस पर डींगें मारना मूर्खता है।

आखिरकार, हम नौकर ही हैं। जो खुद के बॉस हैं, वे गर्व कर सकते हैं- कह सकते हैं, "मैं तुमसे थोड़ा बड़ा हूँ।" लेकिन जो दूसरों के अधीन हैं, वे अपने बीच में ही भेदभाव करके ऊँच-नीच दिखाना चाहते हैं- जो हास्यास्पद है।

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं कार्यालय, महालेखाकार (लेखा व हक.) द्वारा प्रकाशित संयुक्त हिंदी गृह-पत्रिका (चतुर्थ अंक) का सक्षम प्राधिकारियों द्वारा विमोचन

महाकुंभः एक संस्मरण

अनिमेष बोस,
लेखापरीक्षक

महाकुंभ- पृथ्वी पर लोगों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण जमावड़ा, आस्था, एकता और परंपरा का संगम है, जो भारत में चार स्थानों- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज में होता है। 2025 में महाकुंभ और भी खास था क्योंकि यह बृहस्पति ग्रह की शुभ और दुर्लभ ग्रहों की स्थिति से प्रभावित था, जो 144 वर्षों में एक बार होता है। इसके परिणामस्वरूप इस वर्ष महाकुंभ में 40 करोड़ श्रद्धालुओं की रिकॉर्ड भीड़ उमड़ी।

ये सब आप गूगल और विकिपीडिया पर पढ़ सकते हैं। लेकिन यह लेख थोड़ा व्यक्तिगत है, यह प्रयाग महाकुंभ में 2 शाही स्नान तिथियों के बीच मेरे 3 दिनों के छोटे से प्रवास का चित्रण करने का एक प्रयास है। इसके दौरान मैंने कितना पुण्य अर्जित किया है, उसके बारे में निश्चित नहीं हूँ, लेकिन यह जीवन भर के लिए एक स्मृति बन गया है।

वह दिसंबर की एक धूप वाली, उज्ज्वल सुबह थी। मेरे बैचमेट और पूर्व सहयोगी शिवम ने मुझे अपनी शादी के लिए आमंत्रित करने के लिए फोन किया। आयोजन स्थल शहडोल, मध्य प्रदेश था। यह एक पुनर्मिलन का अवसर था। आखिरकार मैंने अपने अन्य बैचमेट्स को उनकी छुट्टी की योजनाओं और यात्रा कार्यक्रम के बारे में जानने लेने के लिए फोन किया ताकि उसके अनुसार मैं अपनी छुट्टियों की योजना एवं कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर सकूँ। दुर्भाग्यवश, मोहन के खाते में पर्याप्त छुट्टी नहीं थी। लेकिन, अनिल ने मुझे बताया कि वह इसे पूरा सप्ताह बनाने के लिए 5 दिनों की छुट्टी लेने जा रहा है। मुझे संकेत मिल गया। शहडोल एकमात्र गंतव्य नहीं था जहाँ हम

जा रहे थे, इसमें और भी बहुत कुछ होने वाला था। बनारस, उज्जैन और प्रयागराज-हमारी प्राथमिकताओं को देखते हुए ये सबसे निकटतम और सबसे स्पष्ट विकल्प थे। 4-5 फोन कॉल और घंटों की चर्चा के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि प्रयागराज जाना है।

7 फरवरी की शाम को हम महाकुंभ पहुँचे। हमारी यात्रा 3 दिन पहले शुरू हो चुकी थी, पहले शहडोल में रुकना, शिवम की शादी में शामिल होना और फिर ट्रेन में चढ़ना। इस बीच महाकुंभ में भगदड़ की घटनाएं सामने आईं, जिससे हमें चिंता हुई कि यह एक अच्छा निर्णय है या नहीं। लेकिन, सौभाग्यवश, हमारा एक दोस्त, प्रवीर उसी समय प्रयागराज में रह रहा था। हमने अपनी तीर्थयात्रा में कुछ मार्गदर्शन पाने के लिए उसे फोन करने का फैसला किया। उसने हमें निराश नहीं किया, और प्रयागराज-चेओकी जंक्शन पर हमारे आगमन पर विचार करते हुए, उन्होंने हमें अरैल घाट पर रहने का सुझाव दिया, जो बाद में हमारे लिए सार्थक एवं लाभदायक सिद्ध हुआ। हजारों की भीड़ के साथ संघर्ष करते हुए, हमने प्लेटफ़ॉर्म पर कदम रखा। लगभग शाम होने वाली थी। भीड़ की गुणवत्ता और मात्रा से चकित होकर, ऐसा लग रहा था कि क्षितिज तक केवल सिर ही सिर हैं और कतारों में असंख्य काले बिंदु घूम रहे हैं। लगभग 1 घंटे तक भीड़ का आनंद लेने के बाद, हम अंततः एक ऑटो रिक्शा के पास पहुँचे, जो हमें अरैल घाट के पास छोड़ने के लिए तैयार हो गया, जहाँ मैंने अपना होमस्टे पहले ही बुक कर लिया था। Booking.com की जय हो, डिजिटल इंडिया की जय हो !

होमस्टे तक पहुँचना उतना मुश्किल नहीं था क्योंकि हमें बहुत पास ही छोड़ा गया था। लेकिन जब हम अपने कमरे में पहुँचे तो हमें थोड़ी निराशा हुई। ऐसा प्रतीत हुआ है कि हमसे उचित दर का कम से कम 3 गुना शुल्क लिया गया है। लेकिन, 'आपूर्ति-माँग संतुलन' को ध्यान में रखते हुए हमने इसे स्वीकार किया। सब कुछ एक ही

समय में अनुकूलित नहीं किया जा सकता है, कुछ ट्रेडऑफ़ होंगे। हम लोगों ने एक-एक करके स्नान की और खुद को फिर से ताज़ा करने के लिए एक छोटी सी झपकी ली। कुछ ऊर्जा और स्फूर्ति पाने के बाद, हम अरैल घाट पर एक रात की सैर के लिए बाहर गए। होमस्टे घाट से लगभग 1 किमी दूर था, और उन्हें जोड़ने वाली मुख्य सड़कें और कई गलियाँ थीं। गलियों में स्पष्ट रूप से इसके विकल्प की तुलना में कम भीड़ थी, इसलिए हमने उनमें से एक को चुना। जैसे-जैसे हम घाट के करीब पहुँचे, क्षितिज आधी रात के चाँद के प्रकाश जैसा चमक रहा था, जो वास्तव में इसके विपरीत त्रिवेणी घाट पर स्थापित हजारों बिजली की बत्तियाँ थीं। इन दो घाटों के बीच पीले रंग की हेलोजन रोशनी से सजाया गया अकबर किला दृश्यों की भव्यता को बढ़ा रहा था। त्रिवेणी संगम के पानी पर इन सभी के प्रतिबिंब तट तक नृत्य कर रहे थे। इस दृश्य की भव्यता का वर्णन करने के लिए शब्द कम हैं। लगभग एक घंटा इधर-उधर घूमने के बाद हमें भूख लगी। हमने खाने की दुकानों पर वापस जाने का रास्ता खोज लिया, जहाँ हमने देखा कि मैगी मिट्टी के कटोरे में बेची जा रही थी, जिसने तुरंत हमारा ध्यान आकर्षित किया। यह एक ही समय में बेहद सौंदर्यपूर्ण होने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल भी था। हालाँकि, पर्यावरण वह समस्या नहीं थी जिससे हम उस समय लड़ रहे थे, वह थी भूख। हमने हम दोनों के लिए वेज मैगी मंगाई और हम काउंटर पर कतार में थे। कुछ खाली समय पाकर, अपने दोस्त के साथ बात करते हुए, मैंने चारों ओर देखा। यह आश्चर्यजनक रूप से स्वच्छ था क्योंकि यह प्रतिदिन असंख्य भीड़ को संभाल रहा था। चाहे वह 'जनभागीदारी' हो या सफाईकर्मचारी, यह एक सराहनीय कार्य था। हमें अंततः अपनी प्राप्य मैगी मिल गई और हम नदी के किनारे के पास अपेक्षाकृत कम भीड़ वाले स्थान पर चले गए। सफेद रेत के कण इधर-उधर चमक रहे थे जो दृश्य को और भी आकर्षक बना रहे थे। भूमि और जल की

सीमा पर काले अंधेरे को रोशन करने के लिए भक्तों द्वारा जलाए गए दीये अपनी भूमिका निभा रहे थे। समग्र दृश्य विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ सावधानीपूर्वक व्यवस्थित किया गया संगीत कृति की तरह लग रहा था। इस तरह के दृश्य स्वतः ही 'संगीतकार' के सामने हमारा सिर झुकाते हैं और यही कारण है कि ये सभी लाखों लोग वहाँ जमा हो गए हैं। वैसे भी, रात ठंडी होती जा रही थी और हमें संगम पर पवित्र स्नान करने के लिए अगली सुबह जल्दी उठना था। इसलिए, हम वापस होमस्टे की ओर पैदल चलने लगे। कल मुख्य कार्यक्रम है!

मैं अगली सुबह लगभग 5 बजे उठ गया। हालांकि, अनिल को थोड़ी देर हो गई थी इसलिए आखिरकार हमने सुबह लगभग 8 बजे अपनी यात्रा प्रारम्भ की। पिछली रात की तरह ही अरैल घाट पर पहुँचकर हमने हजारों तीर्थयात्रियों और भक्तों को मधुमक्खियों के झुंड की तरह इधर-उधर उमड़ते देखा। कुछ ने पहले ही डुबकी लगा ली थी, कुछ उसी के लिए जा रहे थे। हमें पता था कि हम अपनी नाव पर कहाँ चढ़ने जा रहे हैं, इसलिए हमने ज्यादा समय बर्बाद नहीं किया और आगे बढ़ गए। नाव की सवारी शुरू करने के लिए एक अस्थायी लॉन्चपैड बनाया गया था और वहाँ पूरी तरह से अराजकता थी! हमें शुरू में कोई ऐसा नाव वाला नहीं मिला जो हमें संगम की ओर जाने के लिए तैयार हो। सभी को बुक किया गया था! "यह कैसे संभव है?"- यह हमारी ओर से प्रारंभिक प्रतिक्रिया थी। हमने अपने स्तर पर पूरी कोशिश की, अपनी पैंट को मोड़ दिया और नाव मालिकों के साथ 'आमने-सामने' मोल-भाव करने के लिए पानी में उतर गए। बहुत कोशिशों और संघर्ष के बाद एक दयालु नाव का मालिक हमें ले कर जान के लिए सहमत हो गया।

नाव धीरे-धीरे और स्थिर तरीके से तट और साथी नावों को पीछे छोड़ते हुए संगम की ओर बढ़ने लगी। हम सभी को लाइफ जैकेट दिए गए जो सभी नियॉन नारंगी रंग के थे, जिससे पूरी नाव को

सामूहिक रूप से नारंगी रंग का बदलाव मिला। प्रवासी साइबेरियाई पक्षी पानी के ऊपर बड़ी संख्या में उड़ रहे थे, कुछ भुजिया लेने के लिए किसी दयालु आत्मा के पास रुक रहे थे और फिर वापस उड़ जा रहे थे। परिवेश को जीवंत रूप प्रदान करने के लिए यह कितना अच्छा दृश्य था! मानव और पक्षी सभी संगम में एकत्र हुए थे और हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे, यह 'पारिस्थितिक सह-अस्तित्व' के लिए सबसे महान पोस्टर हो सकता है, एक ऐसा उद्देश्य जिसे हासिल करने के लिए 'सतत विकास' का प्रयास किया जाता है।

लगभग 20 मिनट में हम संगम पर पहुँचे और पवित्र डुबकी लगाने के लिए पूरी तरह से तैयार थे। मैं एक बार फिसल गया, शॉर्ट्स की एक जोड़ी खो दी, लेकिन उस जगह पर 1 घंटे के ठहरने की अवधि का पूरा आनंद लिया। घाटों की तुलना में यहाँ अपेक्षाकृत कम भीड़ थी। इसलिए, हमने बिना किसी जल्दबाजी के डुबकी का आनंद लिया। घाट पर वापस आना शांतिपूर्ण था, बस मालिक शुरू में डिजिटल भुगतान स्वीकार नहीं कर रहा था, इसलिए हमें उसके साथ थोड़ी बहस करनी पड़ी। हमने घाट पर अपना नाश्ता लस्सी और छोला-भटूरा के साथ किया। हमारे सामने वाली टेबल पर एक पंजाबी युगल, एक दक्षिण भारतीय बुजुर्ग और एक अघोरी साधु के साथ बैठे थे। 'विविधता के बीच एकता'-सभी अर्थों में। दोपहर में हमारी ट्रेन थी, इसलिए हमने सभी रंगों, सद्गुणों और झगड़ों को पीछे छोड़ते हुए हमारे घर की ओर वापस चलना शुरू कर दिया।

इस छोटी सी यात्रा में मुझे एक महत्वपूर्ण सीख मिली है कि धर्म में विभिन्न जाति, पंथ, पृष्ठभूमि और भौगोलिक क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाने की शक्ति है। यह एक ऐसा पहलू जिसे विशेष रूप से इस कठिन समय में, जब समाज विभिन्न महत्वहीन आधारों पर विखंडित हो रहा है उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

सरहद

अमर नंदी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

यह 2 मई 1999 की बात है। जोधपुर वायु सेना बेस पर रात लगभग 9:00 बजे हम सभी रात की उड़ान पूरी होने के बाद वापस बिलेट्स *(Billets)* में आ गए थे। कोई गपशप कर रहा था, कोई रात का खाना खा रहा था, कोई बाथरूम में स्नान कर रहा था, किसी ने वर्दी भी नहीं बदली थी। हम सब विदेश में रहने वाले लगभग 25 वायुसैनिक हैं। अचानक एक वन टनर (one tonner) वाहन आया और हम सभी को बिना समय के स्क्वाड्रन (Squadron) तक पहुँचने के लिए कहा गया। क्योंकि हम लगभग 10-15 मिनट पहले वापस आए थे। अचानक क्या हुआ किसी को समझ में नहीं आया। यहाँ तक कि ड्राइवर को भी नहीं पता था कि हम सभी को फिर से स्क्वाड्रन क्यों जाना चाहिए, कोई नहीं जानता था कि क्या हुआ है। कोई इमरजेंसी सायरन भी नहीं बजा। हम सभी आश्चर्यचकित थे। हम में से अधिकांश ने अभी भी रात का खाना तक नहीं खाया था, लेकिन हम उस समय सवाल नहीं कर सके। बहुत तेजी से हम फिर से वर्दी (overhaul) बदल लिए और वाहन में बैठ गए और 5-7 मिनट के भीतर हम स्क्वाड्रन पहुँचे। स्क्वाड्रन पहुँचकर, हमारे स्क्वाड्रन कमांडर ने कहा, "युद्ध की घोषणा हो गई है और हमें अपने लड़ाकू विमानों को उन युद्ध गतिविधियों के लिए तैयार करना होगा जो काम हमें सौंपा गया है। कल सुबह सूरज निकलने से पहले तक हमें जैसलमेर, जोधपुर, उत्तरलाई और जामनगर में चार स्थानों पर युद्ध के क्षेत्रों में तैनात हो जाना है।" हमारी जिम्मेदारी उन स्थानों पर काउंटर-इंसरजेंसी अभियान (counter-insurgency operation) चलाना था।

अन्य सभी तकनीकी स्टाफ (tradesmen) अपने दम पर युद्धविमान तैयार करने का कार्य पूरा कर सकते थे, लेकिन मेरे ट्रेड (trade) में मैं अकेला उपलब्ध व्यक्ति था। मेरे लिए अकेले युद्धविमान तैयार करना असंभव था क्योंकि हथियार उपकरणों जैसे मिसाइलों और गोलियों को कम से कम दो व्यक्तियों की मदद से लोड किया जा सकता था, लेकिन उस समय मेरे अलावा मेरा कोई भी तकनीकी स्टाफ (technical) उपलब्ध नहीं था। एक विमान को हथियारों से लैस करने में कम से कम 10-15 मिनट लगेंगे, इसलिए सोलह विमानों के लिए लगभग चार घंटे का न्यूनतम समय लगेगा। मैंने स्थिति के बारे में स्क्वाड्रन कमांडर को मामला बताया। कमांडर ने पीठ थपथपाई और मुझे काम पर जाने के लिए प्रोत्साहित किया और मेरी देखरेख में अन्य ट्रेड्समैन द्वारा इसका समर्थन करने का आश्वासन दिया। यह एक चुनौतीपूर्ण काम था, अपने कंधे पर इतनी जोखिम भरी जिम्मेदारी लेना मेरे लिए काफी कठिन था, उस समय मैं सिर्फ एक वर्कमैन (workman) था, पर्यवेक्षक भी नहीं बना था।

अन्य सभी ट्रेड्समैन के कार्य पूर्ण होने के बाद, यह मेरा समय था कि मैं एयरक्राफ्ट्स को हथियारबद्ध करूँ। सोलह लड़ाकू विमानों में से प्रत्येक विमान में दो मिसाइल लॉन्चर (प्रत्येक का वजन लगभग 60 किलोग्राम था) और चार मिसाइलें और दो सौ चालीस गोलियाँ (लगभग 60 किलोग्राम लोड की जानी थी)। प्रत्येक विमान पर सभी इलेक्ट्रिक सर्किट चेक किए गए और बंदूक के साथ गोलियों और मिसाइल लॉन्चर के साथ मिसाइलों को लोड करना शुरू किया। मैंने लगभग 11:30 बजे लोडिंग शुरू की और पूरा होते होते सुबह के 3:30 बज गए। अगले दिन काम के लिए पूर्व-निर्धारित समय पर सुबह 4:00 बजे सभी ट्रेड्समैन स्क्वाड्रन आने लगे और आते ही तुरंत जैसलमेर, उत्तरलाई और जामनगर में तैनात होने के लिए सामान लाने हेतु वापस भेज दिया गया। 15 मिनट में सब कुछ तैयार होने के बाद,

जैसलमेर, उत्तरलाई और जामनगर (चार युद्धविमान प्रति क्षेत्र) में तैनात होने के लिए उड़ा दिये गये। सुबह 4:30 बजे एक साथ उन ठिकानों पर सभी टेक्निकल (technical) स्टाफ भी AN-32 (परिवाही विमान) से उड़ गए। जोधपुर में भी चार युद्धविमानों को तैनात कर दिया गया। मुझे काम पूरा होने के बाद तरोताजा होने के लिए मुझे केवल तीस मिनट का समय मिला। सुबह 4:30 बजे मुझे भी वापस आकर जैसलमेर में तैनाती के लिए जाना पड़ा।

युद्ध के मोर्चे पर पहुँचने के बाद, मुझे सोचने का समय मिला और मुझे खुद को भी आश्चर्य लगा कि मैंने पिछले आठ घंटों में क्या किया था? 16 युद्धविमानों को मिसाइल और गोलियों से युद्ध के लिए सशक्त तैयार करना मेरे अकेले से कैसे संभव हुआ, मुझे खुद को भी विश्वास नहीं हो रहा था। फौज में शामिल होने के बाद से मुझे जो ट्रेड का काम मिला जिससे मैं कभी संतुष्ट नहीं था, क्योंकि मेरा मानना था कि इस नौकरी का अनुभव सेवानिवृत्ति के बाद नागरिक जीवन में मेरी मदद नहीं करेगा। लेकिन उस दिन मुझे अपने काम के महत्व का एहसास हुआ। पूरे युद्ध के दौरान मेरे किए हुए काम से लैस भारत के पूरे उत्तरी क्षेत्र में शत्रुपक्ष के युद्धविमानों पर काउंटर-इंसर्जेंसी अभियान चलाया गया। यह मेरे जीवन की एक गौरवपूर्ण कामयाबी थी। कहावत है - "Impossible is said in the dictionary of fools." अगर इरादा दुरस्त हो तो कुछ भी असम्भव नहीं, यह बात साबित हो गयी। तब से मुझे सौंपे गए किसी भी काम पर मैं कभी बहस नहीं करता।

परिवार

आशीष कुमार गुप्ता,
एम.टी.एस

मेरा परिवार उस कम्पास की तरह है जो मुझे जीवन की यात्रा में मार्गदर्शन प्रदान करता है, प्यार, सहारा और अपनेपन का एहसास देता है। मैं यह तर्क दूँगा कि मेरा परिवार मेरे अस्तित्व की आधाराशिला है, मेरे मूल्यो को आकार देता है, मेरे विकास में सहायक है और अटूट प्रेम और देखभाल प्रदान करता है। हम पारिवारिक बंधनों के महत्व, परिवार के सदस्यों की भूमिकाओं और हमारे जीवन में परिवार के स्थायी प्रभाव का पता लगाएंगें।

परिवार में शामिल ज्यादातर सदस्य नैसर्गिक क्रियाओं द्वारा आपस में जुडे होते हैं और कुछ जीवन के पथ पर चलते हुए समय के साथ हमारे परिवार में शामिल हो जाते हैं। समाज में परिवार के दो स्वरुप पाए जाते हैं। पहला एकल (मूल) परिवार दूसरा सयुंक्त परिवार। व्यक्ति के लिए परिवार व्यापक रुप में अपनी भूमिका निभाता है। किसी शिशु के जीवन मे परिवार का अभाव होने पर उसका जीवन अनेकानेक कठिनाइयों से भर जाता है।

एक इंसान का परिवार उसके लिए संसार होता है। हम अपने जीवन में जो कुछ भी प्राप्त कर पाते हैं, वह परिवार के सहयोग और समर्थन स्वरुप ही प्राप्त कर पाते हैं। हमारे पालन-पोषण को हमारा परिवार अपनी पहली प्रथामिकता समझता है और जब तक हम सक्षम नहीं हो जाते हमारी सभी जरुरतों की निःस्वार्थ भाव से पूर्ति करता है।

परिवार की नींवः परिवार वह नींव है जिस पर हमारा जीवन टिका है। इसमें माता-पिता, भाई-बहन, और अक्सर दादा-दादी, चाचा-चाची और चचेरा भाई-बहन शामिल होते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ हमारे रिस्ते हमारी पहचान का आधार बनते हैं।

परिवार के प्रकारः परिवार के दो प्रकार हैं-मूल तथा संयुक्त परिवार। मूल परिवार की बात करें तो यह पश्चिमी देशों की सभ्यता है। जिसमे दम्पत्ति अपने बच्चों के साथ निवास करता है, पर परिवार का यह स्वरुप अब विश्वभर में देखा जा सकता है। संयुक्त परिवार की अवधारणा भारत की संस्कृति की छवि को दिखाता है। संयुक्त परिवार जिसमें दो पीढ़ी से अधिक लोग एक साथ निवास करते हैं, जैसे दादा-दादी, चाचा-चाची, बुआ आदि।

परिवार के सदंस्यो की भूमिकाएं- परिवार का हर सदस्य हमारे जीवन में एक अनोखी भूमिका निभाता है। माता-पिता मार्गदर्शन, प्यार और सुरक्षा प्रदान करते हैं। भाई-बहन, हमारे साथी और सहपाठी होते हैं जो हमारे सुख-दुख बाँटते हैं। दादा-दादी हमें ज्ञान और अतीत की कहानियाँ सुनाती हैं, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हैं।

भावनात्मक समर्थनः मेरा परिवार मेरा भावनात्मक सहारा है। दुख या तनाव के समय, मैं सांत्वना और समझ के लिए अपने परिवार की ओर रुख कर सकता हूँ। अध्ययनों से पता चलता है कि मज़बूत पारिवारिक सहयोग भावनात्मक स्वास्थ्य और लचीलेपन में योगदान देता है।

नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यः परिवार नौतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संचार करता है जो हमारे चरित्र को आकार देते हैं। इन मूल्यों में ईमानदारी, दयालुता, सम्मान और परंपराएं शामिल हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। बाल विकास विशेषज्ञ मूल्यों को प्रदान करने में परिवार की भूमिका पर जोर देते हैं।

शिक्षा और विकासः शिक्षा और व्याक्तिगत विकास में परिवार की अहम भूमिका होती है। माता-पिता हमारे पहले शिक्षक होते हैं, जो हमारे शुरुआती वर्षों मे हमारा मार्गदर्शन करते हैं। वे हमें शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और सीखने के अवसर प्रदान करते हैं।

संबंध बनानाः मजबूत रिश्ते बनाने के लिए परिवार के साथ समय बिताना बेहद जरुरी है। पारिवारिक भोजन, सैर सपाटे और उत्सव जैसी गतिविधियाँ स्थायी यादें बनाती हैं और परिवार के सदस्यों को बीच संबंधो को मजबूत बनाती है। ये पल एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं।

परम्पराओं का जश्न मनानाः पारिवारिक परंपराएँ हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। इनमें हमारे परिवार के विशिष्ट त्योहार, रीति-रिवाज शामिल हैं। परंपराओ का पालन करने से सांस्कृतिक पहचान और एकता की भावना बढ़ती है।

बिना शर्त प्रेमः परिवार के सबसे गहरे पहलुओं में से एक है परिवार के सदस्यों का एक दूसरे के प्रति अटूट प्रेम। परिस्थितियाँ कैसी भी हों हमारे परिवार का प्रेम अटूट होता है। विशेषज्ञ इस बात की पुष्टि करते हैं कि एक प्रेमपूर्ण पारिवारिक वातावरण का बच्चे के भावनाव्मक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

पारिवारिक जीवन की चुनैतियाँ- परिवार प्यार और सहारे का स्रोत तो है, लेकिन साथ ही चुनौतियाँ भी लेकर आता है। मतभेद और संघर्ष पारिवारिक जीवन का हिस्सा है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि स्वस्थ पारिवारिक रिश्ते बनाए रखने के लिए प्रभावी संवाद और संघर्ष समाधान कौशल बेहद जरुरी हैं।

हमारे परिवार का भविष्यः जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं और बदलते हैं वैसे-वैसे हमारा परिवार भी बदलता है। परिवार के सदस्य बूढ़े होते हैं और नई पीढियाँ जन्म लेती हैं। हमारे परिवार का इतिहास और परंपराएं आगे बढ़ती हैं, जिससे यह सुनिश्तित होता है कि हमारी परिवारिक विरासत आगे बढ़ती रहे।

परिवार की भूमिकाः माता-पिता हमारा पालन पोषण करते हैं। ब्रश करने तथा जूते का फीता बाँधँने से लेकर पढ़ा-लिखा कर समाज का एक शिक्षित वयस्क बनाते हैं। भाई-बहन के रूप में घर में

ही हमें दोस्त मिल जाते हैं, जिनसे अकारण हमारी अनेक लड़ाई होती है। भावनात्मक सहारा और सुरक्षा भाई-बहन से बेहतर और कोई नहीं दे सकता है। घर के बड़े बुजुर्ग के रुप में दादा-दादी, नाना-नानी बच्चे पर सर्वाधिक प्रेम न्यौछावर करते हैं। कटु है पर सत्य है व्यक्ति पर परिवार का साया न होने पर व्यक्ति अनाथ कहलाता है। इसलिए समृद्ध या गरीब परिवार का होना आवश्यक नहीं पर व्यक्ति के जीवन में परिवार का होना आवश्यक है।

निकर्षः अंत में मेरा परिवार सिर्फ उन लोगों का समूह नहीं है जिनके साथ मैं रहता हूँ। यह मेरे जीवन का हृदय है। यह प्यार, सहारा और पहचान का एहसास देता है। मेरा परिवार मुझे मूल्य प्रदान करता है, मेरे विकास में सहायक है, और अटूट प्रेम तथा देखभाल प्रदान करता है। जब मैं अपने परिवार के महत्व पर विचार करता हूँ, तो मुझे अपने जीवन मे इसकी स्थायी उपस्थिति का एहसास होता है। जिस तरह विशेषज्ञ व्याक्ति और समाज के निर्माण में परिवार के महत्व पर जोर देते हैं, उसी तरह मैं अपने परिवार की उस भूमिका के लिए आभारी हूँ जो मुझे आज जो व्यक्ति बन रहा हूँ, उसे आकार देने में निभाई है। मेरा परिवार मेरा सबसे बड़ा खजाना है, और उसका त्याग मेरी सबसे प्रिय संपत्ति है।

कार्यालय के प्रवेश द्वार का अलौकिक छवि

खुद के समक्ष

कुलदीप,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्यः खुद को जानना। मनुष्य के समक्ष एक प्रश्न हमेशा खड़ा रहता है और वो उसे कितना ही भुलाने की कोशिश करें, कितना ही उलझाने की कोशिश करें, वो प्रश्न उसके सामने से हटता ही नहीं, जब तक कि हल न हो जाए। इंसान कितना ही धन इकट्ठा कर लें, महल बना लें या कितना ही यश प्राप्त कर लें लेकिन वह प्रश्न बीच-बीच में बार-बार उत्पन्न हो जाता है-मैं कौन हूँ? मैं किसलिए हूँ? इस जीवन का अर्थ क्या है?

जब तक इंसान इस जीवन के पहले प्रश्न को हल नहीं कर पाता तब तक चिंता बनी रहती है, जीवन में आनंद की कोई वर्षा नहीं हो सकती। न ही वह आत्म-विश्वस्त हो सकता है, न वह निश्चित हो सकता, न उसके तनाव समाप्त हो सकते, न उसकी अशांति समाप्त हो सकती है, न उसकी पीड़ा बंद हो सकती, न उसके दुख से छुटकारा हो सकता।

हमारे मन की एक अनोखी खूबी है कि हम जिस भी शब्द के बारे में चिंतन करना चाहते हैं, वही छिप जाता है। जिसको भुलाना चाहते है, वही शब्द सामने आ जाता है। शब्द को भूलने का प्रयास नहीं बल्कि निरीक्षण करने से वह शब्द हवा हो जाते हैं। हमने बहुत से शब्द सीख लिए हैं और उन शब्दों को ही ज्ञान समझ रखा है। इन सब शब्दों के कारण ही आदमी अज्ञान में रहता है। शब्द ज्ञान नहीं है। सत्य शब्दों के पीछे है, सत्य शब्दों से पहले है। शब्दों के मिटने के बाद भी सत्य रहता है। जब हम शब्दों का निरीक्षण करेंगे तभी हम सत्य को प्राप्त कर सकते हैं। आदमी अपनी पहचान भी शब्दों से ही जोड़ता है उदाहरण के तौर पर किसी से परिचय पूछा जाए तो वह किसी नाम, पद, स्थान, विश्लेषण से खुद को जोड़ कर परिचय देता

है। और जिस दिन हमें निःशब्द दर्शन की संभावना दिखने लगेगी उस दिन हम जान पाएंगे कि मैं कौन हूँ। मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी दुर्घटना घट गई है वह यह कि मनुष्य ने अपने चारों तरफ कल्पनाओं का जाल बुन लिया है, और इसको तोड़ने में उसको बड़ी घबराहट, झिझक होती है। वह उस जाल को बुनता ही चला जाता है। धीरे-धीरे वह उस जाल में खो जाता है, और पता लगाना भी मुश्किल होता है कि कौन है इसके भीतर? आदमी ने शरीर के ऊपर ही नहीं बल्कि चित्त पर भी बहुत वस्त्र पहन लिए हैं। बाहर के कपड़े तो वह एक बार पहन लेता है और चला जाता है। लेकिन अपने भीतर चित्त के वस्त्र उसे हर वक्त बदलने पड़ते है क्योंकि प्रत्येक आदमी के साथ उसे दूसरे वस्त्र पहन कर मिलना पड़ता है। और तब इस बदलाव की जिंदगी जीते-जीते चेहरे बदलते-बदलते हम यह भी भूल जाते हैं कि हमारा असली चेहरा क्या है? असल में इन चेहरों, इन वस्त्रों का मूल्य है, इनको छोड़ते ही हम कुछ भी नहीं हैं।

जीवन में मनुष्य दूसरों को धोखा देना चाहता है वह तो ठीक है, लेकिन अपने को भी धोखा देना चाहता है। लेकिन क्या कोई ऐसा दरवाजा है जिससे हम जाएँ और हम ही देख न सकें। लेकिन हम बहुत चतुर है, हम आँख बंद कर के निकल जाते हैं। जो अपने आप को निरंतर धोखा दे रहा है वह कैसे खुद को जान सकेगा।

लोग पुस्तकों से पढ़ लेते हैं आत्मा की बातें, सुन लेते हैं परंपराओं से परमात्मा के विचार और उन्हें सीख लेते हैं और इस भाँति उनकी बातें करने लगते है जैसे हम सब जानते हैं। उधार लिये ज्ञान को हम एहसास करने लगते हैं कि हमारा अपना है।

जिंदगीं को जो भी जाग कर देखेगा उसकी जिंदगी एक क्रांति हो जाएगी, उसके भीतर सब बदल जाएगा। जिंदगी के कुछ क्षणों के खतरे के समय में हम जागे हुए होते हैं। अन्यथा साधारणतः हम सोए हुए होते हैं। अगर मनुष्य को दिखाई पड़ जाए कि संसार में आग लगी

हुई है, जीवन दुखों से घिरा हुआ है। हमारे भीतर बाहर निकलने की और संसार से ऊपर उठने की आकांक्षा पैदा हो जाएगी। जीवन को जीवन मानकर कोई व्यक्ति वास्तविक जीवन की तरफ कैसे जाएगा।

मैं कौन हूँ - आप वही है जो आपकी प्यास है। अगर आपकी प्यास धन के लिए, मकान के लिए, अगर आपकी प्यास पद के लिए है, तो आप वही है, उसी कोटि के व्यक्ति है। अगर आपकी प्यास जीवन के लिए है तो आप दूसरे व्यक्ति हो जायेंगे।

हम इस समय सार्थकता को खोजते हैं और यह भूल जाते हैं कि हमसे पहले अरबों-अरबों लोग इस जमीन पर रहे हैं उन्होंने भी इसे सार्थक समझा और एक दिन पाते हैं कि सब व्यर्थ हो जाता है। दुनिया ऐसे समझदारों से भरी हुई है जो जीवन को बिल्कुल भी नहीं जानते हैं। इस समझदारी को छोड़ देना पड़ेगा, जिसे हम समझदारी समझ रहे हैं वह झूठी है और उसका कोई आधार नहीं है।

हर आदमी कुछ खोज रहा है - कोई धन, कोई यश। जो धन और यश से बचता है वह धर्म खोजता है, मोक्ष खोजता है, परमात्मा खोजता है। लेकिन खोजता जरूर है। खोज का अर्थ है - दूर जाना, जो नहीं मिला है उसे ढूँढ़ना। हम सबने खोज करने में उलझ कर स्वयं को खो दिया है। कोई और चीज है जो मिल जाए तो आनंद होगा, अन्यथा मैं दुखी रहूँगा। इस चीज का नाम अ ब स कुछ भी हो सकता है। नाम बदल लेने से कोई अंतर नहीं पड़ता। दौड़ने वाला चित्त की सत्य की खोज में खोज जारी है। यह चित्त ही सत्य की खोज में सबसे बड़ी बाधा है।

जीवन भर आदमी देखता रहता है। देखना, दर्शन या साक्षी होना उसका स्वभाव है, यह कोई काम नहीं है। सारा दिन रात हम रात देखते है लेकिन जो मनुष्य थोड़ा सा समय अपने लिए बचा लेता है और उसमें मौन हो जाता है, शांत हो जाता है, उन क्षणों में जो सपंदा मिलती है, जो अनुभव मिलते हैं - वे जीवन की स्थायी निधि

बन जाते हैं, वही है जीवन। इसलिए पहला सूत्र है अंतरात्मा के परिवर्तन का मौन।

पहला सूत्र - मौन से भरा मन, दूसरा सूत्र - प्रेम और प्यास से भरा चित्त और तीसरा सूत्र - अहंकार से शून्य व्यक्तित्व। अहंकार अंधकार की भाँति है। अगर दीया लेकर चले जाएं खोजने तो वह कहीं न मिलेगा। वह मिलेगा अपने "मैं" के केंद्र में। यह "मैं" सबसे बड़ा झूठ जगत है। इसी पर हम जीते हैं, इसी पर चलते हैं, इसी पर श्रम और मेहनत करते हैं। यदि हम किसी से पूछे - किसलिए जी रहा है? किसलिए कर रहा है? किसलिए चल रहा है? आपको पता चलेगा "मैं" की संतुष्टि हेतु एक यात्रा चल रही है। जब तक हम अपने भीतर मौन, ध्यान, प्यास, त्याग का दीया नहीं जलाते, अहंकार फलता-फूलता है और जिस दिन हम भीतर जाग कर खोजने जायेंगे, उस दिन वह नहीं पाया जाएगा।

आज के युग में हम असहजता से जी रहे हैं, जो पैदा होती है आदर्श से, लोग सिखाते हैं एक दूसरे को। हमें निजता में जीना है, कुछ है, थोपते कुछ हैं। बाहर भीतर के रंग में भेद पड़ रहा है। भीतर के रंग पल रहे है। सारी दुनिया को खुद से वाकिफ़ होने दो। दुनिया शर्तों के आधार पर सम्मान देगी। कुछ खोना मत चाहना, जब कोई भयग्रस्त हुआ, कमजोर हुआ आत्मा खो जाती है।

मैं जान रहा हूँ कि इन सब विचारों का हल व्यक्त नहीं किया गया है क्योंकि इन प्रश्नों, विचारों का रेडिमेड उत्तर नहीं हो सकता। ऐसा नहीं है कि इन सभी प्रश्नों, विचारों का उत्पन्न होना एक अचानक क्रिया है और ये भी नहीं है कि ये सभी विचार योग्य नहीं है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे शुरू होती है, हम हल जानने हेतु प्रयत्न करते हैं, उलझते हैं फिर से भटक कर एक राह पकड़ लेते हैं। फिर थोड़े समय बाद जब प्रश्न उठते हैं हम फिर हल खोजते हैं। इस प्रयत्न के बीच मिले उत्तरों से ही सत्य की प्राप्ति होती है।

सोचो तो ज़रा

कृष्ण कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में हर कोई किसी न किसी मंजिल की ओर भाग रहा है। कोई कैरियर बनाने की होड़ में दौड़ रहा है, तो कोई अपने पारिवारिक जीवन को सही दशा और दिशा प्रदान करने का प्रयास कर रहा है, कोई नाम और शोहरत कमाने की जिद में, तो कोई रिश्ते बचाने की जद्दोजहद में है।

हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ भाग दौड़ महत्वाकांक्षा, डिजिटलीकरण और दिखावे ने सोचने व समझने की शक्ति को कम कर दिया है। अब हमारे दैनिक जीवन में हमारे पास इतना समय ही नहीं बचा कि हम किसी मुद्दे पर एक पल शांत मन से विचार करें या फिर इस शोर-शराबे वाली दुनिया में अपने अंदर के सन्नाटे को सुनें। मुझे इस बात की अनुभूति होती है कि कभी वक्त मिलने पर मुझे स्वयं को ये आदेश अवश्य देने चाहिए कि रुकिए, ठहरिये, और सोचिए - क्या मैं सही दिशा में जा रहा हूँ? सोचो तो जरा...यही है सोचने की बात। क्या मैं वास्तव में वही कर रहा हूँ जो मुझे करना चाहिए? क्या मैं खुश हूँ? क्या मैं समाज में कुछ बदलाव ला रहा हूँ या बस भीड़ का हिस्सा बना हुआ हूँ।

सोचना केवल मन का विषय ही नहीं बल्कि हमारी अंतरात्मा की आवाज है। वह अंतरात्मा जो चुपचाप धीरे से हमारे भीतर शिकायत के लहजे में यह पूछती है, “क्या यह जीवन केवल कमाने खाने और दिखाने भर का नाम है? क्या भावनाएं, संवेदनाएं, मूल्य संस्कार मानवता और रिश्तों की ऊष्मा बेईमानी हो चुकी है ?” सोचो तो जरा। आज के इस दौर में आधुनिक समाज में जो सबसे बड़ी चुनौती उभर कर सामने आई है वह सोचने का विषय अर्थात सकारात्मक विचारों के अभाव का संकट है। अब ना कोई सकारात्मक सोचता है ना किसी

के पास सोचने भर का समय है और ना ही किसी को सकारात्मक सोचने का अवसर दिया जाता है।

सोशल मीडिया की रीलों में 15 सेकंड की खुशी या ज्ञान, न्यूज़ चैनलों का शोर और व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी की अफवाहें यही हमारे ज्ञान और सोच के स्रोत बन चुके हैं। क्या किसी मुद्दे पर हमारी राय सचमुच हमारी अपनी है या फिर किसी और की थोपी हुई सोच को हम दोहरा रहे हैं। आज हम अपने मस्तिष्क को विचारों की दृष्टि से रचनात्मक या सृजनात्मक नहीं बना पा रहे हैं। हम विचारों को उधार ले रहे हैं, यह उधारी हमारी समझ, सहनशीलता और विवेक तीनों को खोखला कर रही है। आज की युवा पीढ़ी किसी सेलिब्रेटी, फिर चाहे वह अभिनेता, राजनेता तथा क्रिकेटर हो, को अपना आदर्श बना लेते हैं। उसके विचार और जीवन शैली चाहे जैसी हो। मैं यहाँ पर किसी भी सेलिब्रेटी की जीवन शैली पर प्रश्न चिहन नहीं लग रहा हूँ। मेरे कहने का तात्पर्य है कि हम अपनी जिंदगी उसकी जीवन शैली के अनुसार जीने का प्रयास करने लगते हैं। यह हम किसी महान व्यक्तित्व को अपना आदर्श बनाते हैं तो हमें उसके सद्गुणों, सद्विचारों, सकारात्मक सोच व अच्छी आदतों का अनुसरण करना चाहिए न कि सिर्फ उसके पहनावे, उसकी हेयर स्टाइल और फैशन की दुनिया में उसके द्वारा की गई गतिविधियों को। हमें अपने 'स्व' को पहचानना चाहिए। अपने अंदर के जज्बे व हुनर को टटोलकर अपने मूल विचारों के साथ दूसरों के सद्विचारों को मिश्रित करते हुए जीवन की इस यात्रा में अग्रसर होना है।

क्या हमने कभी इस बात पर विचार किया कि हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं? किताबें, कॉम्प्टीशन डिग्रियाँ और तकनीक तो दे रहे हैं, लेकिन क्या संवेदनशीलता, करुणा मानवता सहिष्णुता या संस्कार भी सिखा पा रहे हैं? क्या उन्हें यह समझा पा रहे हैं कि इंसान होना एक डिग्री नहीं बल्कि एक जिम्मेदारी है?

एक समय था जब रिश्ते जीवन की प्राथमिकता हुआ करते थे, आज रिश्तों के लिए समय निकालना भी एक बड़ा काम माना जाता है। लोग साथ रहते हैं लेकिन आत्मीयता का जुड़ाव नहीं रहता है। पहले संपर्क या संचार के साधन बेशक कम थे लेकिन लोग संपर्क में हमेशा रहते थे। आज लोगों के फोन की संपर्क की सूची में तो बहुत नाम हैं लेकिन संपर्क में रिश्तों की सूची बहुत छोटी है। लोग वॉइस कॉल, वीडियो कॉल या मैसेंजर के माध्यम से एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं, किंतु रिश्तों और संबंधों में दिलों के तार का संपर्क बहुत कमजोर होता जा रहा है जिससे भावनाओं का आदान-प्रदान दुर्लभ सा हो गया है। क्या हम अपने माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चों और दोस्तों के लिए वास्तव में समय निकाल पा रहे हैं? क्या हमने कभी उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास किया है या फिर हम मान चुके हैं कि “सब ठीक है” कह देना ही काफी है।

कभी आपने आसमान की ओर ध्यान पूर्वक निहार कर देखा है और सोचा है कि यह नीला रंग पहले जितना साफ क्यों नहीं दिखता, चिड़ियों की चहचहाट कम सुनाई देती है, मौसम का समय चक्र धीरे-धीरे बदल रहा है, जल स्रोत सूख रहे हैं और गर्मियों के मौसम में तापमान सामान्य से काफी अधिक हो रहा है। क्यों? कभी स्वयं से इन सभी प्रश्नों के जवाब पूछिए। प्लास्टिक के ढेर में भविष्य खोज रहे हैं, विकास की अंधी दौड़ में हमने विनाश को आमंत्रण दे दिया है और यह सब उसी सोच का प्रतिफल है जो दीर्घकालिक परिणाम पर ध्यान नहीं देती।

इस भौतिकवादी युग में हर कोई पैसा कमाने की होड़ में है- कोई नौकरी से, कोई व्यवसाय से, तो कोई अपने अन्य माध्यम से धन कमा रहा है। लेकिन सोचो तो जरा क्या यह धन दौलत आपको वास्तविक सुख दे रही है? धन इतना जरूरी हो गया है कि लोग उसके पीछे अपनी नींद, स्वास्थ्य, आत्म-सम्मान और संबंध तक को खो देते

हैं। धन बहुत कुछ है लेकिन सब कुछ नहीं। सोचो तो जरा यदि जीवन का लक्ष्य केवल धन अर्जित करना है तो सबसे अमीर व्यक्ति को सबसे अधिक सुखी भी होना चाहिए था, लेकिन क्या ऐसा है?

आज की युवा पीढ़ी सबसे अधिक संसाधन युक्त है। उसके पास इंटरनेट, तकनीक, वैश्विक स्तर पर अवसर सब कुछ है। लेकिन क्या सबसे अधिक संतुलित भी है? उत्तर प्राप्त होगा, नहीं। ऐसा क्यों, सोचो तो जरा क्योंकि हमने उन्हें आगे बढ़ने की दौड़ तो दी लेकिन ठहरकर सोचने की आदत नहीं दी, हमने कहा तेज भागो लेकिन यह नहीं बताया कि कहाँ, हमने सिखाया हार मत मानो लेकिन यह नहीं समझाया कि क्या लड़ाई तर्कसंगत है या नहीं।

इस लेख का उद्देश्य किसी को उपदेश देना नहीं है। यह मात्र एक पुकार है, अंतरात्मा की पुकार। परिवर्तन कभी बाहर से नहीं आता वह भीतर ही जन्म लेता है। कुछ भी नया करने के लिए या कोई परिवर्तन लाने के लिए सबसे पहले हमें स्वयं से संघर्ष करना पड़ता है। जब हम अपने बारे में, समाज के बारे में, परिवेश के बारे में और आने वाली पीढ़ी के बारे में सोचेंगे तभी बदलाव संभव होगा।

सोच किसी भी क्रांति का पहला सोपान है। यही पहला कदम अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञानता से ज्ञान की ओर, निष्क्रियता से सक्रियता की ओर, धर्म से अधर्म की ओर और स्वार्थ से परोपकार की ओर अग्रसर करने की सामर्थ्य धारण किए हुए।

इस लेख के शब्द समाप्त हो सकते हैं लेकिन इसके शब्दों में निहित संदेश नहीं। जब कभी आप आराम कर रहे हों, थके हुए हों या खाली समय का सदुपयोग कर रहे हों तो सोचिएगा जरूर....।

धरती का स्वर्ग - कश्मीर

गौतम सरकार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कश्मीर, जिसे "धरती का स्वर्ग" कहा जाता है, भारत के सबसे उत्तरी भाग में स्थित है। हर भारतीय की इच्छा होती है कि वह अपने जीवनकाल में कम से कम एक बार कश्मीर की यात्रा करे और इसकी खूबसूरती का आनंद उठाए और मैं भी उनमें से एक हूँ। लगातार आतंकवादी गतिविधियों, कश्मीर की एक अज्ञात संस्कृति और भारी जेब-खर्च के तनाव के बीच, मैंने इस साल मार्च के अंत में अपनी पत्नी और बेटे के साथ कश्मीर की यात्रा करने का फैसला किया।

हमने दिनांक 22.03.2025 (शनिवार) को अगरतला से हवाई जहाज से अपनी यात्रा शुरू की और उसी दिन शाम छः बजे श्रीनगर पहुँच गए। टिकट बुक करते समय, मैंने विमान के दाईं ओर की सीटें बुक की थीं। श्रीनगर पहुँचने के अंतिम 30-40 मिनट, हमने विमान की खिड़कियों से पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के मंत्रमुग्ध दृश्य का आनंद लिया, जो महान हिमालय का एक हिस्सा है। हमारे ड्राइवर-सह-गाइड मुजफ्फर भट (उम्र 55-56) अपनी बड़ी टोयोटा कार के साथ श्रीनगर हवाई अड्डे पर हमारा इंतजार कर रहे थे। वह हमें हमारे होटल में ले गए, जो डल झील से पाँच मिनट की पैदल दूरी पर थी। होटल के रास्ते में मुजफ्फर भाई ने हमें रविवार से गुरुवार तक की हमारी पूरी भ्रमण योजना बतायी क्योंकि हमें दिनांक 28.03.2025 (शुक्रवार) को लौटना था।

अगले दिन, जैसा कि तय था, मुजफ्फर भाई सुबह ठीक आठ बजे होटल के सामने आ पहुँचे। सोनमार्ग के लिए निकलने से पहले मैंने मुजफ्फर भाई को गाड़ी धीरे चलाने के लिए कहा क्योंकि मेरी पत्नी को गाड़ी में यात्रा करते समय चक्कर आता है। रास्ते में चलते चलते मुजफ्फर भाई हमें सभी जगहों के बारे में बताने लगे। कुछ

समय बाद हमारे रास्ते में सिंधु नदी आती है जो हमारी सोनमार्ग तक की यात्रा में हमारे साथ रही। हम कश्मीर की वादियों के खूबसूरत नजारों का आनंद उठाने लगे। श्रीनगर से सोनमार्ग की दूरी 81 किमी है और पहुँचने में करीब ढाई घंटे लगे। सोनमार्ग सुरंग के अंत तक पहुंचने से ठीक पहले, मुजफ्फर भाई ने मेरे बेटे (जो मुजफ्फर भाई के बगल में आगे बैठा था) से वीडियो रिकॉर्ड करने को कहा। जैसे ही हम सुरंग पार कर रहे थे, हमने देखा कि हर तरफ बर्फ ही बर्फ है। पहाड़ की चोटियाँ, सड़क के किनारे, घाटियों में तथा जहाँ भी हम देख सकते थे हर जगह बर्फ ही थी। हम सब मंत्रमुग्ध हो गये थे। जैसे ही गाड़ी पार्किंग में पहुँची, कई स्थानीय लोग हमारी ओर दौड़े और हमसे स्नो बाइक और स्लेज पर सवारी करने और जूते और गर्म कपड़े किराए पर लेने के लिए मोलभाव करने लगे। मुजफ्फर भाई हमारी मदद करने के लिए आगे आए और उनसे मोलभाव करते हुए हमारे लिए तीन स्नो बाइक बहुत सस्ती दर पर बुक कर दीं। हमने बर्फ पर चलने के लिए जूते भी पहने। स्नो बाइक पर सवारी करना हमारे लिए एक नया अनुभव था और हमने इसका भरपूर आनंद लिया। जहाँ पर स्नो बाइक ने हमें छोड़ा था वहाँ से हम बर्फ पर पैदल चले और थजीवास ग्लेशियर गए। वहाँ का नज़ारा अविश्वसनीय था। यह स्वर्ग जैसा था। हम बर्फ में खेले, उसमें चले, चढ़े, फिसले तथा गिरे भी। बहुत मज़ा करने और समय बिताने के बाद, हम स्नो बाइक से वापस पार्किंग क्षेत्र में लौट आए जहाँ मुजफ्फर भाई हमारा इंतज़ार कर रहे थे। हमने सिंधु नदी के किनारे कुछ समय बिताया। श्रीनगर में प्रवेश करने से पहले, हमने 'हरि किला' देखा जो एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित था। किला अब सीमा सुरक्षा बल के नियंत्रण में था और किले में प्रवेश करने के लिए हर किसी को अपना पहचान पत्र दिखाना पड़ता था। हमने किले से पूरा श्रीनगर शहर देखा। किले के अंदर एक मस्जिद,

एक गुरुद्वारा और एक काली माता का मंदिर था। इसके बाद हमने होटल के पास बंगाली रेस्टोरेंट में खाना खाया।

अगले दिन, हम श्रीनगर के लाल चौक पर घंटाघर के निकट कुछ देर रुकने के बाद गुलमर्ग चले गए। तंगमर्ग तक सड़क समतल थी, परंतु वहाँ से पहाड़ियाँ तथा तीखे मोड़ वाली सड़क शुरू होती है। मुजफ्फर भाई ने गाड़ी बहुत धीरे से चलायी और हम बिना किसी परेशानी के गुलमर्ग पहुँच गए। हमारे पास गोंडोला (केबल कार) का टिकट नहीं था। इसलिए हम शिव मंदिर गए और उसके बाद बर्फ पे चलते हुए वापस आ गए। श्रीनगर वापस लौटने के बाद हम एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित शंकराचार्य मंदिर, शालीमार बाग, निशात बाग, चश्माशाही बाग आदि जैसे अन्य मुगल उद्यानों में गए।

अगले दिन हम सुबह 8:00 बजे पहलगाम के लिए रवाना हो गए। हम राष्ट्रीय राजपथ संख्या 44 से होते हुए आगे बढ़े। हमने राजपथ से भारतीय सेना के बड़े बड़े काफिले के चलते नागरिक वाहनों के रुकने का नजारा देखा। रास्ते में हम बादामवारी में ड्राई फ्रूट की दुकान, सेब के बगीचे और क्रिकेट बैट बनाने वाली फैक्टरियों में रुके। हम 14 फरवरी 2019 में हुए पुलवामा हमले की जगह से भी गुजरे। हम करीब 11:30 बजे पहलगाम पहुँचे। मुजफ्फर भाई द्वारा घोड़ों के मालिकों से मोलभाव के बाद, हम तीन घोड़ों पर सवार हुए। हमारे तीन घोड़ों के साथ साथ दो लोग भी थे। घोड़े पर पहाड़ियों में यह एक अविस्मरणीय यात्रा थी। वहाँ चीड़ और देवदार के पेड़, छोटे-बड़े पत्थर, नदियाँ और बर्फ से पिघली हुई पानी की धाराएँ थीं, जिनके बीच से हमारे घोड़े धीरे धीरे चलते हुए ऊपर पहुँचे। रास्ते में हम कुछ दर्शनीय स्थलों और घाटियों में रुके। हमने वह घाटी देखी जहाँ प्रसिद्ध फिल्म “बजरंगी भाईजान” का एक हिस्सा फिल्माया गया था। अंत में, हम भारत के मिनी-स्विट्जरलैंड, बैसरन घाटी पहुँचे। हमने प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लिया। हालांकि हम हरियाली का आनंद नहीं ले

पाए, क्योंकि घाटी कुछ दिनों पहले बर्फ से ढकी हुई थी, और हरी घास अभी भी कम थी। मेरे बेटे ने वहाँ ज़िप-लाइन का आनंद लिया। बैसरन घाटी में खाने-पीने की कई दुकानें थीं। हमारी वापसी की यात्रा बिल्कुल भी आनंददायक नहीं थी। पहाड़ियों से नीचे तक का रास्ता काफी खड़ा था और घोड़े एक ही संकीर्ण रास्ते पर चलते थे, जहाँ कई जगहों पर कीचड़ भरा था। अन्य पर्यटकों के साथ घोड़े भी उसी संकुचित रास्ते से ऊपर चढ़ रहे थे और कभी-कभी ऐसा लगता था कि दो घोड़ों के लिए एक-दूसरे को पार करना असंभव हैं। नीचे की ओर एक लंबी, डरावनी यात्रा के बाद, आखिरकार हम अपराह्न लगभग 3:30 बजे पहलगाम शहर की समतल भूमि पर पहुँचे। हमने एक पंजाबी ढाबा में अपना भोजन किया और अपने होटल में चले गए, जिसमें हमारे लिए पहाड़ का नज़ारा दिखाने वाला कमरा बुक किया गया था। यात्रा और रोमांच से भरे दिन के बाद, हमने होटल में अपने रात का भोजन का आनंद लिया और जल्दी सो गए। यह एक ठंडी रात थी, लेकिन हमने दो कंबल और एक रूम हीटर की मदद से ठंड को सहन कर लिया।

अगले दिन, हमने पहाड़ों की चोटियों पर सूरज की पहली किरण पड़ने का आनंद लिया। पहलगाम में सुबह का तापमान सिर्फ़ एक डिग्री था। हमने नाश्ता किया और श्रीनगर के लिए वापसी की यात्रा शुरू की। हम दोपहर लगभग 12 बजे श्रीनगर पहुँचे और प्रसिद्ध ट्यूलिप गार्डन देखने गए, जो सिर्फ़ आज ही पर्यटकों के लिए खुला था। ट्यूलिप गार्डन के बाहर और अंदर दोनों जगह काफ़ी भीड़ थी। हालाँकि सभी ट्यूलिप अभी सम्पूर्ण रुप से खिले नहीं थे, लेकिन हमारे लिए यह एक शानदार अनुभव था। हमने इससे पहले वर्ष 2017 में कलिम्पोंग के डेलो पार्क में ट्यूलिप देखे थे और यह पहली बार था कि वहाँ ट्यूलिप खिले थे। लेकिन इतनी बड़ी संख्या और विविधता में नहीं, जितना हमने यहाँ इस ट्यूलिप गार्डन में देखे। उसके बाद हम

बॉटेनिकल गार्डन गए। हमने अपना दोपहर का भोजन किया और फिर श्रीनगर की प्रसिद्‌ध डल झील पर शिकारे की सवारी के लिए गए। यह भी हमारे लिए एक शानदार अनुभव था। स्थानीय लोग शिकारे पर सवार होकर पर्यटकों को कहवा (कश्मीरी चाय), फल, कई तरह के खाद्‌य पदार्थ, उपहार सामग्री, आदि बेच रहे थे। हम तैरते हुए बाजार तथा मीना बाज़ार में उतरे और कुछ दुकानों में प्रवेश किया।

अगले दिन हम दूधपथरी गए जो हमारी संभावित पर्यटन स्थलों की सूची में बिलकुल भी नहीं थी। दूधपथरी के प्राकृतिक सौंदर्य की हमने उम्मीद नहीं की थी। वहाँ हम ऑल-टेरेन व्हीकल में सवार होकर दूध गंगा नदी देखने गए। दूधपथरी पार्किंग स्थल से दूध गंगा नदी तक सड़क के दोनों ओर 2-3 फीट मोटी बर्फ की परत जमी हुई थी। घाटी, पहाड़ और नदी के किनारे भी सफेद बर्फ से ढके हुए थे। वापसी की यात्रा में हमने दूधपथरी की तलहटी में एक छोटे से ढाबा में मकई की रोटी, सरसों का साग, स्थानीय चटनी और कहवा का आनंद लिया। श्रीनगर वापस लौटने के बाद, हमने शाम को पैदल ही इधर-उधर घूमते हुए बिताया। यह श्रीनगर में हमारा आखिरी दिन था। अगले दिन मुजफ्फर भाई सुबह छः बजे आए क्योंकि श्रीनगर से हमारी फ्लाइट सुबह 8:55 बजे की थी। श्रीनगर हवाई अड्‌डे पर सेना की कई जाँच के बाद हम एयरपोर्ट बिल्डिंग में दाखिल हो पाए। श्रीनगर से निकलने से पहले मुजफ्फर भाई को अलविदा कहना भी कुछ हद तक भावुक करने वाले पल थे। उनके बिना हमारे लिए यह यात्रा इतनी सहज और रोमांचक नहीं हो सकती थी। हमारा हवाई जहाज समय पर थी। चूँकि श्रीनगर हवाई अड्‌डा सेना के नियंत्रण में था, इसलिए किसी को भी तस्वीरें लेने की अनुमति नहीं थी। हवाई जहाज में बैठे-बैठे हम सभी अपनी छोटी लेकिन यादगार और अविस्मरणीय यात्रा के बारे में सोच रहे थे। हमने तय किया था कि हम फिर से कश्मीर आएंगे, शायद किसी और मौसम में।

हिन्दी दिवस और उसकी प्रासंगिकता

जयशंकर परमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

14 सितंबर अर्थात् हिन्दी दिवस यह तिथि जैसे ही हमारे कानों में गूँजती है हमारे मन मस्तिक में हिन्दी की दुर्दशा पर आयोजित होने वाले वार्षिक कर्मकांड का एक बड़ा ही मार्मिक चित्र अवतरित होता है। 14 सितंबर 1949 ई. को स्वतंत्र भारत की संविधान सभा के द्‌वारा हिन्दी को राजभाषा के रुप में स्वीकर किया गया और इसी कारण इस तिथि को हिन्दी दिवस के रुप में मानाया जाता है। 14 सिंतबर 1953 ई. को पहली बार हिन्दी दिवस के रुप में मनाया गया जो आज भी अनवरत रुप से जारी है।

मानव जाति के विकास का जब हम अध्यन करते हैं तो यह पाते हैं कि मानव सम्यता के विकास के समानांतर ही भाषा के विकास का क्रम भी आरंभ होता है। मानव जाति ने पहले संकेतों और हाव-भाव से अपने विचारों की अभिव्यक्ति की जो शुरुआत की वह धीरे-धीरे भाषा के विकास का आधार बना और भाषा का प्रार्दुभाव हुआ।

हमारे राष्ट्र हिन्दुस्तान का इतिहास और संस्कृति काफी पुरातन रहा है। इस राष्ट्र के गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति के साथ साथ हमारी भाषा के विकास का भी गौरवशाली इतिहास रहा है। आज की आधुनिक हिन्दी का विकास क्रम काफी पुरातन रहा है।

संस्कृत के कोख से उत्पन्न होकर पालि, पाकृत अपभ्रंश अवहट्‌ट से होते हुए आधुनिक हिन्दी ने अपने विकास की यात्रा पूरी की है। हिन्दी के विकास में बाधा तब उत्पत्र होनी शुरु हुई जब हिन्दुस्तान पर विदेशी अक्रांताओ ने आक्रमण करना शुरु किया और राजनीतिज्ञ सत्ता हथिया ली। किसी भी भाषा का विकास तत्कालीन सत्ता के द्‌वारा पोषित होता रहता है। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में जब तुर्क, अफगान और मुगल शासन सत्तासीन रहे तो हिन्दी के

विकास पथ पर अवरोध उत्पन्न हुए परन्तु हिन्दी अपनी मौसेरी बहन के साथ आपसी साहचर्य के साथ बहती रही।

हिन्दी के विकास में सबसे बड़ा अवरोध उस समय उत्पन्न हुआ जब भारत की राजनीतिज्ञ सत्ता अंग्रेजों के हाथ में चली गई। अंग्रेज इस बात से भलीभाँति परिचित थे कि उनकी सत्ता के स्थायित्व के लिए यह आवश्यक है कि भारतीयों को एक सूत्र में बाँधकर रखने वाली संपर्क सूत्र हिन्दी को कमजोर किया जाए जो जाने अनजाने में पूरे भारतवर्ष में एकता के स्तंभ के रुप में काम कर रहा है। इस सोच के कारण उन्होंने हिन्दी भाषा को कमजोर करने का कुचक्र प्रारंभ किया। वे जानते थे कि भारतीय संस्कृति अपने ज्ञान विज्ञान, अध्यात्म और दर्शन के क्षेत्र में उच्च स्तर को प्राप्त किया है। उसके मूल में यह सर्म्पक सूत्र रुपी हिन्दी भाषा है।

इसलिए आधुनिकता के नाम पर मैकाले के द्वारा एक नई शिक्षा पद्धति अंग्रेजी भाषा में लाई गई जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान विज्ञान को नष्ट कर अंग्रेजी शासन के लिए सेवकों की फौज तैयार करना था। वे अपने उद्देश्य में सफल रहे और हम सफलता के शीर्ष से शिक्षा, साहित्य, दर्शन, विज्ञान के क्षेत्र में अधोगति को प्राप्त हुए।

स्वतंत्रता के पश्चात् जब यह उम्मीद थी कि अपनी राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी को अपनाकर हम पुनः सफलता के शीर्ष को प्राप्त करके उसी समय मैकाले के मानस पुत्रों ने अपना षडयंत्र सफलतापूर्वक लागू किया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के बदले संविधान में राजभाषा के रुप में स्वीकार किया। अंग्रेजी को दूसरी राजभाषा के रुप में स्वीकार करते हुए हिन्दी को अपनी सौतन (अंग्रेजी) के साथ रहने के लिए अभिशप्त किया गया। इसके पीछे क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और अस्तित्व का संकट बाताया गया। अन्य भारतीय भाषाओं का विकास हिन्दी के साथ ठीक उसी प्रकार होता जैसे किसी बड़ी नदी के साथ

उसकी सहायक नदियों का विकास होता हे और वे सदैव जीवंत बनी रहती हैं।

वह हिन्दी जो विश्व में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है वह अपने ही घर में उपेक्षित महसूस करती है। फ़िजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद जैसे राष्ट्रों में जहाँ इसे गर्व के साथ अपनाया जाता है वहीं यह हमारे राष्ट्र में पिछड़ेपन और हीनता के पर्याय के रूप में देखी जाता है। इसे बोलने वाले लोगों को सामान्य रूप से हमारे समाज में पिछड़ा, परम्परावादी और तथाकथित आधुनिकता का विरोधी समझा जाता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसी राष्ट्र और सभ्यता का विकास हुआ है जिसने अपनी भाषा को स्वीकार किया है और उसे अपनाया है। जर्मन और मंदारिन (चीनी) दुनिया की दो कठिनतम भाषाएँ है फिर भी जर्मनी और चीन ने उसे ही स्वीकार किया और आज विश्व के विकास सोपान पर वे शीर्ष पंक्ति में खड़े हैं।

यह विडंबना है कि आज दुनिया की दूसरी सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा के विकास के लिए उसे अपने ही राष्ट्र में भाषा दिवस अर्थात् हिंदी दिवस की आवश्यकता है। स्थिति की भयावहता का अंदाज़ा हम इसी से लगा सकते हैं कि हिंदी दिवस पर आयोजित होने वाले समारोहों में दिए जाने वाले नौकरशाहों और राजनेताओं के व्याख्यान कई बार आँगल भाषा में मुद्रित होते हैं।

हिन्दी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी में न केवल शिक्षा प्रदान की जाए अपितु रोजगार परक, व्यावसायिक शिक्षा विज्ञान और तकनीकी शिक्षा चाहे वो चिकित्सा के क्षेत्र में, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, प्रबंधन और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में भी उपलब्ध कराई जाए। जब इस भाषा में शिक्षित छात्रों को रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे तो वे आर्थिक रूप से सुदृढ़ होंगे तौर पर ये दूर होंगे और हिन्दी

भाषा को अधिक से अधिक लोग अपनायेंगे जिससे हिन्दी के विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

हिन्दी के विकास के लिए धरातल पर पूरे मनोयोग से सार्थक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है जिससे हिन्दी अपने राष्ट्र के उपवन में पल्लवित और पुष्पित हो सके।

इस कार्य के लिए केवल सरकारी प्रयास ही पर्याप्त नहीं होंगे बल्कि जन मानस की सामुदायिक भागीदारी भी आवश्यक होगी। इस कार्य के लिए समाज के सभी वर्गों की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके अभाव में हिन्दी दिवस सिर्फ एक वार्षिक कर्मकांड बनकर रह जायेगा और हम अपने बौद्धिक जीवन की प्राण वायु हिन्दी को हमेशा के लिए खो देंगें।

कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता समारोह के आयोजन का दृश्य

छबिमुरा की अनूठी गाथा

पार्थसारथी चक्रवर्ती,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना: रहस्य, रिलीफ़ और नदी के किनारे इतिहास की परछाइयाँ- त्रिपुरा के अमरपुर से थोड़ी ही दूर स्थित है कालाझाड़ी पहाड़, जिसकी छाती चीरकर बहती है त्रिपुरा की प्रमुख नदी—गोमती। इस नदी के किनारे की खड़ी चट्टानों पर, समय की परतों में खोए कुछ कलाकारों की छुअन से देवताओं की अनगिनत मूर्तियों का जन्म हुआ है। ये मूर्तियाँ 'रिलीफ़' तकनीक में सीधे पत्थर पर उकेरी गई हैं। यही है छबिमुरा—एक चमत्कारी शैलकला का नाम।

पंद्रहवीं शताब्दी की यह अनुपम शिलाचित्रकला आज भी इतिहास की मौन किंतु गूँजती प्रतिध्वनि को अपने भीतर समेटे हुए है। छबिमुरा न सिर्फ़ एक पर्यटन स्थल है, बल्कि इतिहास, कला और अध्यात्म की त्रिवेणी है– जो एक कालजयी खोज का प्रतिनिधित्व करती है।

पहली मुलाक़ात: एक फोटोग्राफ़र की निजी स्मृतिः पेशे से जुड़े एक कार्य के दौरान जब पहली बार अमरपुर गया, तब वहाँ के तत्कालीन उपखंड अधिकारी से परिचय हुआ। मेरी फ़ोटोग्राफ़ी में रुचि के बारे में वे पहले से ही जानते थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने छबिमुरा की दुर्गा की कई तस्वीरें देखी हैं, लेकिन वे सभी नदी की ओर से ली गई थीं—उनकी इच्छा थी कि कोई फ़ोटोग्राफ़र विपरीत दिशा से, सीधे समांतर कोण से देवी की तस्वीर उतारे।

उस समय मेरे पास कैमरा नहीं था, लेकिन उनकी बात मेरे मन में अंकित हो गई। जब पहली बार कैमरा लेकर छबिमुरा गया, तो वही कोना पकड़ने की इच्छा प्रबल थी। लेकिन जब विपरीत तट की खड़ी चट्टान देखी, तो वह कल्पना तुरंत ही मिट गई। मैं सोचता ही रह गया—कैसे संभव हुआ कि सैकड़ों वर्ष पहले, उन शिल्पियों ने इतनी ऊँचाई और खड़ी चट्टान पर इतनी बारीक मूर्तियाँ उकेर दीं?

बाद में तकनीकी उपायों से, नदी में नाव पर बैठकर मैंने तस्वीरें खींचीं–ऐसे कोण से जिससे एक समांतर खिंचाव का आभास मिले। लेकिन पहाड़ पर चढ़ने का साहस अब तक नहीं जुटा पाया।

रिलीफ़ शिल्पशैली का सौंदर्यः 'रिलीफ़' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द relievo से हुई है, जिसका अर्थ है "उभार देना" । इस शैली में पृष्ठभूमि को काटकर आकृति को उभारा जाता है। छबिमुरा की सारी मूर्तियाँ इसी बांस-रिलीफ़ शैली में निर्मित हैं। यद्यपि लकड़ी या पत्थर पर यह शैली प्रचलित है, लेकिन नदी के किनारे की खड़ी चट्टानों पर इस तरह की उत्कृष्ट नक़्क़ाशी एक अद्भुत उदाहरण है।

मूर्तियों की तकनीकी सूक्ष्मता से अनुमान लगाया जाता है कि ये कलाकार स्थानीय न होकर दक्ष दक्षिण भारतीय शिल्पी रहे होंगे। क्योंकि त्रिपुरा के किसी अन्य भाग में इस प्रकार की रिलीफ़ नक्काशी की कोई मिसाल नहीं है। यहाँ के पत्थरों का स्वभाव, वर्षा और वनक्षेत्र का दबाव–इन सबको देखते हुए यह कार्य एक असंभव लगने वाली चुनौती थी।

चक्राक माँ और मूर्तियों का विविध वैभवः छबिमुरा की सबसे विशिष्ट और पूजनीय मूर्ति है दसभुजा दुर्गा–जिसे स्थानीय लोग 'चक्राक माँ' कहते हैं। यह मूर्ति नदी की सतह से लगभग 10 मीटर ऊपर है, जिसकी ऊँचाई 10.7 मीटर और चौड़ाई 7.7 मीटर है। यह भारत के सबसे बड़े रिलीफ़ शिल्पों में से एक है। दुर्गा को महिषासुरमर्दिनी रूप में दिखाया गया है–दसों हाथों में अलग-अलग प्रतीकात्मक अस्त्र, और वह रथ पर आरूढ़ हैं।

छबिमुरा में कुल 37 रिलीफ़ मूर्तियाँ हैं, जिनमें दुर्गा के अतिरिक्त शिव, विष्णु, कार्तिकेय, गणेश, नारायणी, महिषासुर और कुछ स्थानीय देवताओं के चित्र हैं। कई पैनलों में राजा-रानी की शोभायात्रा, पुरोहित, सैनिक, और वाद्ययंत्र वादकों की छवियाँ भी उकेरी गई हैं।

कुछ विशिष्ट मूर्तियाँ इस प्रकार हैं:

शिव: ध्यानमग्न मुद्रा में, त्रिशूलधारी, पार्वती के साथ गुफा-द्वार पर स्थित।

गणेश: पेट पर शंख-चिह्न युक्त, संभवतः बच्चों की रक्षा हेतु।

कार्तिकेय: मयूर पर आरूढ़ देवसेनापति।

विष्णु: चक्र, गदा, शंख, पद्म के साथ चतुर्भुज रूप में।

राजा-रानी: दरबार के दृश्य, सैनिक, पुरोहित और वाद्ययंत्रवादक।

पशुबली: बलिप्रथा और धार्मिक अनुष्ठानों की अभिव्यक्ति।

नृत्यांगनाएँ: घुंघरू बांधे, करताल में नृत्यरत स्त्रियाँ।

ये मूर्तियाँ तत्कालीन समाज, आचार-विचार और सांस्कृतिक जीवन की झलक देती हैं। जनश्रुति के अनुसार, किसी राजा के छिपने की अवधि में उनके किसी मंत्री ने ये मूर्तियाँ बनवाईं। त्रिपुरा में ऐसी शैलकला अन्यत्र नहीं मिलती, पर दक्षिण भारत की मंदिर शैली से इनका साम्य देखा गया है।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि पंद्रहवीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रमण के समय कुछ सैनिक यहाँ छिपे थे और उन्होंने ये मूर्तियाँ बनाईं। पर इसके समर्थन में कोई ठोस प्रमाण नहीं है—इसलिए इस कला की उत्पत्ति पर और शोध की आवश्यकता है।

इतिहास के पन्नों में छबिमुराः छबिमुरा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण नाम आता है—हाईतन ख़ाँ। संस्कृत ग्रंथ राजमाला के अनुसार, वे एक मुस्लिम सेनापति थे, जो राजा धन्यमाणिक्य (1458-1462 ई.) या गोविंदमाणिक्य (1660-1676 ई.) के शासनकाल में त्रिपुरा में उच्च सैन्य व प्रशासनिक पद पर थे। जनश्रुति और कुछ ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, उन्हीं की देखरेख में छबिमुरा की खड़ी दीवारों पर देवमूर्तियाँ उकेरी गईं।

संस्कृत पढ़ने का सौभाग्य मुझे नहीं प्राप्त हुआ, लेकिन विभिन्न स्रोतों से जानकारी के अनुसार, राजमाला के दूसरे खंड (पृष्ठ

1007) में हाईतन ख़ाँ का उल्लेख एक सैन्य अभियान के संदर्भ में आता है, जहाँ उन्होंने पर्वतीय क्षेत्र में रक्षा और निर्माण का कार्य देखा। राजमाला ग्रंथ त्रिपुरा के 143 राजाओं और उनके कालखंड का वृत्तांत है–15वीं से 18वीं सदी के राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास का अमूल्य स्रोत। यद्यपि हाईतन ख़ाँ के जीवन का विवरण सीमित है, फिर भी राजा और उनके सेनापति की संयुक्त प्रेरणा से इन शिलाचित्रों की भव्य निर्माण प्रक्रिया को समझा जा सकता है।

एक मुस्लिम सेनापति द्वारा देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण उस युग की धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की अद्भुत मिसाल है। शाक्तपंथी राजा और उनके अधीन मुस्लिम अधिकारी–दोनों मिलकर एक ऐसे धार्मिक स्थापत्य की सृष्टि करते हैं, जो आज तक खड़ा है।

'देवतामुरा' की धार्मिक महिमाः छबिमुरा को स्थानीय लोग 'देवतामुरा' भी कहते हैं–अर्थात् देवताओं की पहाड़ी। यहाँ हर वर्ष जनवरी में एक स्नान उत्सव होता है, जिसमें चक्राक माँ की पूजा होती है और विविध जनजातियाँ एकत्र होती हैं।

रियांग, जमातिया, हालाम जैसी जनजातियों के लिए यह अत्यंत पावन स्थल है। यह स्थान जनजातीय लोकविश्वास और मुख्यधारा के हिंदू धर्माचार का एक अद्भुत संगम है। यहाँ की दुर्गा-आराधना एक नई सांस्कृतिक परत में सामने आती है।

लोककथा, रहस्य और ध्यान का केंद्रः एक मित्र से सुनी लोककथा के अनुसार, यह स्थान कभी मृत्युस्थली माना जाता था–जहाँ चक्राक माँ राक्षसी रूप में लोगों को निगल जाती थीं। जब उनकी पूजा शुरू हुई, तब मृत्यु दर घटने लगी। अब यह जनश्रुति किंवदंती बन गई है। लेकिन आज भी कहा जाता है कि रात के सन्नाटे में यहाँ अजीबो-गरीब ध्वनियाँ सुनाई देती हैं।

एक अन्य मित्र का अनुभव है कि छबिमुरा का परिवेश अत्यंत ध्यानात्मक (meditative) है–आँखें बंद करते ही मन तुरंत ही शांत हो जाता है। किसी अन्य के अनुसार यह दुर्गा मूर्ति ग्रीक पौराणिक 'मेडूसा' की तरह प्रतीत होती है–जिसके सिर पर सर्पों की आभा हो। विश्वास और तर्क के डोलते तराजू में छबिमुरा आज भी रहस्य से भरा है।

संरक्षण और भविष्य की दृष्टिः छबिमुरा सिर्फ़ अतीत की नहीं, वर्तमान और भविष्य की भी धरोहर है। यद्यपि यह स्थान अब पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है, परंतु इसके संरक्षण और अध्ययन की सशक्त पहल की आवश्यकता है।

स्थानीय लोग और पर्यटक कभी-कभी मूर्तियों पर अपने नाम या प्रियजनों के नाम उकेर देते हैं–जो हमारी ही विरासत को नष्ट करता है। ऐसे कृत्यों के प्रति जनजागरण आवश्यक है।

यदि विद्यालयों और महाविद्यालयों में छबिमुरा जैसे स्थलों पर केंद्रित प्रतियोगिता और शैक्षिक अभियान चलाए जाएँ, तो नई पीढ़ी में अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान और संवेदना जागेगी।

नाव यात्रा, पार्किंग जैसी सुविधाओं से जो आय होती है, उसका एक अंश यदि संरक्षण निधि में लगाया जाए, तो इसका दीर्घकालिक रखरखाव सुनिश्चित किया जा सकता है।

उपसंहार: पत्थरों में बसी सभ्यताः यह पहाड़ी सिर्फ़ पत्थरों से बनी नहीं है, यह समय, विश्वास, कला और मानवीय श्रद्धा की जीवंत गाथा है। छबिमुरा–इतिहास, कल्पना, धर्म और रहस्य के चार रंगों से रंगी एक अनुपम धरोहर है। आशा है, एक दिन इसका रहस्य शोध की रोशनी में पूरी तरह उजागर होगा।

विश्व पर्यावरण दिवस

बिपाशा सरकार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। इसी जीवन के आधार को हम मनाते हैं। यह हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। महात्मा गाँधी ने कहा था, "पृथ्वी मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन सभी मनुष्य के लालच को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है।"

जब हम अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए लालच की तरफ मुड़ते हैं, तो पूरी दुनिया और पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचता है। तब महात्मा गाँधी ने कहा था कि हम अपनी जरूरत को सीमित करके पर्यावरण के नुकसान को सीमित कर सकते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस का उद्देश्य दुनिया भर के लोगों को पर्यावरण के बारे में जागरूक किया जाए और कार्यवाही को बढ़ावा दे। यह दुनिया भर के 150 देशों में मनाया जाता है। 2025 के विश्व पर्यावरण दिवस का थीम है: "Putting an End to Plastic Pollution" इस वर्ष पर्यावरण दिवस UNEP (United Nations Environment Programme) के नेतृत्व में Beat Plastic Pollution प्रोग्राम के अभियान का पूरक है, जिसका उद्देश्य विश्व भर के राष्ट्रों को टिकाऊ समाधान अपनाने और बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है। Beat Plastic Pollution अभियान के अंतर्गत प्लास्टिक को कम करके उसकी जगह दूसरे चीजों का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस वर्ष 2025 का मेजबान देश कोरिया गणराज्य है। इस देश का जेजू प्रांत इस समारोह का केंद्र होगा। यह जेजू प्रांत बहुत ही सुंदर द्वीप है। जो अपनी जीवन पद्धति के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रांत ने यह संकल्प लिया है कि वह 2040 तक प्लास्टिक को पूरी तरह से समाप्त कर देगा। यह एक निर्णायक कदम उठाया गया है।

हम विश्व पर्यावरण दिवस के इतिहास के बारे में भी समझना होगा। इसकी स्थापना 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के दौरान की गई थी। इस कार्यक्रम के बाद विश्व पर्यावरण की जो अवधारणा है वो देखने को मिली। बाद में उसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा में आधिकारिक तौर पर 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में नामित किया। उसके बाद, पहला विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 1973 को मनाया गया था, जिसकी थीम 'केवल एक पृथ्वी' (Only one Earth) थी। कई सम्मेलन हुए जिसमें प्रमुख सम्मेलन हैं-

स्टॉकहोम घोषणा (1972)- स्वीडन के स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में अपनाई गई यह एक ऐतिहासिक 'घोषणा' है। इसमें 16 जून 1972 को हस्ताक्षर हुए थे। इसमें वैश्विक पर्यावरणीय शासन और सतत विकास के सिद्धांतों की रूपरेखा दी गई है। दुनियाभर में जो नियम होंगे उसे कैसे संचालित करेंगे। इस कार्यक्रम में तय किया गया था पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जाए। इस सम्मेलन में 122 देशों ने भाग लिया था।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) - इसकी स्थापना 5 जून 1972 को हुई थी। यह एक प्रमुख वैश्विक पर्यावरण संगठन है जो संयुक्त राष्ट्र संरक्षण और सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत होता है जो पर्यावरण से संबंधित कार्य को करता है। इसका उद्देश्य वैश्विक पर्यावरण एजेंडा विकसित करना, सतत विकास को बढ़ावा देना और विश्वभर में पर्यावरण संरक्षण के लिए एक आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना है। यह पर्यावरण संबंधी नीतियों को संचालित कर एक स्वस्थ पर्यावरण के लिए प्रयास करता है। UNEP द्वारा संचालित कुछ प्रमुख वैश्विक अभियानों में बीट पॉल्यूशन,

UN75, विश्व पर्यावरण दिवस और वाइल्ड फॉर लाइफ शामिल हैं जो पर्यावरण जागरूकता और संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।

भारत में पर्यावरण से संबंधित कानून और संगठनः

वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 - यह अधिनियम जंगली जानवरों और पौधों की विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण उनके विनियमन एवं नियंत्रण के लिए एक कानूनी ढाँचा प्रदान करता है। इस अधिनियम के तहत उन पौधों और जानवरों की सूची भी तैयार की जाती है जिन्हें सरकार द्वारा विभिन्न स्तरों पर सुरक्षा और निगरानी प्रदान की जाती है। वन्य जीव अधिनियम ने CITES (जंगली जंतु और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर समझौता) में भारत के समझौते को सफल बना दिया था।

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 - यह अधिनियम पर्यावरण सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण अधिनियम है। पर्यावरण का अध्ययन, योजना और कार्यान्वयन के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है। इसके अलावा, यह पर्यावरण को खतरे में डालने वाली स्थितियों के लिए त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया की प्रणाली निर्धारित करता है। EPA का अधिनियम जून 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित "मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन" के परिणामस्वरूप लिया गया था, ताकि स्टॉकहोम सम्मेलन में निर्धारित उद्देश्यों को देश में प्रभावी रुप से लागू किया जा सके।

ग्लोबल टाइगर फोरम: भारत सरकार ने इसकी शुरुआत की है। इसकी स्थापना बाघों की रक्षा के लिए वैश्विक अभियान चलाने हेतु इच्छुक देशों के सदस्यों के साथ की गई है। इसका गठन 1993 में नई दिल्ली में भारत में बाघों के संरक्षण पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की सिफारिशों पर किया गया था।

नेचर पत्रिका में वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण को लेकर एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण के मामले में भारत का

पाँचवा स्थान है। भारत सालाना 5.8 मिलियन टन प्लास्टिक जलाता है और 3.5 मिलियन टन प्लास्टिक मलवे को पर्यावरण में छोड़ता है। कुल योगदान 9.3 मिलियन है, जो पिछले वर्षों से काफी अधिक है। हम भारतवासियों को इस ओर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे पर्यावरण को दूषित होने से बचाया सके।

अंतर्राष्ट्रीय उपाय: अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक बाध्यकारी प्लास्टिक संधि करने का प्रयास किया गया है। इस संधि को पेरिस समझौते के बाद से सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरण समझौते के रूप में देखा जा सकता है। इस संधि को लेकर विपरीत विचार भी देखने को मिल रहे हैं। जीवाश्म ईंधन उत्पादन देश और उद्योग समूह प्लास्टिक प्रदूषण को अपशिष्ट प्रबंधन का मुद्दा मानते हैं। दूसरी ओर यूरोपीय संघ और अफ्रीका देश एकल उपयोग वाले प्लास्टिक को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने और उत्पादन पर अंकुश लगाने की वकालत करते हैं। भारत में भी प्लास्टिक को कम करने पर काम हो रहा है पर वो काफी नहीं है। हम सबको कोशिश करनी होगी कि प्लास्टिक से दूर रहें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा गृह-पत्रिका 'नागकेसर' के उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु कार्यालय को पुरस्कृत किया गया

विशाखापत्तनम यानी वाइजाग की यात्रा - एक अद्‌वितीय अनुभव

मणिकांत रॉय

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत अपनी विविधताओं के लिए विश्व प्रसिद्‌ध है । यहाँ हर राज्य, हर नगर, हर गाँव अपनी एक अलग सांस्कृतिक, प्राकृतिक और ऐतिहासिक पहचान लिए हुए है । दक्षिण भारत के राज्य आंध्र प्रदेश का विशाखापत्तनम यानी वाइजाग, अपने प्राकृतिक सौंदर्य, समुद्र तटों, पर्वतीय क्षेत्रों, और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्‌ध है । साथ ही यह "पूर्वी तट का मोती" एवं “जहाज निर्माण राजधानी” के रूप में जाना जाता है, जहाँ प्राकृतिक आकर्षणों के साथ-साथ समृद्‌ध वाणिज्यिक और औद्‌योगिक परिदृश्य भी मौजूद है । यह भारत के प्राचीन बंदरगाह शहरों में से एक है, मेरी वाइजाग और उसके आस-पास के क्षेत्रों - खासकर अराकु घाटी की यात्रा मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव रही । इस यात्रा के दौरान मैंने प्रकृति की खूबसूरती से लेकर भारतीय नौसेना की बहादुरी तक सब कुछ महसूस किया।

ट्रेन से अराकु घाटी की यात्रा: सुरंगों के बीच से गुजरता सफरः वाइजाग से अराकु घाटी की यात्रा की शुरुआत मैंने ट्रेन से की। यह सफर कई मायनों में अद्‌भुत और रोमांचकारी था । ट्रेन ने जैसे ही शहर की चकाचौंध छोड़ कर पहाड़ों की ओर रुख किया, दृश्य बदल गए । रास्ते में कई सुरंगें आईं, जो पहाड़ों के अंदर से गुजरती थीं । हर बार सुरंग में जाते वक्त अंधेरा होता और बाहर निकलते ही उजाले की चमक होती, यह परिवर्तन मन को एक रोमांचित करता था। ट्रेन के बाहर फैला हरा-भरा जंगल, ऊँचे-नीचे पहाड़, ठंडी हवा, और दूर-दूर तक फैले खेत मेरे मन को तरोताजा कर रहे थे । इन प्राकृतिक नजारों ने मेरी आत्मा को शांति और सुकून दिया । वहीं, रास्ते में देखे गए मसाले

के बागान, विशेष रूप से काली मिर्च के पौधे, मेरी यात्रा के बड़े आकर्षण थे ।

काली मिर्च के बागान और उसका ऐतिहासिक महत्वः काली मिर्च, जिसे प्राचीन भारत में 'ब्लैक गोल्ड' कहा जाता था, अपने आप में एक इतिहास की कहानी है । यह मसाला भारत की प्राचीन सभ्यताओं से लेकर मध्यकालीन व्यापार मार्गों तक की अहमियत को दर्शाता है । यूरोप के बाजारों तक पहुँचने वाली इस काली मिर्च ने भारत की आर्थिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूती दी।

मैंने जब उन पौधों को देखा और उन्हें छुआ, तो लगा कि मैं उस इतिहास के एक हिस्से को महसूस कर रहा हूँ । यह अनुभव मेरे लिए सिर्फ एक प्राकृतिक दृश्य देखने से कहीं अधिक था - यह मेरी जड़ों से जुड़ने जैसा था । काली मिर्च की खुशबू और उसकी हरियाली ने मेरे मन को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

आदिवासी जीवन की झलक: अराकु घाटी की सांस्कृतिक विरासतः अराकु घाटी के गहरे जंगलों और पहाड़ों के बीच बसे " कोंडा डोरा, बगाता, गबादा" इत्यादि आदिवासी समुदाय की जीवनशैली, उनकी संस्कृति, और परंपराएं मेरी यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पहलू था । इन आदिवासियों की सादगी, उनकी पारंपरिक वेशभूषा, और उनके रीति-रिवाज मुझे भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि का परिचय देते हैं। यहाँ के जनजातीय लोग अपनी परंपराओं और कलाओं को बेहद प्यार और सम्मान के साथ निभाते हैं। उनके लोकगीत, नृत्य, और हस्तशिल्प की वस्तुएं उनके सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती हैं। मैंने उनके द्वारा बनाए गए रंग-बिरंगे वस्त्र, हस्तशिल्प और लकड़ी के बने उपकरण देखे। उनके त्योहार और पारंपरिक उत्सवों में उनका जीवन कितना रंगीन और उत्साहपूर्ण होता है, यह देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया। इस सम्बन्ध में आंध्रप्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा 1996 में स्थापित, जनजातीय संग्रहालय अराकु आंध्रप्रदेश की सुंदर

अराकु घाटी में बसा एक सांस्कृतिक रत्न है । यह संग्रहालय पूर्वी घाट की स्वदेशी जनजातियों की समृद्ध परंपराओं और जीवन शैली की एक गहरी झलक प्रस्तुत करता है।

अराकु घाटी के आदिवासी लोग प्रकृति के बेहद करीब रहते हैं। उनका जीवन पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। वे जंगल की उपज से अपने भोजन, औषधि और वस्त्र बनाते हैं, यह आदिवासी समुदाय के लोग कॉफी के पौधे लगाते हैं, कॉफी की देखभाल करते हैं, कॉफी चेरी तोड़ते हैं, और फिर कॉफी को तैयार करते हैं। अराकु घाटी में उत्पादित कॉफी को अराकू वैली कॉफ़ी के नाम से जाना जाता है, जो कि एक जैविक ब्रांड है और दुनिया भर में लोकप्रिय है,.साथ हीं अराकू घाटी में कॉफी की खेती के साथ-साथ काली मिर्च की खेती भी की जाती है, जो कॉफी के बागानों के अंदर अंतर-फसल के रूप में उगायी जाती है। इस जीवनशैली ने मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि किस तरह प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

बोर्रा गुफाएं: प्रकृति की अद्भुत संरचना- अराकु घाटी की बोर्रा गुफाएं प्रकृति की एक अनमोल देन है। इन गुफाओं की विशालता और चट्टानी संरचनाएं देख कर मैं दंग रह गया। गुफाओं के अंदर की ठंडी और शांत हवा, चमकती हुई चट्टानों की झिलमिलाहट और गुफाओं की गूँजती हुई आवाजें, अनुभव को और भी रोमांचक बनाती हैं ।

यहाँ की गुफा संरचनाएं कई लाख वर्षों की प्राकृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं। मेरे लिए यह गुफाएं प्रकृति की शक्ति और सौंदर्य का परिचायक थीं। गुफाओं के अंदर चलना, उनके इतिहास को समझना, और उनके भूगर्भीय महत्व को महसूस करना एक सीख देने वाला अनुभव था।

कैलाशगिरी की चोटी से बंगाल की खाड़ी का मनमोहक दृश्यः कैलाशगिरी, जो एक ऊंची चोटी पर स्थित है, वहाँ पहुँचते ही मैं उस

विशालता और सुंदरता का हिस्सा बन गया जो बहुत कम लोगों को देखने को मिलती है। यहाँ से बंगाल की खाड़ी का नजारा अनोखा और मंत्रमुग्ध करने वाला था। समुद्र की नीली लहरें दूर तक फैली हुई थीं, जो सूरज की किरणों के साथ चमक रहीं थीं। आसपास के हरे-भरे पर्वत, शांत समुद्र और खुला आसमान मिलकर एक चित्र की तरह नजर आ रहे थे। यह मनोरम दृश्य मेरी अंतरात्मा को छू गया। यहाँ की हवा में ताजगी थी और वातावरण में अलौकिक शांति। कैलाशगिरी की चोटी पर बने मंदिर जिसमें हिन्दू आराध्य्य देवता शिव एवं पार्वती की अत्यंत मनमोहक प्रतिमा स्थापित है| यहाँ की खूबसूरत मूर्तियाँ, बाग़ीचे, और पर्यटक सुविधाएँ स्थान की गरिमा को बढ़ाती हैं और साथ ही यात्रा को और यादगार बनाते हैं।

राम-कृष्ण समुद्र तट और भारतीय नौसेना का गौरवः वाईजाग के राम-कृष्ण समुद्र तट पर मुझे भारतीय नौसेना की बहादुरी और समर्पण का जीवंत अनुभव मिला। यहाँ प्रदर्शित आईएनएस कुरुसुरा पनडुब्बी संग्रहालय को भी देखने का अवसर मिला यह एक सोवियत निर्मित आई-641 श्रेणी की पनडुब्बी है, जो 1969 से 2001 तक भारतीय नौसेना में सेवा में थी। पनडुब्बी जो समुद्र के भीतर बंद एक सीमित स्थान पर रहकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है। पनडुब्बी जैसे उपकरण और विशाल जहाज की संरचना देखकर मैं उस कठिनाई और साहस को समझ पाया जो नौसैनिक अधिकारी महसूस करते हैं।

यह प्रदर्शनी नौसेना के जवानों के अदम्य साहस, अनुशासन और देशभक्ति का प्रतीक थी। समुद्र के गहरे पानी में एक प्रकार से कैद रहना, लंबी यात्राएं करना और किसी भी खतरे का सामना करना, यह सब एक सामान्य इंसान के लिए मुश्किल हो सकता है। लेकिन नौसेना के ये बहादुर अधिकारी अपने देश की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। यह अकल्पनीय अनुभव मेरे मन में गहरा सम्मान और गर्व लेकर आया।

स्थानीय भोजन का स्वादः अराकु घाटी की यात्रा में स्थानीय भोजन का अपना ही अलग महत्व था। खासकर बाँस के चिकन का स्वाद तो आज भी मेरे मन में ताजा है। यह व्यंजन आदिवासी जनजातियों की पारंपरिक रसोई का हिस्सा है, जहाँ चिकन को बाँस के अंदर मसालों के साथ पकाया जाता है, जो खाने में काफी लजीज होता है। इसके अलावा अराकू में जो मुरमुरे का मिक्सच(र) मिलता है, वह एक प्रकार का मसालेदार, कुरकुरा और स्वादिष्ट नाश्ता है जिसे स्थानीय लोग बड़े ही पारंपरिक तरीके से बनाते हैं।

इन व्यंजनों का स्वाद इतना समृद्ध और लाजवाब था, कि एक बार खाने के बाद उसकी यादें बार-बार मन को लुभाती रहीं। बाँस की खुशबू और मसालों की महक ने भोजन को और भी स्वादिष्ट बना दिया था। मैंने महसूस किया कि यहाँ के भोजन में न केवल स्वाद, बल्कि सांस्कृतिक इतिहास और परंपराओं की खुशबू भी बसती है।

खिलौना ट्रेन की मनोरम सवारीः कैलाशगिरी की ऊँचाई पर चलने वाली खिलौना ट्रेन की सवारी मेरी यात्रा का एक और यादगार अनुभव था। यह ट्रेन पहाड़ों के रास्ते-रास्ते चलती है और यात्रियों को आसपास के प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने का अवसर देती है। ट्रेन की धीमी गति और आसपास की प्राकृतिक सुंदरता ने इस यात्रा को और भी मधुर बना दिया। बंगाल की खाड़ी की विशालता, नीला आसमान और पहाड़ों की हरियाली एक साथ मेरे सामने थी। इस यात्रा ने मुझे प्रकृति के और करीब ला दिया। मैंने विशाखापत्तनम की यात्रा का निर्णय कुछ समय पहले लिया था, जब एक मित्र ने मुझे इस शहर के बारे में बताया था। वह बताता था कि इस शहर की सुंदरता और शांति अतुलनीय है। मैंने इंटरनेट पर शोध किया और पाया कि यहाँ के प्रमुख पर्यटक स्थल जैसे कपालेश्वर मंदिर, रामकृष्ण बीच, कलिंग पट्टनम आदि काफी प्रसिद्ध हैं। विशाखापत्तनम पहुँचते ही मुझे यहाँ की हवा में ताजगी का अहसास हुआ। यह शहर समुद्र के पास स्थित

होने के कारण हमेशा ठंडा और ताजगी से भरा रहता है। यहाँ के लोग बहुत ही मिलनसार और मित्रवत हैं। मैंने स्टेशन से बाहर आकर ऑटो लिया और सीधे होटल की ओर बढ़ा।

वाइजाग यात्रा जिसकी जीवन पर्यन्त मेरे मन में अमिट याद रहेगीः
वाइजाग और अराकु घाटी की यह यात्रा मेरे लिए केवल एक पर्यटन नहीं थी, बल्कि एक ऐसा अनुभव था जिसने मुझे प्रकृति, संस्कृति और इतिहास की गहराइयों से परिचित करवाया। ट्रेन की सुरंगों से गुजरते हुए, आदिवासी जीवन के रंग-बिरंगे पहलुओं को देखते हुए, काली मिर्च के बागानों की खुशबू महसूस करते हुए, और भारतीय नौसेना के साहस को समझते हुए मैंने यह जाना कि भारत की विविधता और समृद्धि अनमोल है।

यह यात्रा मुझे जीवन में प्रकृति के महत्व, सांस्कृतिक विरासत की महत्ता, और देशभक्ति की भावना का एहसास कराती है । वाइजाग और अराकु घाटी की खूबसूरती, वहाँ के लोगों की आत्मीयता, और उनके रीति-रिवाज मेरी यादों में सदैव जीवित रहेंगे।

मेरी विशाखापत्तनम यात्रा ने मुझे न केवल इस शहर की सुंदरता और ऐतिहासिक धरोहर से परिचित कराया, बल्कि इसने मुझे भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर भी दिया। यहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण, सुंदर समुद्र तट, प्राचीन गुफाएँ और ऐतिहासिक स्थल, सभी मिलकर एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं। मैं इस यात्रा से बहुत खुश और संतुष्ट हूँ और भविष्य में फिर यहाँ आने की योजना बनाऊँगा। अगर आप भी एक शांति और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर स्थान पर यात्रा करना चाहते हैं, तो विशाखापत्तनम एक बेहतरीन विकल्प है।

ओडिशा भ्रमणः एक मनोरम स्मृति

मन्नु कुमार सिंह
लेखापरीक्षक

मैंने गत वर्ष "सम्पूर्ण भारत यात्रा रियायत अवकाश" का उपभोग करते हुए ओडिशा (खासकर पुरी एवं भुवनेश्वर) भ्रमण के लिए योजना बनायी। इस संबंध में मेरा पूर्वानुमान था, कि यह यात्रा एक साधारण यात्रा की भाँति ही रहेगी किन्तु मेरे लिए यह यात्रा एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक अनुभव से परिपूर्ण रही। मेरे इस अनुभव में ऐसा कोई एहसास नहीं है। वो मोड़ जब आप यात्रा में निकलने के उपरांत भी हर पल अपने घर जाने का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं, लेकिन एक लंबी-आधी यात्रा के बाद अपने आखिरी पलों से चिपके रहते हैं। कम से कम इतना कड़वामीठा तो ज़रूर है। मुझे सच में समझ नहीं आ रहा कि मैं इसे कैसे बयां करूँ। इसमें थोड़ी हताशा, थोड़ा चिंतन, थोड़ी आशा, थोड़ी सौदेबाजी और थोड़ी उदासी है। इस संबंध में मैं अपनी यात्रा पर अपने अनुभव को आपसे साझा करना चाहूँगा, जहाँ मैंने अपने जीवन में अपनी इस एक और नई यात्रा के साथ एक नए अनुभव को महसूस किया है।

ओड़िशा, जिसे पहले उड़ीसा कहा जाता था, भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक राज्य है। इसकी राजधानी भुवनेश्वर है, और यह बंगाल की खाड़ी के निकट है। ओडिशा का क्षेत्रफल लगभग 1,55,707 वर्ग किलोमीटर है और यह जनसंख्या के हिसाब से भारत के प्रमुख राज्यों में शामिल है। इसकी सीमाएं पश्चिम बंगाल, झारखंड, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश से मिलती हैं। ओडिशा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। यह कलिंग साम्राज्य का हिस्सा भी रहा है। सम्राट अशोक ने 261 ईसा पूर्व में यहीं कलिंग युद्ध लड़ा था, जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी थी। इस युद्ध के बाद उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया और अहिंसा के मार्ग पर चलने लगे। ओडिशा का इतिहास मंदिरों,

गुफाओं, राजवंशों और बौद्ध धरोहरों से भरा पड़ा है। यह भूमि शैव, वैष्णव और बौद्ध मतों का प्रमुख केंद्र रही है।

यात्रा की शुरुआत: मेरी ओडिशा यात्रा की शुरुआत यहाँ की राजधानी भुवनेश्वर से हुई। यह शहर न केवल आधुनिकता का प्रतीक है, बल्कि इसे 'मंदिरों का शहर' भी कहा जाता है। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में लिंगराज मंदिर, राजरानी मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर शामिल हैं। लिंगराज मंदिर की वास्तुकला कटक शैली का अद्भुत उदाहरण है, इस मंदिर के प्रांगण मे लिंगराज मंदिर के साथ-साथ अनेक छोटे-छोटे मंदिरों का भी निर्माण किया गया है, जिसे देखकर मैं बिल्कुल हीं आश्चर्यचकित हो गया। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, और हजारों के तादाद में भक्त यहाँ दर्शन एवं मान्यता के अनुसार अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए पूजा अर्चना करने आते हैं। इस मंदिर में प्रवेश करने के उपरांत मैंने एक अलौकिक शक्ति को महसूस किया जो शब्दों में बयाँ कर पाना मुश्किल है। इसके अलावा भुवनेश्वर में स्थित उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएं भी बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ प्राचीन जैन गुफाएं हैं, और यहाँ की शिल्पकला अद्भुत है। यहाँ मैंने देखा कि पहाड़ी के ऊपर चट्टानों मे अनेकों छोटी-छोटी गुफाएँ हैं। इसके बारे में कुछ लोग बातें कर रहे थे कि प्राचीन काल में तपस्वी इन गुफाओं का प्रयोग यहाँ तपस्या करने हेतु करते थे। साथ हीं इन पहाड़ी चट्टानों पर अनेकों लंगूर, बंदर एवं विभिन्न प्रजातियों के पशु-पक्षियों एवं छोटे-छोटे वन्यजीवों का भी निवास स्थान है।

पुरी स्थित जगन्नाथ प्रभु के मंदिर दर्शन: पुरी भुवनेश्वर से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो भगवान श्री जगन्नाथ की नगरी के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। जगन्नाथ मंदिर हिंदू धर्म के चार धामों में से एक है। यहाँ भगवान श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र और माता सुभद्रा की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ हर वर्ष आयोजित होने वाली रथ यात्रा दुनियाभर के श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करती है।

इस मंदिर के ध्वज के बारे में एक अति प्रसिद्‌ध मान्यता है कि यह ध्वज पवन के विपरीत दिशा में लहराता है। साथ ही मूर्तियों को लेकर एक मान्यता है कि इनका निर्माण भगवान विश्वकर्मा के द्‌वारा किया गया है जिसे वे पूर्ण आकार न दे सके। जगन्नाथ मंदिर को लेकर और भी रहस्यों से भरी कई सारी मान्यतायें प्रचलित हैं। इन्हीं जिज्ञासाओं को लेकर कई पर्यटक यहाँ जगन्नाथ प्रभु के दर्शन को आते रहते हैं।

इस मंदिर के समीप पुरी में समुद्र तट का भी अपना एक अलग ही आकर्षण है। शाम के समय समुद्र की लहरें और सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। पर्यटकों के लिए यह एक अत्यंत मनोरंजन का साधन है, एवं समुद्र तट पर मौजूद ऊँट एवं घोड़े की सवारी करते बच्चे एवं समुद्री लहरों के साथ बच्चों को खेलते देखना मन को पुन: अपने बचपन की ओर लौटने को प्रेरित करती हैं। साथ ही खान-पान हेतु यहाँ का भोजन स्वादिष्ट, पौष्टिक और काफी लजीज होता है। यहाँ हर त्योहार के साथ कोई न कोई विशेष व्यंजन जुड़ा होता है। यहाँ के प्रमुख व्यंजनों में शामिल हैं:

- दालमा - दाल और सब्जियों का मिश्रण
- पूखा - चावल के पानी में भिगोकर खाया जाने वाला व्यंजन
- चेंचड़ा- साग, माछ-भात, मछली और चावल
- छेना, पोड़ा, रसगुल्ला - ओडिशा की प्रसिद्‌ध मिठाइयाँ

कोणार्क का सूर्य मंदिर: कोणार्क का सूर्य मंदिर पुरी से थोड़ी दूरी पर स्थित है। यह मंदिर 13वीं शताब्दी में बना था और इसे 'ब्लैक पगोडा' के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर एक विशाल रथ के रूप में निर्मित है, जिसमें बारह जोड़ी पहिए और सात घोड़े हैं। यह भारत की स्थापत्य कला का अति उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है जो यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में भी शामिल है। वर्तमान मे भारतीय मुद्रा में प्रचलित 10 रुपए के नोटों में कोणार्क के सूर्य मंदिर के रथ के पहियों

के चिन्ह का इस्तेमाल किया गया है। इस मंदिर की अद्भुत वास्तुकला भारतीय समय सीमा को प्रदर्शित करती है। इस रथ में चौबीस पहिये हैं जो समय के चौबीस घंटों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस मंदिर के बारे में यह भी कहा जाता है, कि यह मंदिर निर्माण के उपरांत अनेक आक्रमणों का सामना किया है इस कारण यह मंदिर काफी जगहों से खंडित हो गया है।

चिल्का झील: इस यात्रा में प्रकृति की गोद में बसी चिल्का झील का अनुभव अत्यंत खास रहा। यह भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है और पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान है। सर्दियों में यहाँ साइबेरिया से हजारों प्रवासी पक्षी आते हैं। साथ ही डॉल्फ़िन देखने के लिए यहाँ सतपाड़ा एक प्रमुख स्थान है। प्रत्येक वर्ष हजारों के तादाद में पर्यटक यहाँ प्रकृति का आनंद लेने आते हैं।

सिंहद्वार से शांति द्वार तक: धार्मिक और आध्यात्मिक यात्रा-

यह यात्रा केवल मंदिरों की यात्रा नहीं है, यह एक आध्यात्मिक अनुभूति है। यहाँ के मंदिरों में जहाँ भक्ति की भावना है, वहीं यहाँ के बौद्ध स्थल, धौली स्तूप, ललितगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि-शांति, ध्यान और बौद्ध दर्शन के प्रतीक हैं। पहाड़ी में स्थापित इन स्तूपों को देखने का आनंद ही अलग था। साथ ही इन पहाड़ियों से शहर एवं शहरों के मध्य से प्रवाहित नदियों का नजारा अति सुंदर प्रतीत एवं वो मध्यम-मध्यम चल रही हवा का आनद लेते हुए शाम व्यतीत करना अत्यंत आनंद से भर देता है और मन को एक अत्यंत आध्यात्मिक सुख प्रदान करता है।

हस्तशिल्प और लोक-कलाः यहाँ की लोक-कला और हस्तशिल्प कला विश्वप्रसिद्ध हैं। यहाँ की पटचित्र चित्रकला, सिल्वर फिलिग्री कार्य, सांभरपुरी साड़ियाँ, और धोखरा कला देश-विदेश में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी हैं। रघुराजपुर गाँव विशेष रूप से पटचित्र कलाकारों के गाँव के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ उनकी कला देखना और समझना अपने आप

में एक प्रेरणादायक अनुभव था। हस्तशिल्प के अलावा यहाँ समुद्र से प्राप्त होने वाले शंख, मोती एवं अनेकों प्रकार के समुद्री शिपरत्न भी पाए जाते हैं। इनका इस्तेमाल पूजा अर्चना एवं साज-सज्जा के लिए किया जाता है।

जनजातीय संस्कृतिःओडिशा की लगभग 22% जनसंख्या जनजातीय है। कोरापुट, कंधमाल, मयूरभंज, और नवरंगपुर जैसे जिलों में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं। जनजातीय संग्रहालय (Tribal Museum) में भी इनका समृद्ध इतिहास देखने को मिलता है। इनकी सांस्कृतिक विविधता, वेशभूषा, लोकनृत्य और जीवनशैली अद्वितीय है। ओड़िशा का छऊ नृत्य जिसे मयूरभंज छऊ के नाम से भी जाना जाता है इस नृत्यशैली में योद्धाओं की वेशभूषा में पुरुष नर्तक भाग लेते है एवं इस नृत्य में रामायण, महाभारत और स्थानीय लोककथाओं के दृश्यों का चित्रण किया जाता है | विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य को 2010 में यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया था |

त्योहार और परंपराएँ

रथ यात्रा - रथ यात्रा इस राज्य का सर्वप्रमुख त्योहार है, जो भगवान श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र और माता सुभद्रा को समर्पित है। इस उत्सव में मान्यता के अनुसार हर वर्ष आषाढ़ मास के दौरान भगवान श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र और माता सुभद्रा को तीन अलग-अलग रथों में बैठाकर पुरी स्थित मंदिर से गुँडिचा मंदिर तक ले जाया जाता है, जो उनकी मौसी का घर माना जाता है। यह यात्रा एकता और समानता का भी प्रतीक है, क्योंकि इस पर्व में प्रत्येक वर्ग के लोग बिना किसी भेद-भाव के भाग लेते हैं एवं सभी लोग आपस में मिलकर प्रभु के रथों को लंबी रस्सी का सहारा लेकर खींचते है, जो भगवान श्री जगन्नाथ की अपने भक्तों के प्रति प्रेम और कृपा को प्रदर्शित करती है।

इसके अलावे यहाँ मनाए जाने वाले अन्य प्रमुख त्योहारों में शामिल हैं:

- **दुर्गा पूजा**
- **कार्तिक पूर्णिमा** - खासकर बोइता बंदाना
- **मकर संक्रांति**
- **राज पर्व** - महिलाओं का त्योहार
- **धनु संक्रांति** - जिसमें विशेष नाटकीय आयोजन होता है

प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन स्थल

- **सिंहगढ़ जलप्रपात**
- **हीराकुंड बाँध** - एशिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बाँध
- **भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान** - मगरमच्छों का निवास
- **नंदन कानन ज़ूलॉजिकल पार्क** - सफेद बाघों का गढ़

यात्रा अनुभव: इस यात्रा मे मैंने अब तक सम्पूर्ण ओडिशा के पर्यटन स्थलों को बेहतर तरीकों से अन्वेषण करने से वंचित रह गया हूँ क्योंकि इस दरम्यान मैंने यह समझा कि इतने कम समय में इस स्थान के सम्पूर्णता को प्राप्त करना असंभव है। यह मेरे लिए केवल एक पर्यटन का अनुभव हीं नहीं था, बल्कि आत्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी परिपूर्ण कर देने वाली यात्रा थी। यहाँ के लोगों की सादगी, मेहमाननवाज़ी, और परंपराओं के प्रति उनकी श्रद्धा ने मुझे काफी प्रभावित किया। यह एक ऐसा राज्य है, जहाँ प्राचीनता और आधुनिकता, परंपरा और नवाचार, धर्म और प्रकृति - सभी का अद्भुत संगम है। यह यात्रा न केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत को समझने का एक अवसर थी, बल्कि स्वयं को जानने और जीवन के प्रति नई दृष्टि प्राप्त करने का भी अनुभव रहा। यदि आपने अभी तक ओडिशा की यात्रा नहीं की है, तो मैं पूरे मन से कहूँगा - एक बार ज़रूर जाइए । यह स्थान आपको समृद्ध बना देगा - आत्मा से भी, और अनुभवों से भी ।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के।

रोहित कुमार सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब मैं कक्षा सात में था तब एक प्रसिद्ध हिंदी कवि और शिक्षाविद शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित कविता “हम पंछी उन्मुक्त गगन के” पढ़ी थी। तब से लेकर आज कई वर्ष बीत गए लेकिन उस कविता की रचना आज भी मेरे जेहन के किसी एक कोने में पड़ी हुई है। *शिव मंगल सिंह 'सुमन'* द्वारा रचित यह कविता स्वतंत्रता, आत्मबल और स्वाभिमान का प्रतीक है। इस कविता में कवि ने पक्षियों के माध्यम से मनुष्य की स्वतंत्रता की आकांक्षा और स्वाभाविक अधिकार को अभिव्यक्त किया है। यह कविता उन पक्षियों की तरह मनुष्यों की कल्पना करती है जो खुले आकाश में उड़ते हैं, बंधनों से मुक्त होते हैं और अपनी मर्जी से जीवन जीते हैं। कवि कहते हैं कि जैसे पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रह सकते, वैसे ही स्वतंत्र आत्माएं भी किसी प्रकार के बंधन या गुलामी को स्वीकार नहीं करतीं। वे जब चाहे उड़ सकते हैं, जहाँ चाहे जा सकते हैं, और उन्हें किसी सीमा में बाँधना असंभव है। कविता स्वतंत्रता, आत्म-सम्मान और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा देती है। इस बात से यह अंदाज़ा तो लगाया ही जा सकता है कि शिवमंगल जी की यह कविता केवल पंछियों के लिए सटीक नहीं बैठती है। हमारी और आपकी ज़िंदगी भी कही ना कही इस कविता में पिरोयी हुई है। ऐसी ही एक कहानी है मेरे दोस्त सोहन की, जिससे मेरा और आपका जीवन भी प्रभावित होता है।

सोहन एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार से आता है। उसका जीवन बचपन से ही संघर्षों से भरा रहा है। पढ़ाई पूरी करने के बाद उसे सरकारी नौकरी मिल गई, लेकिन किस्मत ने एक अजीब खेल खेला। उसकी पोस्टिंग उसके घर से हज़ार किलोमीटर दूर एक छोटे, सुनसान कस्बे में हो गई। यह जगह न तो उसे भाती थी और न ही

वहाँ कोई जान-पहचान वाला था। वह अपने पीछे एक पूरा परिवार छोड़ आया था—उसके बूढ़े माँ-बाप, उसकी पत्नी नीलम और उसका तीन साल का बेटा आरव। वह जब भी फोन पर आरव की तोतली आवाज़ सुनता, दिल भीतर से काँप उठता। नीलम, जो एक स्कूल में शिक्षिका थी, को अपनी नौकरी छोड़ना मुश्किल था। उनका बेटा भी उसी शहर में स्कूल जाता था, और माता-पिता की बढ़ती उम्र को देखते हुए, उन्हें वहीं रुकना पड़ा। सोहन अकेला चला गया उस अनजाने शहर में—एक छोटा कमरा किराए पर लिया, और ज़िंदगी की गाड़ी फिर से पटरी पर लाने की कोशिश करने लगा।

शुरू में उसे लगा था कि कुछ सालों की बात होगी, फिर ट्रांसफर हो जाएगा। लेकिन धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि जिस विभाग में वह काम करता है, वहाँ ट्रांसफर की नीति बेहद कठोर है। ना कोई विकल्प, ना कोई सिफारिश—सब कुछ ठोस नियमों में जकड़ा हुआ दिन बीतते गए, फिर महीने और अब साल। सोहन की हर कोशिश असफल रही। उसने **स्पाउस ग्राउंड पर ट्रांसफर के लिए अर्जी दी**, सारे दस्तावेज़ संलग्न किए—नीलम की नियुक्ति पत्र, आरव की स्कूल डिटेल्स, मेडिकल दस्तावेज़ (माँ की दवाइयों के)—लेकिन विभाग से स्पष्ट तौर पर इनकार कर दिया गया: *"आपके केस में नीतिगत अपवाद नहीं किया जा सकता।"*

उसका दिल टूट गया। वह जानता था कि वह कोई विशेषाधिकार नहीं माँग रहा था, बस इतना चाहता था कि वह अपने परिवार के साथ रह सके। लेकिन उसकी ये साधारण सी इच्छा पूर्ण होनी भी अब असंभव सी लगने लगी थी।

सोहन का दिन दफ्तर की फाइलों में बीतता और रातें तन्हाई में। वह न तो काम में मन लगा पाता और न ही घर से भावनात्मक जुड़ाव महसूस कर पाता। अक्सर जब वह लैपटॉप पर कुछ टाइप कर

रहा होता, उसकी आँखें भर आतीं। उसे लगता जैसे वह दो दुनियाओं के बीच लटका हुआ है– न यहाँ पूरी तरह है, न वहाँ।

घर की आर्थिक स्थिति भी ऐसी नहीं थी कि वह नौकरी छोड़ सके। उसका वेतन ही पूरे परिवार की रीढ़ था। बूढ़े माँ-बाप की दवाइयाँ, बच्चे की स्कूल फीस, और पत्नी की ज़रूरतें सब उसी पर निर्भर थे। कई बार उसके मन में आया कि वह इस्तीफा दे दे, कोई और काम कर ले। लेकिन सच्चाई यह थी कि नई नौकरी पाने की संभावनाएँ बहुत कम थीं, और वह जोखिम नहीं ले सकता था।

इस सबके बीच उसकी खुद का मनोबल धीरे-धीरे टूट रहा था। उसे नींद नहीं आती थी, कभी-कभी खाना भी छोड़ देता था। मगर किसी से कह नहीं सकता था क्योंकि सब उसे “भाग्यशाली” मानते थे कि उसे एक स्थायी सरकारी नौकरी मिली है।

नीलम भी हर रोज़ वीडियो कॉल पर उसे हिम्मत देती, लेकिन उसकी आँखों में भी उदासी साफ़ झलकती थी। वह अकेले बच्चे की परवरिश कर रही थी और हर रोज़ सोहन को याद करके खुद को समझाती थी कि "ये फासला एक दिन खत्म होगा।"

एक दिन आरव ने वीडियो कॉल पर पूछा, “पापा, आप मेरे बर्थडे पर आएंगे ना?” सोहन के पास कोई जवाब नहीं था। उसकी आँखें भर आईं, और उसने सिर्फ सिर हिलाकर हामी भर दी। लेकिन वह जानता था – ऑफिस से छुट्टी मिलना नामुमकिन था।

उसे लगने लगा कि वह धीरे-धीरे अपने और प्रियजनों के बीच में एक अदृश्य दीवार खींच रहा है। उसका परिवार भावनात्मक रूप से दूर हो रहा था।

उसका दिमाग कई बार यह सोचता कि क्या उसकी ज़िंदगी में कोई मोड़ आएगा? क्या उसे कभी अपने परिवार के साथ रहने का अवसर मिलेगा? क्या वह सिर्फ एक “कर्मचारी” बनकर ही रह जाएगा – एक इंसान नहीं?

समय बीतता गया। सोहन की हालत पहले से भी बदतर हो गई। उसके चेहरे की मुस्कान गायब हो चुकी थी। दफ्तर में उसका प्रदर्शन घटने लगा, लेकिन वह फिर भी जैसे-तैसे टिके रहने की कोशिश करता रहा।

एक शाम जब वह कमरे में अकेला बैठा था, उसकी माँ का फोन आया। माँ ने कहा, “बेटा, हम तो बूढ़े हैं, लेकिन तेरा बच्चा बड़ा हो रहा है। वो तुझे महसूस नहीं कर पा रहा। अपने पापा को वो बस स्क्रीन पर देखता है।”

सोहन फोन रखकर बहुत देर तक रोया। अब वह टूट चुका था, परंतु फिर भी मजबूर था। क्योंकि उसकी मजबूरी किसी एक इंसान की नहीं, एक पूरे परिवार की थी।

वह जानता था—वह अपने सपनों, अपनी इच्छाओं और अपने रिश्तों की कुर्बानी देकर जी रहा है। लेकिन उसकी नियति यही थी।
उस रात उसने अपनी डायरी में लिखा:
"मैं कहीं नहीं हूँ—न अपने घर में, न अपने काम में।
मैं बस ज़िम्मेदारियों का एक बोझ हूँ, जो मुस्कुराने की कोशिश करता हूँ। काश कोई रास्ता होता – जहाँ मैं अपने होने का मतलब ढूँढ़ पाता।" फिर वो चुपचाप रोशनी बंद करके लेट गया... अगले दिन फिर वही रूटीन, वही उदासी वही फासले।

निष्पादन के बाद निरीक्षण	-	inspection after execution
अंतिम आवक, प्रथम जावक	-	last in-first out
आवश्यक समझें	-	may deem necessary
वार्तातय संविदा	-	negotiated contract

कोलकाताः सिटी ऑफ जॉय

विप्रतीप दास
लेखापरीक्षक

कोलकाता जो "सिटी ऑफ जॉय" के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत के एक पूर्वोत्तर राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी है। 2001 से पहले यह शहर कलकत्ता के नाम से जाना जाता था। इस शहर की कुछ विशेषताओं के कारण इसे कुछ अन्य उपनामों से भी जाना जाता है जैसे आनंदमय शहर, भारत की सांस्कृतिक राजधानी, महलों का शहर, संग्रहालयों का शहर, पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार। कोलकाता की स्थापना ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधि जॉब चार्नोक ने 1690 में तीन गाँवों सुतनुति, गोविंदपुर एवं कालीकाता को एकत्रित करके कोलकाता की स्थापना की थी। उन्होंने वहाँ एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया था, जो शहर के विकास की शुरुआत थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस क्षेत्र को एक प्रमुख बंदरगाह शहर एवं बाद में ब्रिटिश भारत की राजधानी के रूप में विकसित किया था। हालाकि बंगाल में बढ़ती अशांति एवं विशेष रूप से 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद ब्रिटिश शासन के प्रति प्रतिरोध के कारण, वर्ष 1911 में राजधानी को कोलकाता से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया था।

कोलकाता की विरासत इसकी संस्कृति के तरह ही समृद्ध है। कोलकाता की दुर्गा पूजा को 2021 में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में अंकित किया गया है। कोलकाता का विक्टोरिया मेमोरियल, हावड़ा ब्रिज भी यूनेस्को विरासत स्थलों की सूची में शामिल है। इसके अलावा भी लगभग हर क्षेत्र में कोलकाता ने अपना योगदान दिया है जिनमें से कुछ क्षेत्र का उल्लेख किया जा रहा है।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान: कोलकाता भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख केंद्र रहा है जो राष्ट्रवादी गतिविधियों एवं क्रांतिकारी आंदोलनों का केंद्र रहा है। वर्ष 1857 में सिपाही मंगल पाण्डेय द्वारा कोलकाता के बैरकपुर में शुरू किये गये सिपाही विद्रोह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में इस शहर के नाम को गौरवान्वित करता है। हालांकि व्यापक समर्थन की कमी, अप्रभावी नेतृत्व, तथा ब्रिटिश सेना के बेहतर संसाधन और संगठन की वजह से ये विद्रोह उतना सफल नहीं हो पाया फिर भी इस घटना ने ब्रिटिश शासन को सोचने पर मजबूर कर दिया था। इस शहर ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा 1931 में कोलकाता में राष्ट्रीय ध्वज फहराने से लेकर बंगाल वॉल्यूंटियर्स के गठन जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं को भी देखा, जिसने उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन में इसकी भूमिका को मजबूत किया था। यह अनुशीलन समिति एवं युगांतर जैसे संगठनों के लिए एक प्रजनन स्थल था, जिन्होंने ब्रिटिश शासन को चुनौती देने के लिए शांतिपूर्ण एवं हिंसक दोनों तरह की रणनीति अपनाई थी। आज़ादी की लड़ाई के दौरान कोलकाता क्रांतिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण स्थल था एवं यहाँ के कैफ़े क्रांतिकारियों के लिए बैठक स्थल के रूप में काम करता थे, जहाँ वे आज़ादी की लड़ाई से जुड़े हुए महत्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा देने में कोलकाता के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। पूरे देश के साथ साथ कोलकाता में भी स्वदेशी आंदोलन के अंतर्गत ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार ने गति पकड़ी थी। कोलकाता में मजदूरों की हड़ताल, विशेष रूप से कपड़ा उद्योग एवं रेलवे में, ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए मजदूर वर्ग के समर्थन को प्रदर्शित किया था।

साहित्य में योगदान: - यह शहर अपनी साहित्यिक परंपरा के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ कई प्रसिद्ध लेखक रहते हैं एवं यह साहित्यिक

आंदोलनों का उद्गम स्थल रहा है जिसने भारतीय साहित्य को प्रभावित किया है। शहर की समृद्ध साहित्यिक विरासत का उदाहरण साहित्य में पहले गैर-यूरोपीय नोबेल पुरस्कार विजेता श्री रवींद्र नाथ ठाकुर जैसे व्यक्ति हैं। कोलकाता ने कविता एवं नाटक से लेकर उपन्यास एवं लघु कथाओं तक कई तरह की साहित्यिक विधाओं को बढ़ावा दिया है एवं महिला लेखकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित विविध दृष्टिकोणों को आवाज़ दी है। प्रकल्पना आंदोलन, जो एक द्विभाषी (बंगाली-अंग्रेजी) आंदोलन है एवं इसके जैसा और कई तरह के साहित्यिक आंदोलनों का उद्गम स्थल कोलकाता रहा है। कोलकाता की एक अनूठी विशेषता ट्राम बंगाली साहित्य में एक प्रमुख प्रतीक बन गई है, जो लेखकों के लेख में अक्सर देखा गया है। कोलकाता का कॉफी हाउस जो इस शहर के साहित्यकारों का एक अन्यतम बैठक स्थल है, वह भी इस शहर के साहित्य का एक अभिन्न अंग है। कोलकाता से जुड़े कुछ प्रमुख साहित्यकारों में श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, श्री माइकल मधुसूदन दत्त, श्री शरत चंद्र चट्टोपाध्याय और श्रीमती महाश्वेता देवी भी शामिल हैं। भारत के कुछ सबसे पुराने साहित्यिक संस्थानों एवं प्रकाशन गृहों का भी घर कोलकाता है जैसे रूपा पब्लिकेशन्स, जैको पब्लिशिंग हाउस, सीगल बुक्स, आनंद पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, कलम कागज एवं दे पब्लिशिंग, जिन्होंने देश के साहित्यिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में योगदान: - कोलकाता ने खुद को वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित किया है एवं विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसे भारत की विज्ञान राजधानी के रूप में मान्यता प्राप्त है। हाल ही में प्रकाशित नेचर इंडेक्स 2024 में कोलकाता की उच्च रैंकिंग वैश्विक वैज्ञानिक अनुसंधान में शहर की मजबूत स्थिति को दर्शाती है, इसके

शोध आउटपुट एडिनबर्ग, हेलसिंकी एवं जिनेवा जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय केंद्रों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। कोलकाता में कई प्रसिद्ध शोध संस्थान हैं, जिनमें इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस (IACS), साहा इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल बायोलॉजी शामिल हैं, जो वैज्ञानिक प्रगति को आगे बढ़ाने में सहायक रहे हैं। इस शहर ने विज्ञान के कुछ प्रमुख हस्तियों को जन्म दिया है, जैसे कि डॉ. सत्येंद्रनाथ बोस (बोस-आइंस्टीन सिद्धांत के लिए जाने जाते हैं), सर जगदीश चंद्र बोस (प्लांट फिजियोलॉजी में अपने काम के लिए प्रसिद्ध), एवं आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय (भारतीय रसायन विज्ञान में अग्रणी)। कोलकाता ने रसायन विज्ञान में भी विशेष ताकत दिखाई है, इस क्षेत्र में शहर की रैंकिंग वैश्विक स्तर पर 47वीं है, जिससे यह दुनिया भर में शीर्ष 50 में जगह बनाने वाला एकमात्र भारतीय शहर बन गया है। शहर का साइंस सिटी, एक बड़ा विज्ञान केंद्र जिसमें विज्ञान संग्रहालय, पार्क एवं सभागार हैं जो विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोलकाता ने वैश्विक वैज्ञानिक संगठनों के साथ सहयोग को बढ़ावा दिया है, जिससे विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान में अग्रणी के रूप में इसकी पहचान बनी है।

चलचित्र में योगदान: - कोलकाता ने, खास तौर पर अपने बंगाली चलचित्र उद्योग के माध्यम से, भारतीय सिनेमा में, खास तौर पर कलात्मक एवं साहित्यिक-प्रेरित कहानी कहने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 1947 में स्थापित कलकत्ता चलचित्र सोसाइटी ने विश्व सिनेमा को बढ़ावा देने एवं भारत में चलचित्र सोसाइटी आंदोलन शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह शहर का बंगाली चलचित्र अक्सर साहित्य से प्रेरणा लेता है, जो इसे भारत के अन्य चलचित्र निर्माण केंद्रों से अलग करता है। यह शहर दादा साहब फाल्के पुरस्कार विजेता श्री सत्यजीत रे, दादा साहब फाल्के पुरस्कार विजेता श्री मृणाल

सेन एवं श्री ऋत्विक घटक जैसे प्रसिद्ध चलचित्र निर्माताओं का आधार रहा है। कोलकाता में एक मजबूत चलचित्र सोसाइटी आंदोलन भी है एवं यह कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय चलचित्र महोत्सव की मेजबानी करता है। टॉलीगंज में स्थित बंगाली चलचित्र उद्योग, सामान्य संगीत सिनेमा के विपरीत, अपने अधिक कुलीन एवं कलात्मक दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। पहली बंगाली बोलती फ़िल्में कोलकाता में बनाई गई थीं, जिनमें लघु चलचित्र जमाई षष्ठी एवं पूर्ण लंबाई वाली फीचर देना पाओना शामिल हैं। यह शहर बंगाली चलचित्र उद्योग के अलावा बॉलीवुड चलचित्र उद्योग का भी पसंदीदा शहर है एवं इस संदर्भ में प्रसिद्ध अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन द्वारा अभिनीत फिल्म “पीकू” का नाम लेना चाहूंगा जिसकी अधिकांश फिल्मांकन कोलकाता में हुआ है। निष्कर्ष रूप में, भारतीय सिनेमा में कोलकाता का योगदान बहुआयामी है, जिसमें एक कलात्मक और साहित्यिक केंद्र के रूप में इसकी भूमिका दर्शाता है।

खेल में योगदान: - कोलकाता ने भारतीय खेलों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, खास तौर पर फुटबॉल, क्रिकेट, टेनिस तथा शतरंज जैसे अन्य खेलों में। फुटबॉल खेल की प्रति उन्माद के वजह से इस शहर को "भारतीय फुटबॉल का मक्का" भी कहा जाता है। 19वीं सदी के अंत में ब्रिटिश सैनिकों द्वारा फुटबॉल खेल की शुरुआत ने कोलकाता की फुटबॉल संस्कृति की नींव रखी, जिसमें मोहन बागान एवं ईस्ट बंगाल जैसे क्लबों ने प्रतिष्ठित दर्जा हासिल किया। कोलकाता ने कई फुटबॉल सितारे दिए हैं जिनमें पी.के. बनर्जी, चुन्नी गोस्वामी, सैलेन मन्ना एवं कई अन्य भी शामिल हैं। कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम ने 2017 फीफा अंडर-17 विश्व कप के फाइनल की मेजबानी की, जो खेल के क्षेत्र में कोलकाता के लिए एक और उपलब्धि है। कोलकाता में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान, पूर्व बीसीसीआई अध्यक्ष एवं आईसीसी पुरुष क्रिकेट समिति के अध्यक्ष श्री सौरभ गांगुली का घर

है, जिन्होंने भारत की क्रिकेट को एक अन्य ऊँचाई पर स्थापित किया है। ईडेन गार्डन कोलकाता में स्थित क्रिकेट के लिए एक प्रसिद्ध मैदान है और अतीत में यहाँ क्रिकेट विश्व कप मैचों का आयोजन किया गया है, जो भारतीय क्रिकेट के साथ-साथ विश्व क्रिकेट में इसकी क्षमता को दर्शाता है। दिब्येंदु बरुआ एवं सूर्य शेखर गांगुली जैसे ग्रैंडमास्टर्स ने शतरंज में कोलकाता की विरासत में योगदान दिया है। मिहिर सेन जो इंग्लिश चैनल तैरने वाले पहले एशियाई हैं, वे भी कोलकाता से सम्बन्धित हैं। कोलकाता ने खेलों के प्रति शहर की प्रशंसा को प्रदर्शित करते हुए एवं युवा एथलीटों को प्रेरित करने में खेल फिल्मों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अंतर्राष्ट्रीय खेल चलचित्र महोत्सव की मेजबानी की है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान: - कोलकाता ब्रिटिश काल से ही एक प्रसिद्ध व्यापार का केंद्र रहा है क्योंकि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कोलकाता को एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में स्थापित किया था। भारत के प्रमुख आर्थिक केंद्रों में से एक के रूप में कोलकाता की स्थिति इसके विनिर्माण उद्योगों, इसकी वित्तीय एवं व्यापारिक गतिविधियों के रूप में इसकी भूमिका में निहित है। यह मुद्रण, प्रकाशन एवं समाचार पत्र संचालन के साथ-साथ मनोरंजन के लिए भी एक प्रमुख केंद्र है। कोलकाता का पर्यटन कोलकाता के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। जूट संसाधन उद्योग के मामले में कोलकाता भारत का सबसे बड़ा केंद्र है। इंजीनियरिंग इस शहर का दूसरा प्रमुख उद्योग है। इसके अलावा, शहर की फैक्ट्रियाँ कई तरह की उपभोक्ता वस्तुओं जैसे खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ, वस्त्र, रसायन आदि का उत्पादन एवं वितरण करती है। विदेशी बैंकों का भी कोलकाता में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक आधार है। राज्य एवं राष्ट्रीय वाणिज्य मंडल भी कोलकाता में स्थित है। इस शहर के लगभग हर पाँच में से दो व्यक्ति व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, जो इस शहर की

व्यावसायिक क्षमता को दर्शाता है। अन्य महत्वपूर्ण व्यवसायों में सरकारी विभागों, वित्तीय संस्थानों, चिकित्सा एवं शैक्षणिक संस्थानों, एवं इन सभी संस्थाओं से जुड़े हुए अन्य कुछ सेवायें शामिल हैं।

पर्यटन में योगदान: - कोलकाता का समृद्ध इतिहास, विविध संस्कृति इसे पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बनाते हैं। शहर में कई ऐतिहासिक इमारतें, मंदिर एवं अन्य ऐतिहासिक स्थल हैं जैसे विक्टोरिया मेमोरियल, कालीघाट मंदिर, दक्षिणेश्वर मंदिर, फोर्ट विलियम आदि जो भारत के अतीत को जानने में रुचि रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। कोलकाता में शुरू हुई भारत की पहली ट्राम सेवा भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। भारतीय संग्रहालय जो भारत का सबसे बड़ा संग्रहालय एवं पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है वो भी कोलकाता में ही स्थित है। कोलकाता में कुछ अन्य छोटे संग्रहालय भी हैं जैसे रेल संग्रहालय, ट्राम संग्रहालय, नौसेना विमान संग्रहालय, फैनैटिक स्पोर्ट्स संग्रहालय, आशुतोष भारतीय कला संग्रहालय, नेताजी भवन, स्वामी विवेकानंद संग्रहालय, राज्य पुरातत्व संग्रहालय, ललित कला अकादमी, एशियाटिक सोसाइटी, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद संग्रहालय, मदर्स वैक्स संग्रहालय एवं पुलिस संग्रहालय। कुछ अन्य प्रतिष्ठित पर्यटन स्थल जैसे की जोरासांको ठाकुर बारी जो श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर का जन्म स्थान है, इतिहास से जुड़ा हुआ प्रिंसेप घाट, बिड़ला प्लेनेटोरियम जो एक वैज्ञानिक धरोहर है। रवींद्र सरोवर जिसे पक्षी प्रेमियों के स्वर्ग के रूप में जाना जाता है, इको पार्क के सात अजूबे, निक्को पार्क, कोलकाता की गंगा नदी के घाट आदि हैं।

यह शहर सिर्फ़ एक शहर नहीं है बल्कि इसे एक भावना के रूप में माना जा सकता है। कवि श्री रवींद्रनाथ ठाकुर का एक प्रसिद्ध कथन जो इस शहर की विविधता को दर्शाता है एवं जिसका मैं यहाँ उल्लेख करना चाहूँगा, वह है "कभी-कभी मैं खुद को कलकत्ता की सड़कों पर एक विदेशी के रूप में कल्पना करता हूँ, और केवल तब

मुझे एहसास होता है कि यहाँ देखने के लिए कितना कुछ है।” इसकी जीवंत सांस्कृतिक विरासत, समृद्ध इतिहास एक अद्वितीय, आकर्षक और जीवंत वातावरण का अनुभव कराता है। चुनौतियों का सामना करते हुए भी यह शहर गर्मजोशी, स्वतः स्फूर्ति, लचीलापन और जीवन के प्रति गहरी प्रशंसा की भावना बिखेरता है, जो इसे वास्तव में एक यादगार जगह बनाता है। संक्षेप में, कोलकाता वास्तव में अपने नाम "सिटी ऑफ जॉय" के अनुरूप है।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा 2025 के उद्घाटन समारोह के सुअवसर पर सक्षम प्राधिकारीगण दीप प्रज्वलित करते हुए

आत्म-अवलोकन

विशाल सिंह,
लेखापरीक्षक

आत्म अवलोकन अर्थात् स्वयं का निरीक्षण व स्वयं को जानना। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे मनुष्य स्वयं को बेहतर जान पाता है। यह मानव का स्वभाव रहा है कि वह सदैव दूसरों के गुण और दोष का अवलोकन करता है परन्तु विद्वानों का कहना है कि मनुष्य को खुद के गुण और दोष के बारें में विचार करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य अपनी गलतियों एवं दोष को धीरे-धीरे दूर कर सकता है। अगर संसार के सभी मनुष्य ऐसा करने लगे तो सोचिए हम एक ऐसा समाज एवं देश बना सकते हैं जहाँ बुराई एवं दोष का कोई नामोनिशान नहीं होगा। ऐसा करके ही मानव देश और समाज का सही विकास कर सकता है। अपनी बुराईयों से मुक्ति ही एक स्वच्छ समाज के निर्माण की शर्त है।

मानव शरीर ईश्वर की सर्वोतम कृति है। मनुष्य के पास ही वह शक्ति है, जिससे वह आत्म अवलोकन कर सकता है। ईश्वर ने मनुष्य में वह तार्किक शक्ति एवं मस्तिष्क दिया है जिसके सही उपयोग से सारे जीवित प्राणियों के लिए एक बेहतर दुनिया बना सकता है। इन सब कार्यों के लिए हृदय की शुद्धता सर्वोपरि है। चित्त शुद्ध होने पर मनुष्य में आत्म ज्ञान आता है। प्रायः महापुरूषों की प्रसिद्धि व सफलता के पीछे उनकी आत्म अवलोकन की भावना रही है। आत्म-अवलोकन का कोई समय, सीमा व स्थान निश्चित नहीं है। हर व्यक्ति अपने अनुसार आत्म अवलोकन कर सकता है और करना भी चाहिए।

आत्म-अवलोकन की कुछ विशेषताएं -

1) आत्म-अवलोकन का तात्पर्य है स्वयं का निरीक्षण करना और स्वयं को जानना।

2) यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपनी आदतों विचारों और भावनाओं के बारे में अधिक जागरुक बनाती है।
3) आत्म-अवलोकन से व्यक्ति अपने भीतर की कमियों और अच्छाइयों को पहचान कर और फिर उन पर काम करके खुद को बेहतर बना सकता है।
4) आत्म-अवलोकन एक ऐसा कौशल है जो व्यक्तिगत विकास और आत्म-सुधार के लिए आवश्यक है।

आज ज्यादातर व्यक्ति सब सुख-सुविधाएँ होते हुए भी खुश नहीं है मन अशांत है। इसका मूल कारण हम स्वयं ही है। जब हम स्वयं का आत्म-अवलोकन करने लगेंगे तो मन भी शांत होने लगेगा। यदि मन शांत हो तो जीवन सुखमय हो जाता है और मन अशांत हो तो मिलने वाली सफलताओं में भी पूरी खुशी नहीं मिलती। इसका सबसे बड़ा कारण है कि जब हमारा मन शांत होता है तो हम चीजों को सही रूप में देख पाते है। सहज और शांत मन से हम जीवन को जी सकते हैं। मन कि शांति के लिए कुछ छोटे कदम मददगार हो सकते हैं। इसमें सबसे पहला कदम है सकरात्मक सोच। अगर हम हर बात को सकारात्मक सोच के साथ देखते हैं तो जीवन की आधी समस्यायें दूर हो जाती हैं और मन को असीम शांति मिलती है।

दूसरों को जानना बुद्धिमानी है, स्वयं को पहचानना आत्मज्ञान है। स्वयं को जानकर व समझकर ही हम सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। आज हर व्यक्ति भाग रहा है, एक जगह से दूसरी जगह की ओर। व्यक्ति शायद स्वयं को खोज रहा है क्योंकि उसने स्वयं को खो दिया है। स्वयं के साथ संबंधो को तोड़ दिया है और अब उसे खोज रहा है। यदि हम अपने आस-पास हर व्यक्ति की तरफ ध्यान देंगे, तो तकरीबन सभी में यही बात नजर आयेगी। हर व्यक्ति स्वयं को भूलकर एक व्यर्थ की दौड़ में भागता चला जा रहा है। आज आवश्यकता

है स्वयं को समझने की, स्वयं को समझकर हम परमात्मा की अनुभूति कर सकते हैं। तमाम ऐसे लोग जिन्होंने जीवन में कुछ गौरवशाली कार्य किए हैं, वे सभी स्वयं के अंदर छिपे परमात्मा-बोध को समझने की बात करते हैं। परमात्मा की अनुभूति करने के पश्चात हमें भरपूर आत्मविश्वास व परमानंद की प्राप्ति होती है।

जब हम सोने जायें तो पूरे दिन पर प्रकाश डालते हुए देखें कि कौन-सी घटनायें या बात ने हमें व्याकुल किया है, उसके कारण को देखते हुए सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर सो जाना चाहिए। हम हमेशा यही सोचते हैं कि जो दूसरे लोग हमारी क्षमता योग्यता के बारे में बताते हैं, हम उसी पर भरोसा कर लेते हैं। परन्तु ये सत्य नहीं है। हमें चाहिए कि दूसरे जो हमारे बारे में क्या कहते है, उन्हें कहने दे पर हमारी आत्मा हमारे बारे में क्या कहती है वो ज्यादा महत्वपूर्ण है। हम कोई काम करते हैं, संभव है वह दूसरों को अच्छा न लगता हो। सबका अलग-अलग चितंन है, अलग-अलग नजरिया है। चिंतन की इतनी स्वतंत्रता और विविधता है कि कहीं किसी को बाँधा नहीं जा सकता।

आत्मविश्वास हमें शांति व शक्ति से जीने के लिए प्रेरित करता है। यहाँ शांति से तात्पर्य है मन की शांति। शांति के लिए जरूरी है इच्छाओं पर नियंत्रण करना। इसके साथ ही ईश्वर ने जो भी दिया है उसका धन्यवाद करना एवं उसमें आत्म-संतुष्टि का अनुभव करना। प्रतिदिन सुबह उठते ही सबसे पहले ईश्वर को याद करें या कुछ मिनट मेडिटेशन करें। इससे हमारे मन की शक्ति या दृढ़ संकल्प शक्ति बढ़ती है। इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और हम किसी भी चुनौती का सफलतापूर्वक समाधान करने में सक्षम हो जाते हैं। रात के सोते समय दिन का आकलन करने की भी आदत डालनी चाहिए।

हमें विद्यार्थियों में भी आत्म-अवलोकन की भावना का उदय करना चाहिए। इससे उनमें विवेक व स्मरण शक्ति का विकास होगा।

उनका भविष्य स्वर्णिम होगा। दैनिक जीवन में भी आत्म अवलोकन से हम पूजनीय एवं वंदनीय बन जाते हैं। आज देश में ज्ञानियों और बुद्धिजीवियों कि कमी नहीं है। लोग विचारों के धनी है पर स्वयं आचरण में अधिकांश निर्धन हैं। इसीलिए कहा गया है कि ढाई मन ज्ञान तप साधन कर ले पर जब तक मलीनता नहीं धुल जाती है, हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं है।

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान कार्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन

जिंदगी एक सफर है, मंजिल नहीं

शुभम कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब मैं कक्षा 9 में था, तब दुनिया जैसे एक नई किताब की तरह खुल रही थी। हर विषय, हर अध्याय में कुछ नया जानने का उत्साह था। गणित का कोई सवाल हल करना या विज्ञान की किसी क्रिया-प्रतिक्रिया को समझ लेना, ऐसा लगता था जैसे कोई नया खजाना मिल गया हो।

उसी समय मन में यह भी ठान लिया था कि कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक लाने हैं। हाँ, एक और सपना था– अपनी साइकिल का। उस उम्र में ये दोनों बातें ही जीवन के सबसे बड़े लक्ष्य लगते थे। लगता था, बस बोर्ड अच्छे से निकल जाए, तो ज़िंदगी सेट है।

फिर मै बारहवीं कक्षा में आ गया और उसके बाद स्नातक की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। अब एक नए सपने ने जगह ली–नौकरी। मैं सोचने लगा की अगर एक बार नौकरी लग जाए तो जीवन आसान हो जाएगा।

पर जब पहली नौकरी मिली, तो समझ आया कि यह तो सिर्फ शुरुआत थी। एक नौकरी से दूसरी, दूसरी से तीसरी... और फिर एक समय ऐसा आया जब लगा कि अब शायद ज़िंदगी कुछ स्थिर हुई है। एक मंज़िल नहीं, लेकिन एक ठहराव ज़रूर मिला है।

परन्तु यहीं से असली जीवन की शुरुआत होती है। नौकरी में अच्छे परफॉर्मेंस, ऑफिस की नयी जिम्मेदारियाँ उसके अलावा खुद की जिंदगी में भी अब नए सपने जुड़ चुके हैं–एक घर, एक कार, कभी देश और विदेश घूमने की ख्वाहिश... और तब ज़िंदगी कान में धीरे से कहती है –

"असली सफर की शुरुआत तो अब हुई है..."

छुट्टी के बाद जब घर से लौटता हूँ, तो सफर का एक हिस्सा अक्सर लोकल ट्रेन से तय होता है—वही ट्रेन जो हर छोटे-बड़े स्टेशन पर रुकती है। जब कभी वंदे भारत या राजधानी सरीखी ट्रेनें तेज़ी से हमें क्रॉस कर जाती हैं, तो लगता है जैसे ज़िंदगी की रफ़्तार भी हमें कभी-कभी साइड में कर देती है। मेरा पड़ाव उस लोकल का आख़िरी स्टेशन होता है। तब तक ट्रेन लगभग खाली हो चुकी होती है।

खिड़की से बाहर झाँकते हुए पीछे छूटते स्टेशनों को देखता हूँ। कभी कोई सहयात्री उन स्टेशनों में से किसी एक पर उतर जाता है। कुछ से बातें होती हैं, कुछ से दोस्ती—फिर अचानक अगला स्टेशन उनका होता है, और वो उतर जाते हैं।

यही तो ज़िंदगी है....।

एक उम्मीद... एक सफर.और अंत में मंज़िल पर अक्सर हम अकेले ही पहुँचते हैं। सफर में जो मिलते हैं, वे किसी स्टेशन पर उतर जाते हैं। कुछ साथ चलते हैं, कुछ हमें अलविदा कहकर अपने रास्ते चल देते हैं।

जब मैं ट्रेन से उतरता हूँ, तो स्टेशन पर भागते लोगों को देखता हूँ—कोई अगली ट्रेन पकड़ने के लिए, कोई सीट ढूँढ़ने के लिए दौड़ रहा होता है। मैं मुस्कुरा देता हूँ, जैसे खुद को ही देख रहा हूँ—वो 13-14 साल का लड़का जो कभी कक्षा 9 में अपनी साइकिल का सपना देखा करता था... जो मैट्रिक में टॉप रैंक लाने का ख्वाब देखा करता था... अब उसी भीड़ का हिस्सा बना, मुस्कुराते हुए एक नई मंज़िल की ओर बढ़ जाता है।

लगभग दो साल पहले मैं बनारस घूमने गया था......महादेव की नगरी। शाम को गंगा घाट की वो अद्वितीय, अपरिकल्पनीय माँ गंगा की आरती देखी। मन को पूर्णतः विभोर करने वाला समय। भगवान के प्रति सच्ची आस्था का भाव—एक अलग प्रकार की शांति और मन एवं शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार। आरती के बाद

थोड़ा आगे जा कर शाम को ही मैं मणिकर्णिका घाट पहुँच गया। घाट की आरती के विपरीत यहाँ अलग प्रकार की खामोशी थी। कई चिताएं जल रहीं थीं। सहसा मुझे गंगा आरती की ज्वाला और इन चिताओं की धधकती आग में एक अंतर दिखा। वहाँ जीवन था–सबके मन में जिंदगी के प्रति एक उम्मीद, और यहाँ विपरीत था–जीवन से विरक्तिः एक अंत।

ऐसा लगा मानो वो जलती चिताएं बोल रहीं हों–क्या इसी मंज़िल के लिए तुम इतना भाग-दौड़ में लगे हो? क्या राजा, क्या रंक, क्या करोड़पति और क्या भिखारी–सबका अंत तो यही है। फिर कैसे बोल दें कि जिंदगी एक मंज़िल है जिसमें अंत में हमें सब कुछ पा लेना है...।

बीते माह हमारा देश एक बहुत बड़ी त्रासदी से गुज़रा। अहमदाबाद से लंदन जा रही एयर इंडिया की एक वायुयान उड़ान भरने के कुछ ही सेकंड बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिसमें सवार 242 में से 241 लोगों ने अपनी जान गंवा दी। यह केवल एक तकनीकी दुर्घटना नहीं थी, बल्कि सैकड़ों सपनों, परिवारों और और इनके भविष्य की उम्मीदों का अंत था।

विमान में एक ऐसा परिवार भी था, जिसका मुखिया पिछले दस वर्षों से लंदन में नौकरी कर रहा था। वर्षों की मेहनत और संघर्ष के बाद वह अपने पूरे परिवार को अपने साथ बसाने ले जा रहा था–एक बेहतर जीवन, बेहतर शिक्षा और सुरक्षित भविष्य की उम्मीद लिए। शायद उसने कभी सोचा भी नहीं होगा कि जिस उड़ान को उसने अपने सपनों की शुरुआत माना था, वही उड़ान उसके जीवन की अंतिम उड़ान बन जाएगी। उसकी मंज़िल लंदन थी, पर ज़िंदगी की सच्ची मंज़िल उससे कहीं पहले, कहीं अनचाहे आ पहुँची।

इस हृदयविदारक घटना ने एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि हम ज़िंदगी को जितनी बार कोई "मंज़िल" मानते हैं,

वह उतनी ही बार हमें जता देती है कि वह तो एक सफर है–अनिश्चित, अस्थायी और क्षणभंगुर। हम आगे की योजनाओं में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि यह भूल जाते हैं कि अगला क्षण भी निश्चित नहीं। शायद इसीलिए ज़िंदगी को पाना नहीं, जीना ज़रूरी है–पूरे होश, पूरे दिल और पूरे सम्मान के साथ।

मंजिल की जरूरत: जब मैं अपने इन तीन अनुभवों को सोचता हूँ–लोकल ट्रेन का सफर जहाँ हर कोई अपनी मंज़िल की ओर भाग रहा था, बनारस में गंगा आरती की रोशनी और मणिकर्णिका घाट की चिताओं की आग, और वह दुखद विमान दुर्घटना जिसमें एक पूरा परिवार अपने सपनों की ओर जाते हुए जीवन खो बैठा–तब लगता है कि ज़िंदगी सच में सिर्फ एक सफर नहीं है। सफर ज़रूरी है क्योंकि वही हमें अनुभव देता है, लेकिन मंज़िल भी उतनी ही ज़रूरी है क्योंकि वही हमें चलते रहने की वजह देती है।

अगर उस परिवार ने मंज़िल का सपना न देखा होता, तो वह उड़ान ही नहीं भरते। अगर हम ट्रेन में सवार होते हुए मंज़िल न तय करें, तो हर स्टेशन पर उतर जाना पड़ेगा। और अगर बनारस की आरती में आस्था न हो, तो चिता की आग सिर्फ डर देगी, समझ नहीं। इसलिए ज़िंदगी में मंज़िल का होना ज़रूरी है– ताकि हम जानें कि हम क्यों चल रहे हैं, और उस सफर का क्या मतलब है?

हमारे गांव के पास जो नदी बहती है, वो मुझे ज़िंदगी के सफर की तरह लगती है। पहाड़ों से निकलती है– जैसे हमारा जीवन एक छोटे से सपने या बचपन से शुरू होता है। रास्ते में ये नदी कई मोड़ लेती है, कभी शांत तो कभी उफनाती हुई– ठीक वैसे ही जैसे हमारे सफर में कभी खुशी होती है, तो कभी संघर्ष। मैदानों में पहुँचकर ये नदी फैलती है, गाँवों को जीवन देती है, खेतों को सींचती है– जैसे हम भी चलते-चलते कई लोगों की ज़िंदगी को छूते हैं, कुछ अच्छा छोड़ जाते हैं।

बारिश के मौसम में जब बाँध का फाटक बंद कर दिया जाता है तो नदी थोड़ी देर के लिए रुकती जरूर है, लेकिन बहना कभी बंद नहीं करती। वो रास्ता ढूँढ़ ही लेती है। ज़िंदगी भी कभी-कभी रुकती है, थमती है, पर चलती जरूर रहती है। अंत में ये नदी गंगा की एक सहायक नदी में मिल जाती है– जैसे हमारा सफर भी किसी न किसी मंज़िल तक पहुँचता है। पर वो मंज़िल भी कोई अंत नहीं होती, बस एक नई शुरुआत होती है– जैसे नदी समुद्र में मिलकर भी खत्म नहीं होती, बल्कि बादल बनकर फिर लौट आती है।

इसलिए ज़िंदगी को नदी की तरह बहते रहना है– सफर तय करते रहना है, क्योंकि असली ख़ूबसूरती रास्तों में है, और मंज़िल तो बस एक पड़ाव है।

सफर और मंजिल में आखिर भेद क्या है, अधिकांश वक़्त में हम जीवन को केवल लक्ष्य प्राप्ति से जोड़ते हैं। जैसे नौकरी, शादी, धन-संपत्ति, प्रतिष्ठा परन्तु असली जीवन उन पलों में बसता है जो हम इन मंजिलों तक पहुँचने की कोशिश में बिताते हैं।

मंज़िलें जरूरी हैं क्योंकि वे हमें दिशा देती हैं, पर सफर उससे कहीं ज़्यादा मायने रखता है क्योंकि वो हमें आकार देता है। मंज़िलें बदल सकती हैं, लेकिन सफर में जो अनुभव, रिश्ते, सीखें और भावनाएँ हम पाते हैं–वो हमेशा हमारे साथ रहती हैं। मंज़िलें हमें सफलता का स्वाद देती हैं, पर सफर हमें इंसान बनाता है।

अंत में यही समझ आता है कि ज़िंदगी कोई एक मंज़िल नहीं, बल्कि वो पूरा रास्ता है जिसे हम चलते हैं– हँसते, रोते, सीखते और जीते हुए। और इसी एहसास के साथ दिल गुनगुना उठता है–

"ज़िंदगी एक सफर है सुहाना,
यहाँ कल क्या हो किसने जाना..."

विकसित भारत: एक परिकल्पना।

शुभांशु कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

विकास सिर्फ भौतिक नहीं अपितु आंतरिक भी होता है। किसी देश या प्रांत का विकास तब पूर्ण माना जाता है जब वहाँ के आधारभूत प्रणालियों और सेवाओं के साथ-साथ उस प्रांत में रहने वाले मनुष्य भी अपने अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा एवं बौधिक रूप से उच्च स्तर पर हों। इतिहास में अनेक सभ्यताएं अपने विकास के चरम स्तर पर थीं और बाद में उनका पतन हो गया। 10 वीं शताब्दी का भारत भी एक समृद्ध एवं विकसित भारत था जहाँ कला, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य, व्यापार अपने उच्च स्तर पर था, परंतु राजनीतिक अस्थिरता इसके पतन का मुख्य कारण बना। तब से लेकर आजादी तक भारत किसी न किसी विदेशी ताकतों के अधीन रहा। जिन्होंने भारत के संस्कृति, कला, शिक्षा, साहित्य, व व्यापार को अपरिवर्तनीय क्षति पहुँचाई।

भारत पर अंतिम विदेशी शासन अंग्रेजों का था जिनसे हमें सन् 1947 ई० में स्वतंत्रता मिली। उस समय का भारत न तो आर्थिक रूप से समृद्ध था न सामाजिक रूप से। इसी बीच भारत-पाकिस्तान के विभाजन ने जले पर नमक छिड़कने का काम किया। सन् 1950 ई० में गणतंत्र के बाद भारत के आर्थिक, सामाजिक एवं औद्योगिक विकास के लिए कई योजनाएं चली। जिससे भारत के कई हिस्से विकास की राह पर चल पड़े। भारत में कृषि एवं पशुपालन से लेकर सेवाओं एवं उद्योग तक प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ। परंतु भारत के विशाल भूभाग एवं विविध भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्थिति ने इसके प्रत्येक हिस्से में विकास को अविकारी रूप से वंचित रखा। भारत के दक्षिण एवं पश्चिमी भाग, भारत के उत्तरी, पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भाग से अधिक विकसित हुए जिसके अनेक राजनैतिक, भौगोलिक एवं सामाजिक कारण रहे। दक्षिण एवं पश्चिमी राज्यों की समुद्र से निकटता

एवं अनुकूल राजनैतिक स्थिति इन राज्यों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मददगार साबित हुई। वहीं पूर्वी एवं उत्तरी राज्य़ों की राजनैतिक उथल-पुथल एवं पूर्वोत्तर राज्यों की जटिल भौगोलिक स्थिति इन के आर्थिक विकास की अड़चने रहीं।

भारत के विकास में अनियमितता केवल इसके भूभागों तक सीमित नहीं है अपितु नगरों एवं ग्रामों में भी है। औद्योगिक एवं सेवाओं के वैश्विक बाजार में अर्थव्यवस्था का मुख्य केन्द्र शहर ही होता है। 32.63 लाख वर्ग कि०मी० वाले देश में केवल 8 महानगर (प्रथम स्तरीय शहर) हैं जिनमें से 5 भारत के दक्षिणी एवं पश्चिम भाग में, एक पूर्वी भाग में तथा एक उत्तरी भाग में है। बात अगर नगरों (द्वितीय स्तरीय शहर) की की जाए तो दक्षिणी एवं पश्चिमी राज्यों में यह संख्या 5 से 8 है जबकि उत्तर प्रदेश को छोड़कर बाकी उत्तरी एवं पूर्वी राज्यों में यह एक से चार है। जो यह बात स्पष्ट करता है कि भारत का विकास नियमित नहीं है। साथ ही ग्रामीण भारत की प्रतिव्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। एक सर्वे के अनुसार यह केवल 86.6 हजार प्रतिवर्ष है, जो कि राष्ट्रीय औसत 172 हजार प्रतिवर्ष, से बहुत कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण भारत, शहरों से काफी पीछे है जिसके कारण भारत में अभी भी उत्तर एवं पूर्वी राज्यों के गाँवों से दक्षिण एवं पश्चिमी राज्यों के शहरों, छोटे शहर से बड़े शहर इत्यादि के बीच पलायन जारी है। यह पलायन पूर्व से अति जनसंख्या पूर्ण शहरों की वर्तमान आधारभूत संरचना पर अनावश्यक दबाव डाल रहा है।

इसके अलावा भारत में कुछ गिने चुने ही व्यवस्थित शहर हैं जैसे चण्डीगढ़, नोएडा, नई दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र), नवी मुंबई एवं गाँधीनगर। अन्य सभी नगरों की बात की जाए तो वे शहर संकुलन के परिणाम हैं जो कि पूर्ण रूप से अव्यवस्थित एवं अत्याधिक जनसंख्या वाले हैं। इन शहरों में सड़क जाम, विद्युत, जल, आवास,

स्वच्छता, प्रदूषण इत्यादि की समस्याएं आम बात हैं क्योंकि यहाँ की मूलभूत संरचनाएं यहाँ की आबादी के समानुपाती नहीं हैं। साथ ही भारत के बहुत से गाँव अभी भी कई मूलभूत संरचनाओं से वंचित हैं जिसके लिए उन्हें नजदीक के किसी नगर पर आश्रित रहना पड़ता है। सन् 2011 कि जनसंख्या के अनुसार भारत की 31.1% जनसंख्या शहरी थी जो कि 2036 तक लगभग 39.6 प्रतिशत हो जाएगी। इसका एक कारण प्रवास भी है जो कि सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार के ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार गाँव से गाँव 55%, शहर से गाँव 10.2%, गाँव से शहर 18.9% एवं शहर से शहर 15.9% है। शहरीकरण के मामले में भी दक्षिण एवं पश्चिमी राज्य के पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी राज्यों से अग्रणी प्रतीत होते हैं।

सीमित भारतीय महानगरों एवं नगरों को सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से कार्य करने हेतु यह अत्यावश्यक है कि इनका भार कम किया जाए। इसके लिए भारत के अल्प शहरीकृत क्षेत्रों में लघु नगरों (तृतीय स्तरीय शहर) का औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण किया जाना आवश्यक है। साथ ही नए औद्योगिक शहरों कि स्थापना भी, जिसके लिए पिछले दशक में सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। उदाहरण के लिए गुजरात में गिफ्ट सिटी एवं ढोलेरा जैसे नए निवेश शहरों का निर्माण, उत्तर प्रदेश में लखनऊ आई०टी० सिटी, नया अयोध्या, नया वाराणसी, येईडा (यमुना) सिटी; महाराष्ट्र में औरिक (औरंगाबाद इण्डस्ट्रियल सिटी), नैना सिटी (नवी मुंबई); हरियाणा में न्यू गुड़गाँव जैसे प्रस्तावित शहर जो नए भारत के निर्माण में अपना योगदान करेंगें। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत भारत के प्रत्येक राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश (लद्दाख छोड़कर) से न्यूनतम एक शहर का आधुनिकीकरण के लिए चुनाव किया गया है जिसकी कुल संख्या 110 है। इसके तहत दक्षिण एवं पश्चिमी राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों से

क्रमशः 30 एवं 24, उत्तरी राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेश से कुल 31 शहर, पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी राज्यों से क्रमशः 14 एवं 9 शहर एवं शेष दो शहर दो द्वीपसमूहों से शामिल किए गए हैं।

विकसित भारत के स्वप्न के पूरा करने के लिए केवल आधुनिक शहर ही काफी नहीं होंगें बल्कि एक बहु-विकल्पीय संचार माध्यम की भी उतनी ही आवश्यकता होगी जिससे शहर के अंदर, एक शहर से दूसरे शहर तथा ग्रामीण इलाकों से नजदीकी शहरों तक सुगमता से आवागमन एवं परिवहन की सुविधा उपलब्ध हो सके। इसके लिए भी सरकार द्वारा कई एक्सप्रेस-वे, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरीडोर, मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक पार्क, मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब, रेपिड रेल, मेट्रो रेल आदि का निर्माण किया गया है एवं किया जा रहा है। उदाहरण के लिए मार्च 2025 तक लगभग 23 नए एक्सप्रेस वे एवं हाईवे का निर्माण किया जाना था जिसमें दिल्ली-मुम्बई, दिल्ली-अमृतसर-कटरा, बेंगलुरू-चेन्नई, चेन्नई-सेलम, खड़गपुर-सिलिगुड़ी, दुर्ग -रायपुर-आरंग, नागपुर-विजयवाड़ा, कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेस वे इत्यादि हैं। भारतमाला परियोजना के तहत तकरीबन 35 बहुसूत्रीय संचालन व्यवस्था (मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक पार्क) प्रस्तावित हैं जिनमें से पाँच जोगिघोपा, चेन्नई, बेंगलूरू, नागपुर और इंदौर निर्माणाधीन हैं जिनके वित्तीय वर्ष 2025-26 एवं 2026-27 तक पूर्ण होने की संभावना है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीटी) में बहुसूत्रीय परिवहन तंत्र (मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब) बनाने के लिए केंद्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा एवं एनसीटी दिल्ली की सरकारों द्वारा संयुक्त उद्यम राष्ट्रीय 'राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) की स्थापना की गई जिसके तहत 8 प्रस्तावित रेपिड रेल कॉरीडोर में से पहले तीन दिल्ली-मेरठ, दिल्ली-पानीपत एवं दिल्ली-अलवर को प्राथमिकता दी गई है। इसके साथ-साथ भारत के अलग-अलग शहरों को जोड़ने के लिए कई सेमी हाईस्पीड रेलों को चलाया जा रहा है एवं भारत के कई शहरों में

मेट्रो रेल की सुविधा भी शुरू हो चुकी है। गुजरात एवं महाराष्ट्र के कई शहरों को जोड़ने वाले हाईस्पीड रेलों के परिचालन का जल्द श्री गणेश करने के लिए द्रुतगति से कार्य प्रगति पर है।

भारत के पूर्वोतर के बेहतर विकास के लिए केंद्र सरकार की विभिन्न परियोजनाएं जैसे 'पूर्वोत्तर विशेष मूल संरचना विकास योजना (एनईएसआईडीएस)', 'प्रधानमंत्री पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास पहल (पीएम डिवाइन)' आदि योजनाएं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (एमडीओएनईआर) की देखरेख में चलाई जा रही है जिसके तहत यहाँ के मूल संरचना का विकास और पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुदृढ़ सड़क, रेल, जल, दूरसंचार और हवाई संपर्क प्रदान करना है। इसके साथ-साथ पूर्वोत्तर के लिए विशेष त्वरित सड़क विकास कार्यक्रम, रेलवे लाइनों की ब्रॉड गेजिंग और राजधानी संपर्क रेल परियोजनाएं, रोपवे का निर्माण, व्यापक दूरसंचार विकास कार्यक्रम, ट्रांसमिशन और वितरण प्रणाली को मजबूत करने जैसी योजनाएं आदि शामिल हैं। हाल ही में एमडीओएनईआर द्वारा आयोजित **'उभरता पूर्वोत्तर: निवेश शिखर सम्मेलन'** में पूर्वोत्तर भारत के दक्षिण-पश्चिम एशियाई देशों के साथ निकटता' के महत्ता पर बल दिया गया जो कि वृहत वैश्विक बाजार तक इस क्षेत्र के पहुँच को लाभप्रद स्थिति में होने का भी दावा करता है। इस शिखर सम्मेलन में भारत के कई बड़े निवेशकों ने पूर्वोत्तर के विकास में योगदान देने के लिए कई घोषणाएं भी की हैं। इसके लिए निवेशकों को सरकार द्वारा प्रचूर प्राकृतिक संसाधन, कुशल कार्यबल, बढ़ती मूल संरचनाएं, सरकारी प्रोत्साहन आदि का आश्वासन भी दिया गया।

अग्रविवेचित समस्त योजनाओं, संरचनात्मक परियोजनाओं एवं सरकार की दृढ़ता को देखकर यह मानना अन्योचित नहीं है कि विकसित भारत की राह पर हम अग्रसर हैं, परंतु जो क्षेत्र विकास में पीछे रह गए हैं उन्हें विकसित क्षेत्रों के समान आने में अधिक समय

लगेगा। इसके लिए कम विकसित क्षेत्रों में विकसित क्षेत्रों के मुकाबले अधिक निवेश की आवश्यकता होगी, साथ ही राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिरता की भी। अभी भी भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर राज्यों (सिक्किम एवं मिजोरम को छोड़कर) की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। भले ही हम सकल घरेलू उत्पाद के मामले में जापान को पीछे छोड़ 4 ट्रिलियन डॉलर के साथ दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हों, प्रति व्यक्ति आय (क्रय शक्ति समता) के मामले में आज भी हम लगभग रूस एवं जापान से पाँच गुना, चीन से दो गुना, जर्मनी से सात गुना एवं संयुक्त राज्य से आठ गुना पीछे हैं। यहाँ तक की कई छोटी अर्थव्यवस्था वाले देश भी इस सूचकांक में हमसे आगे हैं।

भारत की वर्तमान स्थिति को सुधारते हुए यदि हम विकसित भारत की परिकल्पना करना चाहें तो वह कुछ इस प्रकार होगा: -

जहाँ नदियाँ फिर से गाएँ, न हो कल-कारख़ानों का विष,
वृक्षों की छाया में पले, नव भारत का हर दिश।
प्रकृति से मेल हो जीवन का, विकास से न हो इनका विनाश,
हर नगर-ग्राम में हो हरियाली, ना हो जाए इनका ह्रास।

न्याय मिले निर्धन को भी, हो न विलंब, न भेद,
हर पीड़ित को मिले सहारा, न हो अन्याय की चेत।
पलायन न हो विवश किसी का, रोज़गार गाँव में आए,
सुनियोजित योजनाओं से, हर कोना अवसर पाए।

अनियमितता के दलदल से निकले नीति-प्रशासन,
पारदर्शिता बने आधार, हो सशक्त संचालन।
शहर बढ़े पर सोच समझकर, साँसें न हों धुएँ में गुम,
सुनियोजित हो शहरीकरण, आएं किसी भी गली में घूम।

विकसित भारत वो बने, जहाँ संतुलन हो हर मोड़,
विकास, सद्भाव, न्याय, प्रकृति–साथ चलें हर ठौर।
चलो मिलकर राह बनाएं, संकल्पों से भरा भविष्य,
जिसे देख कहे हर पीढ़ी – "यह है भारत का यथार्थ दृश्य।"

इसी परिकल्पना को जारी रखते हुए हम कह सकते हैं कि विकसित भारत की लगभग आधी आबादी शहरी होगी। भारत का हर एक शहर एवं गाँव जनसंख्यानुपातिक मूलभूत संरचऩाओं एवं आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। शहर से शहर, गाँव से गाँव एवं गाँव से शहर बहुस्तरीय संचार साधनों से जुड़ा होगा। भारत की अधिकांश शहर औद्योगिक होगी जिससे उस शहर एवं आसपास के लोग उचित रोजगार पा सकेंगे ताकि रोजगार पलायन भी न्यूनतम हो सके। गाँवों में किसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव न हों ताकि गाँव के लोग शहर स्वेच्छा से आएं विवशता से नहीं। चूँकि यह एकमात्र परिकल्पना है तो प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक एवं बुद्धि का प्रयोग कर विकसित भारत की परिकल्पना स्वछन्द रूप से कर सकता है।

परंतु, परिकल्पना में विकसित भारत कैसा भी हो, इन सभी परिकल्पऩाओं के धरातल पर सत्य होने के लिए भारत को अधिक से अधिक आत्मनिर्भर बनना अत्यावश्यक है। जो कि भारत में अधिक से अधिक उत्पादकता एवं निर्यात बढ़ाने से ही संभव हो पाएगा। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों के साथ कदम से कदम मिलाकर बढ़ाना होगा। इसके साथ, मेधा पलायन (ब्रेन ड्रेन) को भी रोकना होगा एवं सरल व्यापार सुविधा को बढ़ावा देना होगा। साथ हीं हमें पर्यावरण संरक्षण, गरीबी उन्मूलन, जनसंख्या नियंत्रण, प्रदूषण निम्नीकरण आदि पर भी उचित ध्यान देना होगा। इसके अलावा, पर्यटन के प्रोत्साहन के प्रयास को भी प्रेरित करना होगा।

घर वापसी

संजीत कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"यात्रीगण कृपया ध्यान दें, गाड़ी संख्या 13202 पटना जनता एक्सप्रेस–भुसावल से होते हुए पटना को जाने वाली प्लेटफ़ॉर्म नंबर 2 पर आ रही है..."

घोषणा की यह आवाज़ जैसे ही स्टेशन परिसर में गूँजी, बिरजू के मन-मस्तिष्क में एक तीव्र लहर दौड़ गई। उसकी आँखें प्लेटफ़ॉर्म की पटरियों पर ठहर गईं। चेहरे पर अनायास ही एक मंद मुस्कान फैल गई और हथेलियाँ जमीन पर टिके उस पुराने से बैग की ओर बढ़ चलीं।

इंतज़ार अब समाप्ति की दहलीज पर था–महीनों से किया गया इंतज़ार, इन गगनचुंबी इमारतों से दूर, अपने घर का इंतज़ार, इन दौड़ती चमचमाती गाड़ियों से बहुत दूर, अपने गाँव की 'टुनटुन' करती साइकिल की घंटियों का इंतज़ार।

जैसे ही गाड़ी प्लेटफ़ॉर्म पर आकर रुकी, बिरजू भीड़ को चीरता हुआ भीतर घुस गया। हर कदम जैसे उसे पीछे की ओर–अपने बीते दिनों की ओर खींच रहा था। उसने बैग को ऊपर की बर्थ पर उछाला और खिड़की के पास वाली सीट पर जा बैठा। गाड़ी में यात्रियों का कौतूहल बढ़ता जा रहा था–कुछ मिलन की बेचैनी, कुछ विदाई की नमी, कुछ अजनबी चेहरों की खोज में भटकती नज़रें। लेकिन इन सबसे दूर, बिरजू अब अपने अंतर्मन के चित्रपट पर बटोरी गई उन कहानियों को उकेरने लगा जिन्हें वर्षों से उसने अपने भीतर संजोकर रखा था।

माँ की वो मीठी झिड़कियाँ–जब सुबह देर से उठने पर वो कहती थीं, "सोता ही रहेगा क्या बिरजू? सूरज सिर पर चढ़ आया!"

जब भी वो मायूस होता, बिट्टी चुपके से आके पूछती–"क्या हुआ भैया? माँ ने डाँटा क्या?" फिर हँसती हुई कहती– "माँ तो हमेशा डाँटती रहती है ना... छोड़ो।" "आओ, मैं तुम्हारे लिए हलवा बना देती हूँ, तुम्हारा प्यारा सा हलवा।"
अब वो सब कुछ फिर से जीने वाला था–वो जीवन जो शहर के शोर में कहीं पीछे छूट गया था। गाड़ी ने अपनी गति पकड़ ली थी, मानो बिरजू के मन में उठते विचारों से कोई प्रतिस्पर्धा छिड़ गई हो। पर जीत गाड़ी की हुई–उसका सफ़र सुनिश्चित था। उसे मालूम था कहाँ जाना है, कब रुकना है। पर मन? उसे न तो मंज़िल का पता था, न ठहराव का। वो तो बस चलते रहना जानता है–कहीं भी, हर कहीं।

दीवारों पर पुती सुनहरी पुताई सूरज की रोशनी में एक हल्की लालिमा फैला रही थी–जैसे किसी भूले-बिसरे स्वप्न में फिर से रंग भर रहा हो। घर अब भी जस का तस था–आँगन में बना मिट्टी का चूल्हा, एक कतार में सजे तीन कमरे और बगल में एक मवेशीख़ाना। गायों की जोड़ी ने बिरजू की आहट पहचानते ही गर्दन उठाई और पूँछ हिलाकर वैसा ही स्वागत किया, जैसा वो हमेशा करती आई थीं– न किसी उलाहने के साथ, न किसी सवाल के साथ।

जैसे ही बिरजू ने पाँव आँगन में रखा, माँ की नज़र उस पर पड़ी। उसके बिना बताए गुज़रे वे सारे पल, उस एक दृष्टि में सिमट आए। ममता के उस भँवर में अब शब्दों का कोई मोल नहीं रहा–मानो आँखों ने बोलना शुरू कर दिया था। माँ ने एकदम हल्के काँपते स्वर में कहा,“तू कब आया?”

फिर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए ही हड़बड़ाकर बोलीं,“बैठ, मैं तेरे लिए पानी लाती हूँ।” इसके बाद जो बातों का दौर शुरू हुआ, वो चलता गया।

छत पर पुराना बिछावन बिछा था। ऊपर खुला आसमान था– न सितारे ज़्यादा चमक रहे थे, न हवाएँ तेज़ थीं, पर उस ख़ामोश रात

में रिश्तों की गर्माहट थी। भाई-बहन दोनों लेटे थे–बरसों बाद इतना समय साथ बिता रहे थे। दिल में ढेरों बातें थीं, पर शुरुआत कहाँ से हो, यह समझ नहीं आ रहा था।

बिट्टी ने थोड़ा मुस्कुराते हुए कहा "भैया, जानते हो... मेरी शादी की बात चल रही है। लड़का रंग से साँवला है, पर प्राइवेट कंपनी में क्लर्क है। कहते हैं चार-पाँच साल में मैनेजर बन जाएगा। फोटो देखा है मैंने... हमारी जोड़ी अच्छी लगेगी।"

बिट्टी की बातें उसे असहज कर रही थीं। अभी तो पिछले महीने ही तो वह सत्रह की हुई थी। शहर में तो वह सुनता रहता था–लड़कियाँ अब करियर बनाती हैं, फिर शादी के बारे में सोचती हैं। अपने निर्णय वे स्वयं लेती हैं। लेकिन शायद ये आदर्शवादिता शहरों की चौड़ी सड़कों से चलकर इन गाँवों की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में आते-आते थक कर दम तोड़ देती है। और इन लड़कियों का इसमें दोष भी क्या?

जब आपकी खुशियाँ आपके पति की मुस्कुराहट से परिभाषित की जाने लगें, जब आपकी सफलता आपके परिवार की सफलता से तौली जाए, जब आपका अस्तित्व एक घर और उसकी चहारदीवारी में रहने वालों से तय हो और आपका कर्तव्य उनकी सेवा में सीमित कर दिया जाए–तो विकल्प कहाँ बचते हैं? आवाज़ सुनी कहाँ जाती है?

बिट्टी भी उनसे अलग नहीं थी। या शायद बिट्टी ने इस सच को बहुत पहले पहचान लिया था। उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, पर शब्द बेमानी से लगे। वह चुप हो गया। बिट्टी ने फिर पूछा–उत्सुकता से, थोड़ी मासूमियत से, "कुछ बताओ न बंबई के बारे में।" बिरजू आसमान की ओर देखते हुए धीरे-धीरे बोला "जानती है बिट्टी, बंबई बहुत बड़ी है। बड़े-बड़े आलीशान मकान हैं, हर दिन हज़ारों लोग आते हैं – एक बेहतर ज़िंदगी की आस में। हर तरफ़ रफ़्तार है, हर समय गाड़ियाँ दौड़ती रहती हैं। बंबई कभी नहीं रुकती।"

वह एक पल को चुप हो गया। कुछ देर तक दोनों के बीच ख़ामोशी पसरी रही। फिर लगभग फुसफुसाते हुए बोला–"लेकिन मेरा मन नहीं लगता वहाँ। वहाँ अमीरी है, सफल लोग भी हैं... पर अपने लोग नहीं मिलते। उन कारखानों की दीवारों में जैसे दम घुटती है। लगता है जैसे जी नहीं रहा..बस, चल रहा हूँ।" उसे पता ही नहीं चला, बिट्टी कब उसकी बात सुनते-सुनते सो चुकी थी।

धूप तेज थी। माँ और बेटा आमने-सामने बैठे थे। निगाहें कई बार टकराईं, फिर झुक गईं। चुप्पी के उस भारी आवरण को तोड़ने का साहस किसी में नहीं था।

माँ ने आखिरकार धीमे स्वर में पूछा,“तो बिरजू, बंबई में अच्छा लग रहा है न?”

बिरजू ने बस सिर हिला दिया।

बात की शुरुआत तो हुई, लेकिन बस थोड़ी देर की हल्की-फुल्की बातें –मौसम, पड़ोसी, खेती-बाड़ी।

फिर उनके शब्दों का ज़खीरा जैसे थमने लगा।

तभी माँ ने एक तेज साँस लेते हुए एक स्वर में कहा, "बुधन चाचा ने एक लड़का देखा है। कह रहे थे, लड़के का परिवार अच्छा है, लड़का अकेला है। एक-दो बीघा ज़मीन में खेती भी करता है। लड़की का फोटो देखते ही लड़के वालों ने कह दिया, ‘शादी तो अब इनके घर से ही होगी, बात आगे बढ़ाइए।"

माँ ने जैसे ही ये कहा, वो थोड़ी देर चुप हो गईं।

बिरजू ने धीरे से कहा, "बढ़िया है माँ।"

लेकिन माँ के चेहरे की मुस्कान अब भी नदारद थी।

बिरजू ने गौर किया, पूछा– "कोई बात है क्या माँ?"

माँ ने निगाहें फेरते हुए धीरे से कहा, "चाचा कह रहे थे कि भौजी, अइसन रिश्ता बार-बार ना मिली। लड़का पक्ष से एक लाख नकद और एगो सिकड़ी के माँग भइल बा–जुगाड़ कर लेबू नू?’"

प्रसन्नता की क्षणिकता का कोई मेल नहीं। उस आनंद की अनुभूति की समयावधि हमेशा उसे भयाक्रांत बनाए रखती है–यह उसे उस परमानंद की अनुभूति कभी होने नहीं देती।

वो घर की हालत भली-भाँति जानता था। खेत की उपज से एक लाख रुपये और ऊपर से सोने की सिकड़ी का जुगाड़–संभव नहीं था। माँ की दुविधा वह समझ रहा था। कैसे कोई माँ अपने बेटे से फिर से परदेस जाने को कह सकती है? किंतु और चारा भी क्या था? बंबई में की गई कमाई से दहेज की रकम तो जुट सकती थी। लेकिन शादी...अब वो **पहले वाली बात नहीं रही, अब शादी** एक बड़ा आयोजन बन गई है। बरात का स्वागत, गाँव भर की दावतें, तिलक में बर्तन, फल-फूल, मिठाइयाँ–हर चीज़ का इंतज़ाम ज़रूरी था। और उसके लिए? फिर से जाना पड़ेगा। कमाना पड़ेगा। पैसे जोड़ने होंगे।

गर्दन को नीचे झुकाए, उसने धीरे से कहा–"माँ, क्या बिट्टी की शादी एक साल बाद नहीं हो सकती?"

सन्नाटा फिर से पसर गया–मानो कहने को कुछ बचा ही न हो।

लेकिन इस बार, बारिश की बूँदों ने उस चुप्पी को तोड़ने का ज़िम्मा उठाया। बारिश की बूँदें किसी महीन धागे की तरह ज़मीन पर गिरने लगीं। माहौल में फैला तनाव उन बूँदों के साथ किसी अनिश्चित गंतव्य की ओर बह निकला। दोनों के क़दम धीरे-धीरे नीचे की ओर बढ़ने लगे–उन सवालों की सोच में, जिनके जवाब अब भी अधूरे थे।

आकाश आज कुछ अलग था – बाक़ी दिनों की अपेक्षा कुछ गहरा, कुछ भारी। नींद में डूबी, बिल्कुल शांत, बगल में बिट्टी बेसुध सी पड़ी थी। बिरजू ने उसकी ओर देखा कितनी प्यारी लग रही है बिट्टी, मन ही मन वह बुदबुदाया। वो अपने विचारों में डूबता चला गया।

"आख़िर बिट्टी को यही सब तो मिलेगा इस घर से। कितनी खुश थी वो...क्या उसके लिए इतना भी नहीं कर सकता? फिर भाई

किस काम का?" सपनों का मोल इन रिश्तों के आगे कितना छोटा पड़ जाता है। इन बातों को सोचते-सोचते कब नींद ने उसे अपने आगोश में ले लिया, उसे पता ही न चला...।

नीला आकाश, लहलहाते खेत, चिड़ियों की कुहकुहाहट, तेजी से धान की डालियों को काटते किसानों के हाथ, इन सब के बीच.. बिरजू अपने खेत में बने मचान से दूर तक फैले खेतों मे उन रंग-बिरंगे बिजूकों को एकटक देखता जा रहा है–स्थिर, अपने-अपने खेतों में दुनिया की हलचलों से बेख़बर, सुनसान में एकाकी प्रहरी की तरह। वहीं दूसरी ओर घर में फिर से कौतूहल था, ठीक वैसे ही जैसे पहले दिन जब बिरजू वापस आया था। माँ ने फिर से वही पुराना झोला निकाल लिया था–आज उसमें वो हर चीज़ समेट देना चाहती थीं, जिसके लिए बिरजू "हक़दार" था। बस उस ममता के सिवाय–जिसका बँटवारा संभव नहीं था, कम से कम बराबरी से तो बिल्कुल नहीं। बिट्टी भी माँ के कामों में हाथ बँटा रही थी–उन पलों की याद में डूबी हुई, जब एक दिन उसे भी ऐसे ही अपने घर को छोड़कर, भाई की तरह ससुराल की ओर विदा होना होगा।

उसके हाथ रुक गए–आँखों से एक बूँद चुपचाप गालों पर आ फिसली। रेल की पटरी पर दौड़ती गाड़ी अब अपनी गति पकड़ चुकी थी। हवा को चीरती, शहरों को पीछे छोड़ती, अतीत की धूल उड़ाती हुई अज्ञात भविष्य की ओर बढ़ती जा रही थी। कानों में लगे इयरफ़ोन से गाने का स्वर था:

"काहे जनम हमें दिहलू ऐ माई, दर-दर ठोकर खाए के। काहे जनमते न दिहलू ज़हरिया हो, जोगी ना बनती आई के..."

और बिरजू का मन... उन अनसुलझे सवालों की खोज में धीरे-धीरे उतरता जा रहा था। विचारों की उलझनों में, अकेले ही एक युद्ध लड़ता हुआ।

अगली पीढ़ी के लिए कुछ रोजगार के अवसर

सायक नंदी,

लेखापरीक्षक

जैसे जैसे दुनिया आगे बढ़ रही है, अगली पीढ़ी के लिए रोजगार के अवसर धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। पहले समाज में डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, चार्टर्ड अकाउंटेंट जैसे पेशे बहुत प्रतिष्ठित थे, लेकिन अब वे साधारण बन चुके हैं। पिछले दशक में मेकअप आर्टिस्ट, फैशन डिजाइनर, फोटोग्राफर, वीडियो एडिटर जैसे नए पेशे चर्चा में आए, क्योंकि ये पहले कम जाने जाते थे। लेकिन आज नए लोगों के लिए इन क्षेत्रों में सफलता पाना मुश्किल है, क्योंकि पहले से काम कर रहे लोगों का अनुभव और पहचान है। भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश में सभी के लिए रोजगार सुनिश्चित करना मुश्किल है। सबसे बड़ा खतरा एआई का है, जो कई क्षेत्रों में इंसान की जगह ले रहा है। इसलिए मैं अगली पीढ़ी के लिए ऐसे चुनिंदा टेक्निकल और नॉन-टेक्निकल रोजगार अवसर प्रस्तुत करूँगा, जो आने वाले दशकों तक टिकाऊ रहेंगे।

1. टेक्निकल प्रोफेशनस या तकनिकी पेशा

(i) डिजिटल आर्टिस्ट या डिजिटल कलाकारः आजकल कलाकार की परिभाषा बदल चुकी है। पारंपरिक कलाकार पेंट ब्रश व कैनवास से काम करते हैं, जबकि डिजिटल कलाकार सॉफ्टवेयर व डिजिटल टूल्स से क्रिएटिव डिज़ाइन बनाते हैं। कोविड-19 के बाद व्यवसाय डिजिटल हो गए हैं, जिससे विज्ञापन, मार्केटिंग, लोगो डिज़ाइन, आईडी कार्ड और इंटीरियर डिज़ाइन जैसी सेवाओं के लिए कुशल डिजिटल कलाकारों की भारी माँग बढ़ गई है। आने वाले वर्षों में इस पेशे की जरूरत और भी बढ़ेगी।

(ii) डेटा साइंस या डेटा विज्ञानः_इंटरनेट की मुफ़्त सेवाएँ हमारे डेटा के बदले मिलती हैं। इन बिखरे हुए डेटा को समझना, व्यवस्थित

करना और उपयोगी परिणाम तैयार करना डेटा वैज्ञानिक का काम है। वे उपभोक्ताओं की ज़रूरतों का विश्लेषण कर संस्थाओं को उत्पाद या सेवाएँ बेहतर बनाने की सलाह भी देते हैं। अमेरिका में डेटा वैज्ञानिक करोड़ों कमाते हैं और भविष्य में यह भारत सहित हर क्षेत्र में अत्यधिक माँग वाला पेशा बनने जा रहा है।

(iii) ए.आइ. डिवेलपर्स या विकासक और ए.आइ. एक्सपर्ट्स या विशेषज्ञः बहुत लोग सोचते हैं कि ए.आई. उनकी नौकरियाँ छीन लेगा, लेकिन असल में उन्हें ए.आई. नहीं, बल्कि ए.आई. जानने वाले लोग प्रतिस्थापित करेंगे। तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए ए.आई. को अपनाना ज़रूरी है। ए.आई. से नौकरी का खतरा नहीं है, क्योंकि इसे चलाने और नियंत्रित करने के लिए इंसान ही चाहिए। आने वाले समय में ए.आई. विकासक और ए.आई. विशेषज्ञ जैसे कई नए अवसर बढ़ेंगे। विकासक ए.आई. को और बेहतर बनाने पर काम करते हैं, जबकि विशेषज्ञ इसके उपयोग की उपयोगिता और प्रभाव का आकलन करते हैं। ए.आई. से जुड़ी और भी कई संभावनाएँ अच्छे रोजगार के अवसर खोलेंगी।

(iv) साइबर सिक्योरिटीज या साइबर सुरक्षाः साइबर सुरक्षा आज देश में एक बड़ी चिंता बन चुकी है। वायरस, मैलवेयर, फिशिंग, ट्रोजन हॉर्स, रैंसमवेयर जैसे खतरे इंटरनेट पर हर जगह मौजूद हैं। केंद्र सरकार, राज्य सरकार और प्राइवेट कंपनियाँ इनसे सुरक्षा पाने के लिए विशेषज्ञों पर निर्भर हैं। आप साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ बनकर देश की महत्वपूर्ण जानकारियाँ सुरक्षित कर सकते हैं और बड़े संस्थानों में काम करके अच्छी आय भी कमा सकते हैं। आने वाले कई दशकों तक इस क्षेत्र में रोजगार के अच्छे अवसर मौजूद रहेंगे।

(v) सोलर एनर्जी इंजीनियरर्स या सौर्य शक्ति इंजीनियर्सः नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सौर ऊर्जा को सबसे प्रमुख माना जाता है। भारत इंटरनेशनल सोलर अलायन्स या अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन का

संस्थापक सदस्य है और 2030 तक 500 गीगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित कर चुका है। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी जी ने प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना की शुरुआत की, जिसके तहत लाभार्थियों को हर महीने 300 यूनिट तक बिजली मुफ्त प्रदान की जाएगी। राजस्थान में विश्व का सबसे बड़ा सोलर पार्क स्थित है, जो भारत की इस क्षेत्र में बढ़ती शक्ति का प्रतीक है। हालाँकि, इन सौर संयंत्रों के ट्रांसमिशन, लेआउट, योजना और वितरण के लिए देश में कुशल इंजीनियरों की भारी कमी है। वर्तमान में अनेक प्लांट्स में तकनीक, उपकरण और यहाँ तक कि अधिकांश जनशक्ति भी चीन से आयात की जाती हैं। ऐसे में आने वाले समय में भारत में सौर ऊर्जा इंजीनियरों की माँग तेजी से बढ़ने वाली है। यह एक ऐसा पेशा है जिसे पूरी तरह भविष्य-सुरक्षित माना जा सकता है।

2. **नॉन-टेक्निकल प्रोफेशनस या गैर तकनीकी पेशा**

(i) कुकिंग या खाना बनानाः बच्चे आमतौर पर ये नहीं सोचते कि बड़े होकर दूसरों के लिए खाना बनाएंगे, लेकिन कुछ लोग कुकिंग को शौक बनाकर इसे पेशा भी बना लेते हैं। अगर आपको खाना बनाना पसंद है, तो आप रेस्टोरेंट खोल सकते हैं, बड़े होटल में शेफ बन सकते हैं, या होम किचन शुरू कर सकते हैं, जिससे आप अपने शौक और रोजगार दोनों को साथ में निभा सकते हैं। यह एक ऐसा पेशा है, जिसकी जरूरत दुनिया की आखिरी दिन तक बनी रहेगी।

(ii) टीचिंग या शिक्षणः भारत की शिक्षा व्यवस्था तेजी से बदल रही है। पहले शिक्षक केवल स्कूल, कॉलेज या ट्यूशन तक सीमित थे, लेकिन इंटरनेट ने कई नए विकल्प खोल दिए हैं। अब पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ संगीत, नृत्य, खेल और फिटनेस प्रशिक्षण भी शिक्षण का हिस्सा बन चुके हैं। शिक्षक यूट्यूब चैनल बनाकर प्रतियोगी परीक्षाओं या अन्य विषयों में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। कई लोग आकर्षक अवसरों के कारण सरकारी नौकरी छोड़कर फुल-टाइम

टीचिंग अपना रहे हैं। आने वाले समय में इस क्षेत्र में और भी अवसर बढ़ेंगे।

(iii) स्पोर्ट्स या खेलः खेल की चर्चा अक्सर सिर्फ खिलाड़ियों तक सीमित रहती है, जबकि नॉन-एथलेटिक भूमिकाएँ भी बेहद महत्वपूर्ण होती हैं। वर्ष 2024 ओलंपिक में भारत ने 117 खिलाड़ियों के साथ 140 सपोर्ट स्टाफ भेजे। हर खेल में कोच, ट्रेनर, फिजियो, मसाज थेरेपिस्ट, रेफरी, वीडियो एनालिस्ट और इवेंट ऑर्गनाइजर जैसी भूमिकाएँ जरूरी होती हैं। खिलाड़ियों की सफलता के लिए प्रशिक्षित सपोर्ट स्टाफ का योगदान अनिवार्य है, और भविष्य में उनकी माँग और बढ़ेगी।

(iv) भ्रमण और पर्यटनः_आज की टेक्नोलॉजी से भरपूर जिंदगी में पर्यटन ही एक ऐसा क्षेत्र है, जिसे ए.आई. भी प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। भाग-दौड़ की जिंदगी में लोग तनाव और अवसाद से बचने के लिए सदियों से पर्यटन का सहारा लेते आए हैं। डॉक्टर भी अपने मरीजों को साल में एक बार भ्रमण पर जाने की सलाह देते हैं। इसलिए पर्यटन क्षेत्र में बहुत संभावनाएँ हैं। आने वाले समय में बेहतर होटेल्स, रिसॉर्ट्स, अनुभवी मैनेजर्स, विशेषज्ञ टूर गाइड्स और एडवेंचर स्पोर्ट्स के लिए प्रशिक्षित कप्तानों की जरूरत और बढ़ेगी।

(v) आर्गेनिक फार्मिंग या जैविक कृषिः_आज अधिकतर बीमारियों का मुख्य कारण है फल-सब्ज़ियों में अत्यधिक कीटनाशकों का उपयोग, जो हमारे शरीर में जाकर घातक रोग पैदा करते हैं। इसका एकमात्र समाधान है जैविक कृषि। डॉक्टर भी जैविक फल-सब्ज़ियाँ खाने की सलाह देते हैं। हालांकि किसानों के लिए इसे अपनाना आसान नहीं है, क्योंकि इसके लिए विशेष ज़मीन, तकनीक और उपकरण चाहिए। इसलिए भविष्य में जैविक खेती और उससे जुड़ी तकनीकों की बड़ी आवश्यकता होगी।

(vi) वेस्ट मैनेजमेंट विशेषज्ञः_कहते हैं ढूँढ़ो तो कूड़े में भी सोना मिल सकता है। भले ही सोना न मिले, लेकिन बहुमूल्य धातुएं जरूर मिलती हैं। 2018 में चीन ने कूड़े से 100 मिलियन टन धातु बरामद की थी, जिसकी कीमत अरबों में थी। टूटे वायर्स में तांबा, पुरानी बैटरियों में पारा, मोबाइल, टीवी, फ्रिज जैसी इलेक्ट्रॉनिक्स में कई धातुएं होती हैं। हर शहर में डंपिंग ग्राउंड हैं, जहाँ सही वेस्ट मैनेजमेंट से करोड़ों की धातु व दूसरी चीज़ें रि॒सायकल की जा सकती हैं। भविष्य में पर्यावरण के लिए वेस्ट मैनेजमेंट विशेषज्ञों की ज़रूरत और बढ़ेगी।

(vii) जर्नलिज्म या पत्रकारिताः आजकल पत्रकारिता सिर्फ अखबारों तक सीमित नहीं रही। न्यूज़ मीडिया अब 24×7 टीवी चैनल्स, मोबाइल एप, फेसबुक पेज, यूट्यूब जैसे कई माध्यमों में फैल चुकी है। फ्रीलांस पत्रकार भी बढ़ते जा रहे है। 8 बिलियन की जनसंख्या वाली दुनिया में हर पल कहीं न कहीं कुछ ना कुछ घटना घटती रहती है, जिसे समाचार बनाया जा सकता है। इसलिए पत्रकारिता एक ऐसा पेशा है जिसकी माँ॒ग भविष्य में भी बनी रहेगी।

(viii) मेंटल हेल्थ स्पेशलिस्ट या मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञः आज की तेज़ रफ्तार जिंदगी में सबसे ज्यादा असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। भारत में आज मानसिक स्वास्थ्य पर कम ध्यान दिया जाता है, जबकि आने वाले दशक में इसकी ज़रूरत बढ़ेगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 6-7 करोड़ लोग मानसिक बीमारी से प्रभावित हैं, जिससे एंग्जायटी, डिप्रेशन, तलाक और आत्महत्या जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इसका समाधान करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ जैसे का॒उन्सेलर और साइकोलॉजिस्ट की आवश्यकता है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी ज़िंदगी या रिश्तों से नाखुश है तो वह परामर्शदाता या काउन्सेलर की मदद ले सकता है। विवाह-विच्छेद से

पहले पति-पत्नी को परामर्शदाता के पास भेजा जाता है, जो उनकी समस्याएँ सुनकर समाधान सुझाते हैं। मनोविज्ञानी या साइकोलॉजिस्ट हमारी बातचीत और मनोविज्ञान को समझकर हमें तनाव, अवसाद और सदमा जैसी समस्याओं से उबरने में मदद करते हैं।

(ix) वैलनेस एक्सपर्ट्स/नर्सिंग या शुश्रूषाः एक मरीज़ को ठीक करने में डॉक्टर के साथ-साथ नर्स की भी अहम भूमिका होती है। भारतीय प्रशिक्षित नर्सों की माँ्ग दुनियाभर में है। आज केवल महिला ही नहीं, पुरुष नर्सों की माँ्ग भी तेजी से बढ़ रही है। भारत में 15 करोड़ से ज़्यादा लोग 60 साल से ऊपर हैं, और ये संख्या आने वाले वर्षों में और बढ़ेगी। उम्र बढ़ने के साथ बुज़ुर्गों को देखभाल की ज़रूरत होती है, लेकिन आज के व्यस्त जीवन में परिवार के पास समय नहीं होता। ऐसे में फुल-टाइम नर्स या हेल्पर की आवश्यकता भविष्य में और बढ़ेगी।

(x) एन्त्रेप्रेनेउर या उद्यमीः उद्यमी बनना एक ऐसा पेशा है जो बाकी सभी पेशों से अलग है। आज काम करने वाले तो हजारों मिल जाते हैं, लेकिन काम देने वाले नहीं। देश में बेरोजगारी कम करने के लिए अधिक स्टार्टअप्स और उद्यमियों की ज़रूरत है। हालांकि, पूंजी की कमी और जोखिम उठाने की अक्षमता दो बड़ी बाधाएं हैं। अगर आप इनसे लड़ने का हौसला रखते हैं और समय के साथ खुद को डिजिटल रूप से अपडेट रखते हैं, तो सफलता पाना संभव है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में उद्यमिता का महत्व और भी बढ़ गया है, और जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ेगी, रोजगार देने वालों की ज़रूरत और भी बढ़ेगी।

सामाजिक अलगाव या आसक्ति

सायोनी केडिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मनुष्य स्वभाव से एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसकी पहचान, विकास और अस्तित्व सामाजिक संबंधों के ताने-बाने से जुड़ा होता है। परिवार, मित्र, पड़ोसी, सहकर्मी और व्यापक समाज–ये सभी उसके मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य के स्तंभ हैं। लेकिन जब कोई व्यक्ति अपने आसपास के लोगों से दूरी महसूस करने लगे, भावनात्मक जुड़ाव टूट जाए या संवाद के अवसर कम हो जाएं, तो वह "अकेलेपन" और "सामाजिक अलगाव" की स्थिति में प्रवेश कर जाता है।

अकेलापन केवल शारीरिक रूप से अकेले होने की स्थिति नहीं है, बल्कि यह एक भावनात्मक अनुभव है–जहाँ व्यक्ति भीड़ में भी अपने को असंबद्ध और उपेक्षित महसूस करता है। दूसरी ओर, सामाजिक अलगाव का अर्थ है– सामाजिक संपर्कों, रिश्तों और सहभागिता की कमी, जो व्यक्ति को सामाजिक तंत्र से काट देती है। ये दोनों स्थितियाँ आज के दौर में व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए एक बड़ी चुनौती बन चुकी हैं।

अकेलेपन और सामाजिक अलगाव के कई कारण हो सकते हैं। तेजी से बढ़ते शहर, मेट्रो कल्चर, व्यस्त जीवन-शैली और सीमित समय ने इंसानों के बीच की निकटता को कम कर दिया है। लोग अपने-अपने पेशेवर और व्यक्तिगत लक्ष्यों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि पड़ोसी से बात करना, रिश्तेदार से मिलना, या दोस्तों के साथ समय बिताना कम होता जा रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने लोगों के जीवन में होने वाली निजी घटनाओं की प्रदर्शनी तो लगा दी है लेकिन मन के मन से तार काट दिए हैं। और वास्तविक

संबंधों की घनिष्ठता घटा दी है। लोग स्क्रीन पर "लाइक्स" और "कमेन्ट्स" में व्यस्त हैं, पर दिल की बातें करने वाला कोई नहीं।

संयुक्त परिवारों का टूटना और एकल परिवारों की वृद्धि ने भी अकेलेपन को बढ़ावा दिया है। पहले बच्चों के दिन रात दादा-दादी को तंग करने में और गर्मियों और सर्दियों की छुट्टियाँ नाना-नानी के दुलार में कट जाते थे। अब बच्चों का तो सारा समय स्कूल, मोबाइल फ़ोन और टैब में बीत जाता है और बड़े होकर व्यक्तिगत उपलब्धियों की होड़ में इंसान ऐसा फँसता है कि कोई उसे दोस्त नहीं दिखता बल्कि सब उसे प्रतिद्वंदी ही दिखते हैं। आज की मानसिकता ये भी बनती जा रही है कि किसी को किसी की ज़रूरत नहीं जिससे ये सामाजिक अलगाव सामान्य होता जा रहा है जो कि दूर-दृष्टया संवहनीय नहीं है।

अकेलेपन का कारण चाहे कुछ भी हो पर इसके परिणाम बेहद गंभीर हैं। अकेलापन अवसाद, चिंता और व्यक्ति-निष्ठा में कमी जैसी मानसिक समस्याओं को जन्म देता है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि सामाजिक अलगाव हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, कमजोर प्रतिरक्षा तंत्र और समय से पहले मृत्यु के खतरे को बढ़ा देता है। अकेलेपन के कारण नींद की गुणवत्ता घटती है, और अनियमित खानपान जैसी आदतें भी विकसित हो सकती हैं। सकारात्मक भावनाएँ जैसे खुशी, संतोष, अपनापन ये सब तब फलते-फूलते हैं जब व्यक्ति जुड़ाव महसूस करता है। अलगाव की स्थिति में व्यक्ति चिड़चिड़ा, नकारात्मक और असुरक्षित महसूस करने लगता है। मानसिक और भावनात्मक अस्वस्थता का सीधा असर व्यक्ति की कार्य-क्षमता, रचनात्मक सोच और निर्णय लेने की क्षमता पर पड़ता है। कोई भी व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है और उसके अकेलेपन का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। यदि बड़ी संख्या में लोग आपसी जुड़ाव खो दें, तो समाज में आपसी सहयोग, विश्वास और सहानुभूति घटने लगती है। अपराध और

असामाजिक गतिविधियों में वृद्धि भी देखी जा सकती है। सामाजिक अलगाव और उपेक्षा के शिकार लोग कभी-कभी नकारात्मक गतिविधियों, नशे या हिंसा की ओर झुक सकते हैं। अकेलापन और सामाजिक अलगाव आधुनिक युग की गंभीर सामाजिक चुनौतियाँ हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों को कमजोर बना सकती हैं। यह केवल मानसिक स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर तक असर डाल सकता है। व्यक्ति के स्तर पर भावनात्मक सहारा, संवाद और संबंध आवश्यक हैं, जबकि समाज के स्तर पर सामूहिक कार्यक्रम, सामुदायिक समर्थन और सहानुभूति का वातावरण ज़रूरी है।

नए ज़माने में जहाँ निजता अति आवश्यक प्रतीत होती होती है वहीं ये निजता हमें कब अकेला कर देती है हमें पता भी नहीं चलता। हमें सक्रिय रूप से ध्यान रखना चाहिए की हम कब निजता से पृथकत्व की ओर बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि सुजान वह है जो यह जानता है कि कब रुकना है। यदि हम समय रहते जागरूक होकर व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास करें, तो हम न केवल अकेलेपन को कम कर सकते हैं, बल्कि एक स्वस्थ, खुशहाल और जुड़ा हुआ समाज बना सकते हैं, जहाँ हर व्यक्ति को यह महसूस हो कि वह महत्वपूर्ण है, और उसकी उपस्थिति मायने रखती है। प्रायः हमें अनासक्ति और अलगाव समान प्रतीत होते हैं परन्तु इनके बीच का बारीक़ भेद हम भूल जाते हैं। जहाँ आसक्ति हमें मुक्त करती है वहीं अलगाव हमें अवसाद के गहरे अँधेरे में धकेल सकता है।

मित्र

सुमित कुमार,
वरिष्ठ अनुवादक

आज सुबह से ही घनघोर बारिश हो रही है। गाँव के चारों तरफ पानी भर चुका है, जो अब धीरे धीरे गाँव के गलियों में घुस रहा है। टीशन राम दो दिनों से हो रही बारिश के कारण काम पर नहीं जा पा रहा है। परंतु, आज जब उसकी पत्नी राधिका ने उसे बताया कि आज शाम में खाने के लिए घर में अनाज नहीं है एवं बच्चे भूखे रह जाएंगे। वह काम पर जाने के लिए घर से निकला है। उसकी पत्नी राधिका ने हमेशा की तरह उसे दोपहर में खाने के लिए चार रोटियाँ, नमक, मिर्च एवं एक प्याज एक पोटली में बाँध दिया है एवं उसे देते हुए कहा कि दुकानदार ने आज सामान उधार देने से मना कर दिया है, एवं कहा है कि जो पहले का उधार है, पहले उसे चुकता करो तभी उधार की माँग करना, इसीलिए आज सब्जी नहीं बना पाई। आज बच्चों को भी यही खाना होगा, यह बात कहते हुए राधिका के आँखों में पानी भर गया। राधिका के आँखो में आँसू देखकर, टीशन राम को थोड़ा आश्चर्य हुआ, आज से पहले भी कई बार घर में सूखी रोटी या सिर्फ चावल खाकर रही है, परंतु कभी भी उसके आँखो में इस तरह से आँसू नहीं आये थे। टीशन राम अपनी पत्नी को विस्मित होकर देख रहा था, परंतु उससे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं कर पाया। वह बिना कुछ कहे घर से निकल गया। उसका मन बहुत सशंकित था। एक बार उसका मन हुआ कि वो वापस जाकर राधिका से इस संबंध में बात करें परंतु उसने सोचा कि शाम में वापस आने पर राधिका से पूछेगा। वह राधिका के स्वभाव से भली-भाँति परिचित है। राधिका कोई आम महिला नहीं है, वह धैर्य की प्रतिमूर्ति है। उसने टीशन राम के साथ कई विपत्तियाँ खुशी-खुशी झेली हैं। टीशन राम कभी भी उसके

मन मस्तिष्क पर किसी भी तरह का द्वेष अथवा क्लेश की भावना नहीं देख पाया। वह हमेशा टीशन राम के कंधे से कंधे मिलाकर गृहस्थी की गाड़ी चला रही थी। कितने दुख आए, परंतु वह कभी भी हताश नहीं हुई। फिर आज ऐसी क्या बात हो गई जो उसका मन इतना अधीर हो गया।

टीशन अपने मन में कई सारी आशंका लिए काम हेतु शहर जाने के लिए घर से निकला। गाँव से बाहर जाने वाले सभी रास्तों में पानी भरा हुआ था। टीशन राम किसी तरह से पानी के बीच से होकर जा रहा था। कहीं कहीं पर पानी कमर से ऊपर था, इस कारण उसे रास्तों का सही अंदाज़ा नहीं हो पा रहा था, अचानक टीशन राम का पैर किसी चीज़ में फँस गया जिस कारण वह पानी में गिर पड़ा। उसके सारे कपड़े भीग गए, साथ ही राधिका द्वारा दी गयी रोटी भी पानी में गिरकर भीग गयी। टीशन राम एक दिहाड़ी मजदूर है। वो रोज सुबह में शहर में काम की तलाश में जाया करता है। कई बार उसे कोई काम नहीं मिल पाता है। उसके घर में उसके माँ, उसकी पत्नी, एवं तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं, जिनकी उम्र क्रमशः 2, 5 एवं 7 वर्ष है। अपने पिताजी को बचपन में ही खो देने वाला टीशन राम को उसके माँ ने बहुत मेहनत से पाला पोसा था। वास्तव में, उसके पिताजी एक किसान थे, जो अपनी जमीन के छोटे से हिस्से में मेहनत करके एवं गाँव के कई अन्य लोगों के खेतों में काम करके अपने परिवार का भरण पोषण किया करते थे। परंतु, किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। उसके पिताजी एक दिन खेत में हल चला रहे थे, तभी आसमानी बिजली गिरने से उनकी अकाल मृत्यु हो गई। उस वक्त टीशन राम मात्र 09 महीने का ही था। तीन भाई-बहनों में टीशन सबसे छोटा था, इस कारण वह सबका दुलारा था। उसका नाम टीशन रखा गया इसके बारे में गाँव वाले बताते है, कि टीशन राम का जन्म स्टेशन पर होने के कारण उसके पिताजी ने उसका नाम टीशन रख दिया था। पिताजी

के मृत्यु के बाद उसकी माँ ने अपने अबोध बच्चों के मोह में जीना जारी रखा। उसे आज भी भली-भाँति स्मरण है, कि कैसे माँ गाँव के जमींदार श्री रतनलाल चौधरी के खेतों में काम करके उनसे पूरे साल अपने परिवार को खिलाने के लिए मोटा वाला चावल लाया करती थी। साथ ही जमींदार जी कुछ पैसे भी दिया करते थे, जिसे माँ बहुत संजों कर उसके बहनों के ब्याह के लिये रखा करती थी। माँ के उस काम में उसकी दोनों बड़ी बहनें भी हाथ बँटाया करती थीं। विधवा माँ ने मजदूरी करके उसे पढ़ाना चाहा, इस लिए उसने टीशन राम का नामांकन गाँव के विद्यालय में करवा दिया। परंतु विद्यालय में कुछ गलत साथियों के संगत में पड़कर टीशन राम गलत कार्यों में संलिप्त हो गया। महज 12 वर्ष के उम्र में वह नशा करने का आदी हो गया। विद्यालय जाने के बहाने वह गाँव से बाहर स्थित एक टूटी सी झोपड़ी में जा कर नशा का सेवन किया करता, जहाँ उससे बड़े उम्र के लड़के उसको नशा करना सिखाया करते। इस लत के कारण वो अक्सर अपने साथियों के साथ छोटी-मोटी चोरियाँ किया करता। अक्सर रात में जब माँ सो जाया करती, वो चुपके से घर से निकल जाया करता। एक रात वो अपने कुछ साथियों के साथ दूसरे गाँव के महाजन के दुकान में चोरी करने के लिए गया। वह एवं उसके दो साथी साथ में गए एवं बाकी साथी गाँव के बाहर बैठे रहे। जैसे ही खटपट की आवाज हुई, महाजन को पता चल गया। उसने शोर मचा दिया। दोनों बड़े लड़के तो भाग गए परंतु टीशन राम को पकड़ लिया गया। उसे रात भर खंभे से बाँध कर रखा गया। सुबह में पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। जैसे ही उसकी माँ को इस बात की खबर लगी, वो और उसकी दोनों बहनें भागी भागी आईं। पहले तो उन्हें टीशन को इस हाल में देखकर अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। परंतु, जब सच सामने आया तो वो हतप्रभ रह गईं। उसकी माँ अपने बेटे को इस हाल में देखकर फूट-फूट कर रोने लगी। लोग उसकी आँखो के सामने उसके माँ एवं बहनों को

भद्दी-भद्दी गालियाँ दे रहे थे एवं उन्हे जलील कर रहे थे। उसकी माँ उनके आगे हाथ जोड़कर खड़ी थी एवं अपने बेटे को माफ कर देने की भीख माँग रही थी। गाँव के प्रधान ने उसके हालत पर तरस खा कर उसे दुबारा ऐसी गलती नहीं करने की हिदायत देकर छोड़ दिया। टीशन को आज अपने आप पर बहुत शर्म आ रही थी। घर आते समय वह अपने माँ से नजर नहीं मिला पा रहा था, उसकी माँ भी खामोशी की चादर ओढ़े घर की ओर जा रही थी। उसने मन ही मन प्रण किया कि भविष्य में वह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेगा जिसके कारण उसकी माँ एवं बहनों को कभी शर्मिंदा होना पड़े।

यही सब सोचते-सोचते टीशन पता नहीं कब शहर के मजदूर हाट पहुँच गया। आज हाट में मजदूरों की संख्या खासी ज्यादा थी। वह भी काम मिलने की आस में मजदूरों की पंक्ति में खड़ा हो गया। उन मजदूरों में उसका एक परम मित्र रामदीन भी शामिल था। टीशन राम को देखकर वह उसके पास आकर खड़ा हो गया। रामदीन कभी टीशन राम के साथ उसके विद्यालय में सहपाठी था, टीशन राम अक्सर उसकी सहायता किया करता। रामदीन टीशन राम को उसकी बुरी आदतों के बारे में हमेशा हिदायत दिया करता था एवं जब टीशन राम को चोरी करने के लिए महाजन ने पकड़ कर खंभे से बाँध दिया था, तब वही जाकर टीशन राम की माँ को इस बारे में बताया था। हालांकि, टीशन राम को आज तक इस बात की खबर नहीं थी, कि रामदीन ने ही उसकी माँ को उसकी सभी करतूतों की जानकारी दी थी। कुछ समय के बाद एक आदमी कुछ मजदूरों को काम करवाने हेतु लेने आया। टीशन एवं रामदीन भी उन मजदूरों की टोली में शामिल था। सभी मजदूरों को एक गाड़ी में लादकर कार्यस्थल, जो कि एक निर्माणाधीन इमारत था, जिसकी छत ढलाई का कार्य किया जाना शेष था, पर लाया गया। टीशन राम एवं उसका साथी रामदीन को काम पर लगा दिया गया। दोनों पूरे उत्साह से काम कर रहे थे। टीशन

राम लकड़ी के सीढ़ी के सहारे ढलाई हेतु प्रयोग की जाने वाली सामग्रियों को छत पर पहुँचानें का कार्य कर रहा था। चूँकि, वो डीलडौल कद काठी का था, इसीलिए ठेकेदार ने उसे एवं अन्य कुछ उस जैसे मजदूरों को वह कार्य सौंपा था। टीशन राम के मन मस्तिष्क में अभी भी राधिका का अश्रुपूर्ण नयन एवं उदास चेहरा घूम रहा था। टीशन राम चाहकर भी उस असमंजस से बाहर नहीं आ पा रहा था। वह सीढ़ियों के सहारे ऊपर जाता, ढलाई के लिए तैयार मसालों को छत पर गिराकर फिर तेजी से वापस आता। उसे आज काम करते हुये अजीब सी बेचैनी हो रही थी एवं काम करने में उसका मन नहीं लग रहा था। सहसा, छत पर चढ़ते समय उसका पैर सीढ़ियों से फिसल गया एवं वो सीधा नीचे गिरा। इस कारण उसे बहुत चोट आयी एवं उसका कमर टूट गया। इस घटना से वहाँ मौजूद सभी मजदूरों में हड़कंप मच गया। ठेकेदार के कुछ आदमियों ने उसे एक गाड़ी में डालकर अस्पताल पहुँचा दिया। उसका मित्र रामदीन भी उनमें शामिल था, वह अपने बचपन के मित्र के लिए काम छोडकर अस्पताल आया था। डाक्टरों ने टीशन राम की आवश्यक जाँच करने के उपरांत उसके टूटे हुये कमर पर प्लास्टर चढ़ा दिया एवं कुछ दर्द निवारक दवाइयाँ भी दीं। रामदीन अभी तक अपने मित्र के साथ था एवं उसकी देखभाल कर रहा था। डाक्टरों ने टीशन राम को कुछ दिनों तक अस्पताल में रहने की सलाह दी। टीशन राम को अभी भी राधिका का वो रूआँसा चेहरा बार-बार याद आ रहा था एवं उसके कहे वाक्य कि आज शाम में बच्चों के खाने के लिए कुछ भी नहीं है मन-मस्तिष्क में घूम रहा था। उसने अपने मित्र रामदीन को बुलाया एवं ठेकेदार द्वारा उसको दिये हुये पैसे देते हुए कहा कि मित्र आज मेरे बच्चों के खाने के लिए घर में अनाज नहीं है। बड़ा अहसान होगा, यदि तुम मेरे इस पैसे को मेरी पत्नी राधिका को दे देना एवं उससे कहना कि टीशन कुछ दिनों के लिए शहर में ही रहेगा। उसे कार्यस्थल पर रात्रि में निर्माण सामग्रियों की

सुरक्षा के कार्य पर लगा दिया गया है। ऐसा बोलते-बोलते टीशन राम रो पड़ा। उसे अपने बच्चों, पत्नी राधिका एवं बूढ़ी माँ की याद आ रही थी। रामदीन टीशन राम को अस्पताल में छोडकर उसके घर गया। उस वक़्त तक शाम का पहर बीत चुका था। टीशन राम की पत्नी व्याकुलता से टीशन राम की प्रतीक्षा कर रही थी, वहीं उसके बच्चे भूख से व्याकुल होकर रो रहे थे। वो जाकर राधिका के हाथों मे एक झोला देते हुये बोला, बहन आज टीशन राम घर नहीं आ पाएगा उसे शहर में चौकीदारी का काम मिल गया है, जिस कारण वो कुछ दिन तक शहर में ही रहेगा। यह उसने तुम लोगों के लिए कुछ सामान भेजा है एवं ये उसके द्वारा तुम्हें देने हेतु कुछ पैसे है। ऐसा बोलकर रामदीन ने राधिका के हाथ में टीशन राम के द्वारा दिया हुआ पैसा रख दिया। राधिका को रामदीन की बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ, वो थोड़ा सशंकित हो गई। उसने रामदीन के आगे हाथ जोड़कर बोली भैया मुझे सच सच बताओ क्या बात है। आज तक ऐसा कभी हुआ नहीं कि वो कभी ऐसे समान भेजे है एवं बिना बताएं घर नहीं आए है। टीशन राम की माँ भी अपने बेटे के लिए व्याकुल हो रही थी। आखिर में, उन लोगों कि बेचैनी देखकर रामदीन से रहा नहीं गया एवं उसने सभी सच्चाई बयां कर दी। राधिका एवं उसकी माँ फूट-फूट कर रोने लगी। उन लोगों के रोने की आवाज सुनकर कई सारे पड़ोसी इकट्ठा हो गए। सभी को टीशन राम की फिक्र होने लगी। राधिका रामदीन से हाथ जोड़कर बोली, 'भैया, मुझे अस्पताल पहुँचा दीजिए, मुझे उनकी बहुत फिक्र हो रही है। राधिका रामदीन के साथ अस्पताल आ गई। वहाँ पहुँचकर अपने पति को देखकर वो भौचक रह गई। उसके आँखों के आगे अंधेरा छा गया। वो निशब्द होकर जमीन पर बैठकर फूट-फूटकर रोने लगी। वह ज़ोर-ज़ोर से विलाप कर रही थी। वह यह सोचकर हताश हो रही थी कि, अब शायद उसका पति कभी ठीक नहीं हो पाएगा। अब उसकी गृहस्थी कैसे चलेगी। उसकी बूढ़ी माँ,

उनके बच्चों का लालन पालन कैसे होगा। पास में ही खड़ा रामदीन भी राधिका के विलाप को देखकर स्तब्ध था। उधर टीशन भी राधिका को देखकर फूट-फूटकर रोने लगा। रामदीन ने दोनों को ढाढ़स बंधाया। उसने टीशन से बोला कि, मित्र, तुम फिक्र नहीं करो, मेरे रहते तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा । कुछ दिनों के बाद डाक्टरों ने टीशन को अस्पताल से छुट्टी दे दी। राधिका उसे लेकर घर आ गई। अब प्रतिदिन रामदीन पूरा दिन काम करता एवं शाम के समय अपने मित्र के बच्चों एवं उसके परिवार के लिए कुछ राशन एवं जरूरी समान दे जाता। इधर राधिका भी जी-जान से अपने पति की सेवा कर रही थी। कुछ दिनों बाद टीशन राम ठीक हो गया, परंतु उसके मन को उस दिन की घटना अभी भी कचोट रही थी। आखिरकार, उसने राधिका से उस संबंध में पूछ लिया। राधिका ने पहले तो कुछ भी बताने सें इंकार कर दिया, परन्तु टीशन राम के बार बार पूछने पर राधिका ने बताया कि, दुकानदार ने उस दिन मुझे उधार देने से मना कर दिया एवं दुत्कार कर भाग दिया। मुझे पहली बार अपनी गरीबी पर तरस आ रहा था। क्या गरीबों का कोई सम्मान नहीं है, यही सोचकर मेरी आँखों में आसूँ आ गये थे। तभी वहाँ रामदीन आ गया। टीशन राम को स्वस्थ देखकर वो फूले नहीं समा रहा था। टीशन राम एवं राधिका उसके आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गए। राधिका ने रोते हुये कहा कि भैया अगर आप मदद नहीं करते तो इस विपदा में हमारा क्या होता, हमारा बोझ कौन उठाता। वहीं टीशन राम के मुँह से बोल नहीं फूट रहे थे। रामदीन उसे गले लगाकर बोला, मित्र एवं भाई कभी बोझ नहीं होते।

बड़े बोल का सिर नीचा	- pride goes before a fall
झुक चले तो टूटे क्यों	- better to bow than to break
कौड़ी हाथ न लगना	- to draw a blank

साहित्य में आधुनिकता और पारम्परिकता का संघर्ष

सौरभ राज,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वियोगी होगा पहला कवि
आह में उपजा होगा गान
निकलकर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान।

उपर्युक्त पंक्तियाँ साहित्य के उद्भव के बारे में अनुमान लगाती हैं कि किस तरह संसार में प्रथम साहित्य की रचना हुई होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि साहित्य का जन्म मानवीय वेदना और भावनाओं की तीव्रता से हुआ। साहित्य के प्रारंभिक रूप में सम्भवत: पद्य की रचना हुई, क्योंकि जब विचार, भावनाएँ और इच्छाएँ तीव्र गति से व्यक्त होती हैं, तब उनमें स्वाभाविक रूप से लय का जन्म होता है।

यह पद्य आगे चलकर चंपूकाव्य और गद्य के माध्यम से विकसित होता गया, और आज के समय में भी यह निरंतर रूप से आगे बढ़ रहा है। इस विकासक्रम में साहित्य आज एक ऐसे मुकाम पर आ पहुँचा है जहाँ इसके भीतर आधुनिकता और परंपरा के बीच एक संघर्ष उभर आया है।

"युगों-युगों से संचित संस्कार,
ऋषि-मुनियों के उच्च विचार,
ये हैं निज संस्कृति के उपहार।"

परंपरा एक ओर जहाँ सम्पूर्ण मानव जाति को एक सूत्र में पिरोती है, वहीं आधुनिकता भविष्य के निर्माण की नींव रखती है। हमारे पूर्वजों के विचार और उनके रीति-रिवाज आज भले ही चेतन रूप में न हों, परंतु अवचेतन स्तर पर वे आज भी हमारी मानसिकता में गहराई से बसे हुए हैं। यही कारण है कि जब परिवर्तन की लहर

आती है, तब ये परंपराएँ नए रूप में हमारे समक्ष आती हैं—कहीं परंपरा से समन्वय करती हुई, तो कहीं पीढ़ियों के बीच तीव्र टकराव के रूप में।

जैसे चावार्क द्वारा रचित साहित्य ग्रन्थ जिसमें भोगवाद का उच्च स्टार प्रदर्शित होता है।

"आज हाथ में आई एक चिड़िया
कल के कबूतर से बेहतर है।"

इसी प्रकार , कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र यथार्थ पर ध्यान केंद्रित करता है। इस काल के साहित्य प्रायः स्वतंत्र विचारों की अग्नि में पके हुए थे।

मध्य काल आते आते साहित्य दरबारी संरक्षण से मुक्त हो गए। प्राचीन काल से बनी बनाई परंपरा टूटने लगी। साहित्य का मूल कार्य समाज का हित होता है, जिससे इस काल में यह विमुख हो गया। मुट्ठी भर शासकों के हाथों की कठपुतली तथा उनकी जीवन शैली के अनुरूप इसकी दशा और दिशा निर्धारित होने लगी।

अपवाद प्रत्येक काल में होते है इस कल में भी हैं। भक्ति परम्परा के रूप में साहित्य मुक्त उड़ान भरता रहा, दूसरी ओर सूफी संतो ने इसे धनी बनाया।

"जो तू बामन बमनी का जाया
आन बाट को क्यों नहीं आया"

कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से समाज में प्रचलित पाखंड, अन्धविश्वासों पर चोट की। जैसे- उपर्युक्त दोहे में वे ब्राह्मणों पर तंज कसते नजर आते हैं। अब बात करें आधुनिक काल के साहित्य की, जो 18वीं सदी के माध्यम से प्रारम्भ हुआ माना जाता है; तो इसमें वैज्ञानिक व औद्योगिक क्रांति के कारण लिखित रचनाओं की बाढ़ सी आ गयी और अंततः रचनाओं को साहित्यिक और गैर-

साहित्यिक कृत्यों में वर्गीकृत करना पड़ा। यहीं से साहित्यता में आधुनिकता और पारम्परिकता का संघर्ष उत्पन हुआ।

"ज्ञान भिन्न कुछ क्रिया भिन्न है,
इच्छा पूरी क्यों हो मन की।
हम दोनों मिल न सके
यह बिडंबना है जीवन की।"

ज्ञान और क्रिया में भिन्नता होने का प्रभाव साहित्य में द्वंद का कारण है। आधुनिक समाज, जीवनशैली तो आधुनिकता अपना चुका है, किन्तु विचारों के स्तर पर परम्परा से बँधा हुआ भी है। यह द्वंद साहित्य में भी मूर्त रूप में शामिल होता है। आधुनिक काल के लेखक कई धाराओं में बँटे हैं कई विचारधाराएं एक ही दिक्-काल के स्थान में प्रचलित हैं। जहाँ आचार्य शुक्ल जैसे आलोचक साहित्य में परम्परा को महत्व देते हैं, वहीं प्रगतिशील लेखक आधुनिकता का पक्ष लेते हैं।

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त"

आधुनिक कवि नागार्जुन ने समानवाद के महत्त्व को वर्णित करते हुए गरीबी का वर्णन किया है। इसमें भी समाज के प्रति जिम्मेदारी है और हित की भावना भी, परन्तु यह परम्परा से नहीं जोड़ता। इसका यह तात्पर्य कतई नहीं है कि यह साहित्य के मापदंडों पर खरा नहीं उतरेगा।

इस सन्दर्भ में आधुनिकता तथा पारम्परिकता के बीच संघर्ष का हल जयशंकर प्रसाद ने इस प्रकार निकाला कि उन्होंने अतीत का वातावरण ग्रहण करते हुए आधुनिक समस्याओं को पाठकों के समक्ष

प्रस्तुत किया। जैसे- उनके 'स्कंदगुप्त' नाटक में उन्होंने यही प्रयोग किया है।

सार यह है कि साहित्य चाहे आधुनिक हो अथवा परंपराबद्ध: वह साहित्य के मापदंडो पर खरा उतरना चाहिए। साहित्य में, व्यक्ति में, समाज में, देशों में, आधुनिकता और पारम्परिकता का संघर्ष कोई नई बात नहीं है। नैतिक मूल्य, प्रतिमान, धारणाएं, सभी समय के साथ बदलती हैं। जैसे कि बुद्ध ने भी कहा है कि परिवर्तन के सिवाय कुछ भी स्थायी नहीं है। अतः संघर्ष स्वाभाविक है; साहित्य का अस्तित्व आवश्यक है।

"अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।"

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रतिभाग करते हुए

आधुनिकता की दौड़ में खोती मानवता

हरिकेश सिंह,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक समय था जब ज़िंदगी धीमी थी, लेकिन भीतर तक गूंजती थी। जब रिश्तों में गहराई थी, और शब्दों से ज़्यादा मौन की अपनी भाषा होती थी। तब घर सिर्फ ईंट और सीमेंट की इमारत नहीं होता था–वो एक एहसास था, जिसमें अपनापन सांस लेता था।

आज सब कुछ बदला-बदला सा है। रिश्तों की जगह अब औपचारिकता ने ले ली है। आत्मीयता अब सजावटी दीवार घड़ियों की तरह है–दिखती है, चलती नहीं।भरोसे अब अनमने से हैं–जैसे किसी बालकनी की डोर से टंगे, जो तेज़ हवा चलने पर गिर भी सकते हैं।

सदियों से संजोए गए हमारे रीति-रिवाज़ अब शहर की नालियों में बहते दिखते हैं। परंपराएं अब बोझ सी लगती हैं और संस्कार–जिन्हें कभी जीवन का मेरुदंड कहा जाता था–आज टीवी धारावाहिकों की कृत्रिम पटकथाओं में गुम हो गए हैं। समय अब किसी धारावाहिक के एपिसोड्स में बँट गया है, और वास्तविक संवादों की जगह अब स्क्रीन पर 'स्क्रिप्टेड इमोशन' ने ले ली है।

परिवार में साथ बैठकर हँसने-हँसाने का दौर टूट गया है। अब 'मिलकर जीना' नहीं, 'भीड़ में अकेले रहना' सीखना पड़ता है।
बचपन, जो कभी खुली हवा में दौड़ता था–आज स्कूल, कोचिंग और मोबाइल की स्क्रीन में कैद हो गया है। वो मासूम आवाज़ें अब सुनाई नहीं देतीं, जो गली के मोड़ों पर खेल-खिलखिलाहट के साथ गूंज़ा करती थीं।

पहले इतवार एक उत्सव की तरह आता था। देर सुबह की चाय, रिश्तेदारों की चहक, और मोहल्ले की गलियों में बच्चों की

चीख पुकार–ये सब मिलकर जीवन को पूर्ण बनाते थे।अब इतवार भी वर्क-फ्रॉम-होम की व्यस्तता में गुम हो गया है।

कभी जो स्त्री की गरिमा उसका आचरण और आत्मबल था, वह अब महज सोशल मीडिया ट्रेंड्स और वायरल रील्स में सिमटता जा रहा है।

ऑनलाइन प्रसिद्धि की इस अंधी दौड़ में नैतिकता, मर्यादा और आत्मसम्मान जैसे शब्द बेमानी हो गए हैं।

हर कोई दिखना चाहता है, चाहे उसके पीछे कुछ भी न हो। अब रिश्ते स्टेटस अपडेट बन चुके हैं और भावनाएं इमोजी में बदल गई हैं। जिस 'दुनिया' को हमने डिजिटल क्रांति कहा था, उसने हमें जोड़ने की बजाय भीतर ही भीतर तोड़ दिया है।

सब कुछ उपलब्ध है–सूचना, सुविधा, संवाद–लेकिन जो नहीं है, वो है "संबंधों में जीवन"।

अब इंसान ज़िंदा है, लेकिन भीतर से खाली हो गया है। एक अस्थिरता है जो हर साँस के साथ चलती है।

हर दूसरा व्यक्ति तनाव का मरीज है, और जो हँस रहा है, वो अक्सर सबसे ज़्यादा टूटा होता है।

तो क्या यही आधुनिकता है? क्या सच में तरक्की का मतलब ये है कि रिश्तों की आत्मा खो जाए और सिर्फ लहज़ा बचा रहे?

क्या आधुनिकता का अर्थ यह है कि भावनाएं एल्गोरिद्म से संचालित हों, और संवेदनाएं सोशल मीडिया के रिएक्शन तक सिमट जाएं? क्या यही प्रगति है कि लोग चलते-फिरते दिल के दौरे से मर जाएं और किसी को फर्क न पड़े?

अगर ये सब आधुनिकता है, तो शायद हमें फिर से ये सोचना होगा कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। शायद अब वक़्त आ गया है–थोड़ा रुकने का, सोचने का, और लौटने का।

हमें उस भारत की ओर फिर से देखना होगा, जहाँ रिश्ते समय से नहीं, आत्मीयता से चलते थे। जहाँ माफ़ करना कमजोरी नहीं, परंपरा थी। जहाँ इंसान शरीर से नहीं, अपने चरित्र से पहचाना जाता था। एक ऐसा समाज, जहाँ मृत्यु केवल शारीरिक अस्तित्व का अंत थी–क्योंकि अच्छे लोग अपने व्यवहार और मूल्य से लोगों के मन में सदैव जीवित रहते थे। तब व्यक्ति महज एक शरीर नहीं था, उसमें एक व्यक्तित्व होता था जो लोगों के जीवन में गहराई से जुड़ता था, जिसे चाहकर भी भुलाया नहीं जा सकता था।

आज हमारे पास सुविधाएं हैं, लेकिन संतोष नहीं है। हमारे चारों ओर भीड़ है, लेकिन संबंधों में अपनापन नहीं बचा। हमने बहुत कुछ पा लिया है, लेकिन शायद वह सब कुछ खो दिया है जो हमें इंसान बनाता था। आधुनिकता अगर केवल गति का नाम है, और उसमें संवेदना, संवाद और आत्मीयता की जगह नहीं है–तो यह विकास नहीं, एक दिशा हीन दौड़ है। और इस दौड़ में सबसे बड़ी हानि यही है कि अब इंसान, इंसान नहीं रहा–वो एक उपभोक्ता बन गया है, एक उपाधि, एक प्रोफ़ाइल।

हमें फिर से वही जीवन चाहिए, जिसमें मनुष्यता कोई विचारधारा नहीं, बल्कि जीवन की सहज शैली हो। एक ऐसा जीवन जिसमें तकनीक भी हो, तरक्की भी हो, लेकिन इंसानियत सबसे ऊपर हो।

अति सर्वत्र वर्जयेत	-	excess of everything is bad
चित भी मेरी पट भी मेरी	-	heads I win, tails you lose
जमीन-आसमान एक करना	-	to leave no stone unturned

राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी,1950 से संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजातः

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- **संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।**

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियमः

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी में दिया जानाः हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोगः अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि की भाषाः कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)- सेवा संबंधी आदेश या सूचनाः यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्तिः

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी ।

2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणताः यदि किसी कर्मचारी ने

1 मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

2 स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

3 यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञानः

यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

3. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत टिप्पण,प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदिः

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्वः

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-

   i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

   ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

राजभाषा संबंधी भारतीय संविधान के अनुच्छेदों का संक्षिप्त परिचयः

अनुच्छेद 343- संघ की भाषा

अनुच्छेद 344- राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

अनुच्छेद 345- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347- किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियम, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

अनुच्छेद 350- व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 351- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

अनुच्छेद 120- संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 210- विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा

उचोई जनजाति

उचोई एक जनजाति है, जो अनादि काल से त्रिपुरा में निवास करती है। वे बर्मा की अराकान पहाड़ियों से त्रिपुरा में आकर बसे हैं। उचोई लोगों की भाषा और संस्कृति अन्य कोक-बोरोक भाषी जनजातियों जैसे रियांग, त्रिपुरी, जमातिया आदि से मिलती-जुलती है। उचोई लोग चान घास और बाँस से बने टोंग (गैरेंग) घरों में भी रहते हैं। परंपरागत रूप से उचोई लोग झूम किसान थे और आज भी ऊँची पहाड़ियों और

ढलानों पर झूम खेती करते हैं। इन लोगों में विवाह 16-20 वर्ष की आयु में होते थे। विवाह से पहले वर का ससुर के घर में रहना अनिवार्य था और उचित वधू मूल्य देना पड़ता था। लेकिन आजकल यह प्रथा प्रचलन में नहीं है। उचोई लोग हिंदू धर्म का पूरी तरह से पालन करते हैं। उनके प्रमुख देवता राधाक, गरिया, केर, गंगा पूजा, नक्सू मोटाई आदि हैं। इनमें से कुछ परिवार ईसाई धर्म अपना चुके हैं।

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर देवी शक्ति के 51 शक्तिपीठों में से एक है। इस मंदिर को त्रिपुरेश्वरी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर भारत के पूर्वोत्तर प्रदेश त्रिपुरा के उदयपुर शहर से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। त्रिपुरा सुंदरी मंदिर में माता सती के दाहिने पैर की उंगलियाँ गिरी थीं। मान्यता है कि इस स्थान पर माता सती के दाहिने पैर की उंगुलियों के निशान आज भी विद्यमान हैं। इस मंदिर का निर्माण महाराजा धन्य माणिक्य के शासनकाल में 1501 ईस्वी के दौरान करवाया गया था। मान्यता है कि माँ का स्वरूप दिन में तीन बार बदलता है, प्रातःकाल में कुमारिका (बाल रूप), मध्याह्न में यौवना (युवती रूप) और सायंकाल में प्रौढ़ा (परिपक्व रूप)। यही कारण है कि इन्हें "त्रिपुरा सुंदरी" कहा जाता है। माँ त्रिपुरा सुंदरी 18 भुजाओं वाली हैं, जिनमें दुर्गा के नौ रूप अंकित हैं। माँ सिंह, मयूर और कमल पर विराजमान हैं। त्रिपुरा सुंदरी दस महाविद्याओं में तीसरी महाविद्या तांत्रिक साधना की प्रमुख देवी मानी जाती हैं। त्रिपुरा सुंदरी का अर्थ है "तीन लोकों की सुंदरी।"